* श्रीहरिः *

एक लोटा पानी

(जीवनको ऊँचा उठानेवाली चौबीस रोचक कहानियाँ)

लेखक

श्रीपारसनाथ सरस्वती

श्रीहरिः

विषय-सूची

विषय पृष्ठ-संख्या

श्रीहरिः

एक लोटा पानी

चैतका महीना था। ग्वालियर राज्यका मशहूर डाकू परसराम अपने अरबी घोड़ेपर चढ़ा हुआ, जिला दमोहके देहातमें होकर कहीं जा रहा था। लकालक दोपहरी थी। प्यासके कारण परसरामका गला सूख रहा था। कोई तालाब, नदी या गाँव दिखायी न देता था। चलते-चलते एक चबूतरा मिला जिसपर एक शिवलिंग रक्खा था। छोटे और कच्चे चबूतरेपर बरसातके पानीने छोटे-छोटे गड्ढे कर दिये थे। इसलिये महादेवजीकी मूर्ति कुछ तिरछी-सी हो रही थी। यह देख परसराम उतरा और घोड़ेको एक पेड़से बाँधकर अपनी तलवारसे महादेवजीकी पिण्डीको ठीक बिठलाने लगा।

परसराम बोला—'महादेव गुरुजी हैं। परशुरामके गुरु थे—इसलिये मेरे भी गुरु हैं। वे भी ब्राह्मण थे—मैं भी ब्राह्मण हूँ उन्होंने अमीरोंका नाश किया था और गरीबोंका पालन किया थ वही मैं भी कर रहा हूँ। मूर्ख लोग मुझे डाकू कहते हैं। धनवान् जबरन धन लेकर दीनोंका पालन करना क्या डाकूपन है? है त बना रहे। ग्वालियर राज्यने मेरे लिये पाँच हजारका इनामी वारं जारी किया है और भारत-सरकारने पचीस हजारका। मेरी गिरफ्तारीं लिये तीस हजारका इनाम छप चुका है। वे लोग अमीरोंके पाल और गरीबोंके घालक हैं। इसीलिये मुझे डाकू कहते हैं। डाकू हैं या मैं? इसका निर्णय कौन करेगा? खैर—कोई परवा नहीं जबतक शंकर गुरुका पंजा मेरी पीठपर है, तबतक कोई परसरामकं गिरफ्तार नहीं कर सकता। लेकिन क्या मैं आज प्यासके मारे इस जंगलमें मर जाऊँगा? मेरे पंद्रह साथी,—जो सब पढ़े-लिखे औ बहादुर हैं—अपने-अपने अरबी घोड़ोंपर चढ़े मुझे खोज रहे होंगे। जब वे मुझे इस जंगलमें मरा हुआ पायेंगे, तब वे नेताहीन होकर बड़े दुखी होंगे। बाबा! गुरुदेव! क्या एक लोटा पानीके बिना आप आज मेरी जान ले लेंगे?'

तबतक एक बुढ़िया वहाँ आयी। उसके एक हाथमें एक लोटा जल था और लोटेके ऊपर एक कटोरी थी कि जिसमें मिठाई रक्खी थी।

परसराम—बूढ़ी माई! तुम कहाँ रहती हो?

बुढ़िया—थोड़ी दूरपर सेवपुर गांव है। बागोंमें बसा है इसलिये दिखायी नहीं देता। वहीं मेरा घर है। जातिकी अहीर हूँ—बेटा!

परसराम—यहाँ क्यों आयी हो ?

चबूतरेपर पानी और मिठाई रखकर बुढ़िया बैठ गयी और रोने लगी। परसरामने जब बहुत समझाया तब वह कहने लगी—"बेटा, मौतके दिन पूरे करती हूँ। घरमें एक लड़का था और बहू थी। मेरा बेटा बिहारी तुम्हारी ही उमरका था। उसीने यह चबूतरा बनाया था और कहींसे लाकर उसीने महादेव यहाँ रक्खे थे। रोजाना पूजा करता था। पारसाल इस गाँवमें कलमुही ताऊन (प्लेग) आयी। बेटा और बहू दोनों एक दस सालकी कन्या छोड़कर उड़ गये। रोनेके लिये मैं रह गयी। जबसे बेटा मरा तबसे मैं रोज एक लोटा पानी चढ़ा जाती हूँ और रो जाती हूँ। इस साल बैशाखमें नातिन चम्पाका विवाह है। घरमें कुछ नहीं है। न जाने—कैसे महादेव बाबा चम्पाका विवाह करेंगे।"

परसराम—महादेव बाबा चम्पाका विवाह खूब करेंगे। तुम यह पानी मुझे पिला दो—बड़ी प्यास लगी है।

बुढ़िया—पी लो बेटा, पी लो। मिठाई भी खा लो। यह पानी जो तुम पी लोगे तो मैं समझूँगी कि महादेवजीपर चढ़ गया। आत्मा सो परमात्मा। मैं फिर चढ़ा जाऊँगी। पी लो बेटा, पी लो—पहले यह मिठाई खा लो।

इतना कहकर बुढ़ियाने पानीका लोटा और मिठाईकी कटोरी परसरामके सामने रख दिये। मिठाई खाकर और शीतल स्वच्छ जल पीकर परसराम बोले—'चम्पाका विवाह कब होगा माई ?'

बुढ़िया—वैशाख उँजेरे पाखकी पञ्चमीको टीका है। केसरीपुर बारात आयेगी।

परसराम—विवाहके लिये तुम कुछ चिन्ता मत करना। तुम्हा चम्पाका विवाह महादेव ही करेंगे।

बुढ़िया—तुम कौन हो बेटा? तुम्हारी हजारी उमर हो गाँवतक चलो तो तुमको कुछ खिलाऊँ। भूखे माळूम होते हो

परसराम—भूखा तो हूँ, पर गाँव मैं नहीं जा सकता। मेर नाम परसराम है और लोग मुझे डाकू कहते हैं। आगरेके कप्तान यंग साहब, जिन्होंने सुल्ताना डाकूको गिरफ्तार किया था, तीस सिपाहियोंके साथ मेरे पीछे लगे हुए हैं। मेरे साथी छूट गये हैं। इसलिये मैं गाँवमें नहीं जा सकता। जिस दिन चम्पाका विवाह होगा, उस दिन तुम्हारे गाँवमें पाँच मिनटके लिये आऊँगा।

बुढ़िया—तुम डाकू तो माळूम नहीं पड़ते—देवता माळूम पड़ते हो।

घोड़ेपर सवार होकर परसरामने कहा—'अब ऐसा ही उल्टा जमाना आया है—माई! उदार और बहादुरको डाकू कहा जाता है और महलोंमें बैठकर दिनदहाड़े गरीबोंको लूटनेवालोंको रईस कहा जाता है। धर्मात्मा भीख माँगते हैं, पापी लोग हुकूमत करते हैं। पतिव्रताएँ उघारी फिरती हैं, छिनालोंके पास रेशमी साड़ियाँ हैं। कलियुग है न! मैं जाता हूँ। मेरा नाम याद रखना। पञ्चमीको आऊँगा।'

परसराम चले गये। बुढ़ियाने भी घरकी राह ली। महादेवजीपर

जल चढ़ाकर उसने चम्पासे परसुरामके मिलनेकी सारी कहानी बय
कर दी, गाँवका मुखिया भी वहीं खड़ा था। उसने भी सारा ह
सुना। मुखियाने सोचा मेरा भाग जग गया, इनामका बड़ा हिर
मैं पाऊँगा। थानेमें जाकर रिपोर्ट लिखायी कि—'वैशाख शुक्लपक्ष
पञ्चमीके दिन परसराम सेखूपुरमें चम्पाके विवाहमें शामिल हं
आयेगा। पुलिसके द्वारा यह समाचार यंग साहबको मालूम व
देना चाहिये। अगर उस रोज डाकू परसराम गिरफ्तार न हुआ
फिर कभी न हो सकेगा।'

(२)

चौथके दिन, बिहारी अहीरके दरवाजेपर पाँच गाड़ियाँ आ
खड़ी हुईं। एकमें आटा भरा था। एकमें घी, शक्कर और तरकारि
भरी थीं। एक गाड़ीमें कपड़े-ही-कपड़े थे, तरह-तरहके नये थानें
वह गाड़ी भरी थी। चौथी गाड़ीमें नये-नये वर्तन भरे थे अं
पाँचवीं गाड़ी तरह-तरहकी पक्की मिठाइयोंसे भरी थी। गाड़ीवानें
सब सामान बिहारी अहीरके घरमें भर दिया। लोगोंने जब य
पूछा कि 'यह सामान किसने भेजा ?' तब गाड़ीवानोंने कहा।
'हमलोग भेजनेवालेका नाम-धाम कुछ नहीं जानते। हमलोग दमोह
रहनेवाले हैं। कियायेपर गाड़ी चलाया करते हैं। हमलोगोंको किरा
अदा कर दिया गया। हमलोगोंको केवल यही हुक्म है कि यह साम
सेखूपुरके बिहारी अहीरके घरमें जबरन् भर आवें। बस, अं
ज्यादा तीन-पाँच हमलोग कुछ नहीं जानते।' इस विचित्र घटना
गाँवभर आश्चर्य कर रहा था। केवल मुखियाको और बुढ़िया

मालूम था कि यह सब काम परसरामका है। मुखियाने थानेमें इस घटनाकी रिपोर्ट लिखायी और यह भी लिखाया कि—'कल पञ्चमीके दिन सुबहको जब चम्पाके फेरे पड़ेंगे, उस समय कन्यादान देने खुद परसरामके आनेकी उम्मीद है; क्योंकि वह अभीतक खुद नहीं आया है। पाँच मिनटके लिये गाँवमें आनेका उसने वचन दिया है। चाहे धरती इधरकी उधर हो जाय, पर परसरामका वचन खाली नहीं जा सकता।' चौथकी रातमें ही मिस्टर यंग साहब अपने तीस मरकट सिपाहियोंके साथ सेखूपुरमें आ धमके। उन सबोंने घोड़ोंके सौदागरोंका भेष बनाया था। मुखियाके दरवाजेपर वे लोग ठहर गये। गाँववालोंने जाना कि घोड़ेके सौदागर लोग किसी मेलेको जा रहे हैं। मुखिया और चौकीदारके सिवा असली भेदको कोई नहीं जानता था।

(३)

पञ्चमीका सबेरा हुआ। परसरामने ज्यों ही घोड़ेपर चढ़ना चाहा, त्यों ही छींक हुई। एक साथीका नाम था रहीम। बी० ए० पास था। पेशावरका रहनेवाला था। घोड़ेकी सवारीमें और निशाना लगानेमें एक ही था। रहीमने परसरामको रोकते हुए कहा—'कहाँ जा रहे हैं आप?'

परसराम—सेखूपुर चम्पाका कन्यादान देने। तुमको तो सब हाल मालूम करा दिया था। रोको मत। रुक नहीं सकता।

रहीम—छींक हुई है!

परसराम—मुसलमान होकर भी छींकको मानते हो ?

रहीम—बात यह है कि यंग साहब अपने तीस सिपाहियोंके साथ इधर ही गये हैं। उन लोगोंने सौदागरोंका स्वाँग बनाया है। मगर मेरी नजरको धोखा नहीं दे सकते।

परसराम—घूमने दो। क्या करेगा—यंग साहब ?

रहीम—मालूम होता है कि मूर्ख बुढ़ियाने आपके मिलनेका हाल अपने गाँवमें बयान कर दिया है। पुलिसको आपके जानेका हाल मालूम हो गया है। तभी यंग साहबने मौका देखकर चढ़ाई की है।

परसराम—सम्भव है, तुम्हारा अनुमान सही हो। लेकिन इसी डरसे मैं अपने वचनको तोड़ नहीं सकता। एक लोटा पानीसे उऋण होना है।

रहीम—अच्छा, तो मैं भी साथ चलता हूँ। जो वक्तपर साथ दे वही साथी है।

परसराम—तुम्हारी क्या जरूरत है ? तुम यहीं रहो।

रहीम—मैं आपको अकेला नहीं जाने दूँगा। नमकहरामी नहीं करूँगा। आपकी जान जायगी तो पहले मेरी जान जायगी।

दोनों सवार सेखूपुरकी ओर चल दिये। वे उस समय बिहारीके दरवाजेपर पहुँचे जब चम्पाके फेरे पड़ गये थे और कन्यादानका समय आ गया था।

अपने घोड़ेकी बागडोर रहीमको पकड़ाकर परसराम उ

पड़े और घरमें घुस गये। पाँच मुहरोंसे परसरामने चम्पाका कन्यादा सबसे पहले दिया और वे बाहर जाने लगे। गाँववालोंने जान लि कि इस व्यक्तिने ही पाँच गाड़ियाँ सामान भेजा था। श्रद्धाके मा उन लोगोंने परसरामको घेर लिया। मारे खुशीके बुढ़ियाकी बोल बंद थी। एक आदमी बोला—'वाह मालिक! बिना जलपा किये कहाँ जाते हो!' दूसरा आदमी लोटा लिये चरण धोनेक उपाय करने लगा। तीसरा आदमी परसरामको बैठनेके लिये अपना साफा धरतीपर बिछाने लगा। चौथा आदमी दौड़ा तो एक दोनेमें मिठाइयाँ भर लाया। परसरामने कहा—'कैसे पागल हो तुम लोग! जिस कन्याका कन्यादान दिया उसीका भोजन कैसे करूँगा?' इतना कहकर वे घरसे बाहर आ गये। घोड़ेपर चढ़ते-चढ़ते परसरामने देखा कि यंग साहबने सदल-बल उनको घेर लिया है। परसरामने उनको ललकारकर कहा—'गाँवके बाहर आकर मरदूमी दिखलाओ।' इसके बाद रहीमके साथ परसरामने घोड़ोंके एड लगायी और गाँवके बाहर हो गये। साहबने पीछा किया। सब लोग घोड़ोंपर सवार थे। तड़ातड़ गोलियाँ छूटने लगीं। वे दोनों भी फायर करते जाते थे। परसराम और रहीमके अचूक निशानोंने पाँच सिपाही मार डाले।

(४)

परसरामको भागनेका अवसर देनेके लिये रहीमने अपना घोड़ा पीछे लौटाया और वह सिपाहियोंके साथ जूझने लगा। सब लोगोंने उसे घेर लिया। दनादन गोलियाँ छूटने लगीं। तीन सिपाही

रहीमने मौतके घाट उतार दिये। शरीरमें चार गोलियाँ घुस चुकी थीं। एक गोली घोड़ेको लगी। घोड़ा और सवार दोनों मरकर गिर पड़े। तबतक परसरास एक कोस आगे निकल गये थे। साहबने रहीमको वहीं छोड़ा और परसरामका पीछा किया। तीन कोसके बाद परसराम दिखायी पड़े। साहबकी गोलीसे परसरामका घोड़ा घायल होकर गिर पड़ा। परसराम पैदल चलने लगे। आगे था—एक नाला ५-६ गज चौड़ा था और तीस हाथ गहरा था। बरसाती पानी उस नालेको खंदकका रूप दे दिया था। परसरामने कूदकर उ पार करना चाहा; परंतु पैर फिसल गया। वे खंदकमें गि पड़े। किनारे यंग साहब आ खड़े हुए। नीचे अँधेरा था—सा साफ दिखायी न पड़ता था।

ज्यों ही साहबने नीचे झाँका त्यों ही परसरामने गोली छोड़ दी विक्टोरियाके इकबालसे साहब तो बच गये मगर उनका टोप उ गया। सिपाहियोंने गोली छोड़ी। परसराम एक किनारे छिप गये फायर खाली गया। साहबने कहा—'तीस हाथ नीचे गहरे ग गिरा और तो भी निशाना मार रहा है—शाबास बहादुर, शाबास तबतक परसरामने आवाजके निशानेपर एक गोली छोड़ दी। साह पास एक सिपाही खड़ा था। उसकी खोपड़ी उड़ गयी।

साहबने कहा—'हमारे नौ आदमी काम आ चुके हैं। डाकूका एक ही आदमी मरा।'

एक सिपाही था—राजपूत। उसने आगे बढ़कर कहा— गिराकर डाकूको दाव देना चाहिये।' आवाजका निशाना स

अपनी जानकी मिथ्या लालसा नहीं छोड़ सकता तो न सहं
परंतु एक मानव-बलि देना—राजा-प्रजाके हितके लिये जरूरी नज
आ रहा है। अगर कोई किसी बूढ़े, अंधे या पागलको इस पवि
कामके लिये राजी कर लेगा तो वह एक लाख रुपय
पुरस्कार पायेगा।

(२)

इस दूसरे विज्ञापनको भी एक साल हो गया। बहुतेरे बूढ़ोंसे
उनके घरवालोंने कहा कि आखिर दो-एक सालमें स्वयं मर ही
जाओगे, क्यों न घरवालोंको एक लाख दे मरो? परंतु अपने हाथ
अपनी मौत बुलानेपर कोई राजी न हुआ। एक रात राजाने फिर
वही सपना देखा और फिर वही हुक्म सुना। राजा बहुत
घबराने लगा।

राजाने निश्चय किया कि अब खुद उसे किसी आदमीकी खोज
करनी चाहिये। शिकार खेलनेके बहाने राजा दिन-दिनभर इधर-
उधर घूमने लगा। सातवें दिन एक जंगलमें एक आमके नीचे
राजाने भक्त दत्तात्रेयजीको चुपचाप बैठे देखा। राजाने सोचा,
जैसे भी हो—इसे ले चलना चाहिये। झूठ बोलूँगा, जालसाजी
करूँगा, लेकिन इस लड़केका बलिदान जरूर दूँगा। राजाके लिये
दफा ४२० है नहीं। मालूम होता है कि यह लड़का किसी बात-
पर माता-पितासे रूठकर यहाँ आ बैठा है। पचास रुपये मासिककी
नौकरीका लोभ ही इसे मेरे महलतक पहुँचानेका साहस रखता
है। सत्ययुगमें भी कलियुग रहता है, कलियुगमें भी सत्ययुग रहता

है। चारोंमें चारों हैं। भक्तके पास राजाने घोड़ा खड़ा कर दिया और उससे बातचीत शुरू की।

राजा—तुम कहाँ रहते हो?

भक्त—शिव ही सब है।

राजा—मैं पूछता हूँ कि तुम किस गाँवमें रहते हो?

भक्त—महावीर-सा वीर महावीर ही है।

राजा—तुम्हारा नाम क्या है?

भक्त—अन्तिम गुरु दो हैं—एक कच्चा बाबा—एक सच्चा बाबा।

राजा—मैं यह पूछता हूँ कि तुम्हारा नाम क्या है?

भक्त—जो सत्य होगा वही सुन्दर होगा और वही शिव होगा।

राजा सोचने लगा। मैं खेतकी कहता हूँ और यह खलिहान-की सुनता है। मैं पटने जाता हूँ तो यह आगरा जाता है। वजह क्या है? यह खूबसूरत लड़का, जो एक गरीब राजकुमारकी तरह बैठा है, अंटकी संट क्यों बहकता है? क्या सनकी है? पागल तो नहीं हो गया है? भयसे भेद खुलता है—

राजा—तुम चोरी करके भागे हो। मैं राजा हूँ। मैंने तुमको गिरफ्तार किया।

भक्त—नेमका राजा रामचन्द्र, प्रेमका राजा कृष्णचन्द्र।

राजा—मेरे पास तुम्हारा 'वारंट' है।

भक्त—शिव ही सब है—सब ही शिव है।

राजा—चुप रहो बदमाश।

भक्त---माया बन रही है परमात्मा और परमात्मा बन रहा जीवात्मा। हाय, अब कैसे 'कल्यान' होगा।

इतना कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसके नयन भिराम नयनोंसे मोती-मालाओंका निर्माण होने लगा। राजाने निश्च किया--- लड़का पागल है।

उतरकर राजाने उस लड़केको अपने पीछे घोड़ेपर बैठाकर अप महलकी राह ली।

(३)

राजधानीके बाहर, पूर्वमें काली माताके मन्दिरपर आ भारी भीड़ हो रही है। चार पण्डित प्रातःकालसे हवन कर र हैं। दोपहरीके एक बजे एक सुन्दर लड़केका बलिदान होगा। लड़के-लड़की नर-नारी सभी आ रहे हैं। पुलिस सबको गोल चक्करमें बिठा रही है। पुलिस कहती थी---'शोर मत करो, राजा साहब पधार रहे हैं।'

ठीक बारह बजे एक बंद पालकी आयी। हाथमें नंगी तलवार लिये राजा साहब उतरे, हाथ-पैर बँधा एक लड़का भी पालकीसे उतारा गया।

दोनों आकर हवनके पास---काली माताके सामने खड़े हो गये। लोगोंने उन दोनोंको देखा। मास्टर दत्तात्रेयको देख सब चकित और सम्मोहित हो गये। ब्रह्मा, विष्णु और शङ्कर---तीनोंके आशीर्वादसे भक्तजीका जन्म हुआ था। माताएँ कहने लगीं---अगर मेरा बच्चा होता तो राजाकी दाढ़ीमें दियासलाई लगा देती। हाय---

वारेकी माँ मर गयी। पिताओंने कहा—अगर मेरा पुत्र होता तो
हे मेरा तन-बदन तोले-तोले उड़ जाता, लेकिन जीते-जी इसपर
ाँच न आने देता। रमणियोंने कहा—कितना मनोरञ्जक पति होता।

जब पूर्णाहुतिकी घंटी बजी, तब एक बजा। राजाने तीखे
वरोंमें भक्तसे कहा—

राजा—कुछ खाओगे?

भक्त—अज्ञानको खाऊँगा।

राजा—कुछ पिओगे?

भक्त—द्वैतको पी लूँगा।

राजा—किसीको देखोगे?

भक्त—सबको देखूँगा।

राजा—किसीसे कुछ कहोगे?

भक्त—शिवसे कहूँगा कि तू ही सब है।

राजा—मैं कौन?

भक्त—सत्य शिवं सुन्दरम्।

राजा—तू कौन?

भक्त—सत्यं शिवं सुन्दरम्।

राजा—(तलवार दिखलाकर) यह क्या है?

भक्त—सत्यं शिवं सुन्दरम्।

राजा—(काली मूर्तिके प्रति इशारा कर) वह कौन?

भक्त—सत्यं शिवं सुन्दरम्।

राजा—तुम्हारा बलिदान दिया जायगा।

भक्त—सत्यं शिवं सुन्दरम् ।

राजा—(तलवार उठाकर) जय काली !

पब्लिकमें हाहाकार मच गया । कोई रोने लगा, कोई
लगा, कोई आँखें बंद करके बैठ गया, कोई चिल्लाने लगा
मूर्छित हो गया और कोई राजाको गालियाँ देने लगा ।

(४)

यह क्या ?

राजा और भक्तके बीच स्वयं काली माता प्रकट हो
मारे भयके राजाकी तलवार जमीनपर गिर पड़ी ।

देवी—क्यों मूर्ख ! यह क्या कर रहा था ?

राजा—माताजीका आज्ञा-पालन जैसे हो सका—यही
लड़का तीन सालकी तलाशके बाद मिल सका । क्षमा करो—मात

देवी—पागल लड़का ?

राजा—जी हाँ ।

देवी—कौन है पागल ?

राजा—यह लड़का ।

देवी—ये पागल हैं या तू पागल है ?

राजा—माताजी—

देवी—परमात्मारूपी बादशाहके ये एक शाहजादे
इनके बचानेके लिये मुझे बड़ी दूरसे आना पड़ा । अरे मू
प्रथम यह बता कि मैंने तुझसे अहंकारका बलिदान चाहा था
किसी मेरे बच्चेको अकारण मार डालनेको कहा था ?

राजा—समझा नहीं माताजी !

देवी—और मारनेके लिये मिला वह कि जिसे स्वयं मौत नहीं [सकती ?

राजा—समझा नहीं माताजी !

देवी—जो 'सब' को 'शिव' देखता है—किसकी मजाल जो सपर हाथ उठा सके।

राजा—समझा नहीं माताजी !

देवी—यदि मैं न आती और तू तलवार चला देता तो यह लवार तेरा ही मस्तक काट डालती।

राजा—समझा नहीं माताजी !

देवी—राजा ! तू नहीं पहचानता कि यही महात्मा दत्तात्रेय हैं जिनको भगवान् और जगद्गुरु-जैसे दो पद प्राप्त हैं।

राजा—समझा नहीं माताजी !

देवी—इनके चरण-कमलपर अपना सिर रख दो। आजसे इनको अपना गुरु मानना और इनके उपदेशसे जीवनका संचालन करना।

राजा—(भक्तके चरण पकड़) क्षमा करो हे क्षमानिधान !

देवी अन्तर्धान हो गयीं। अमीरको उठाकर फकीरने छातीसे लगा लिया। पहले तो प्रजा दुःखके आँसू बहा रही थी, अब वह सुखके आँसू बहाने लगी।

लेकिन हमारी बदनामी एक अमर कहानी बन जायगी। राम रा
ऐसी बात सोचना भी पाप है। न मालूम श्यामसिंह क्या बरत
उनके साथ करे ? मार ही डाले तो ?

मंगली—कल मरता हो तो आज मर जाय। मेरे लिये उ
क्या किया ? श्यामसिंह उसे पातालसे खोज निकालेगा। तुम्हारे छ
देनेसे वह बच नहीं जायगा। मुझीको मिल जाता——फूटी तकद
वाला ! मार देता एक लाखका मैदान ! टूट जाती गलेकी फाँसी

जंगली—नहीं-नहीं ! राम राम ! शिव शिव ! भगवान् उन
रक्षा करें। वे फिर हमारे राजा होंगे।

(३)

यह बातचीत सुनकर राजा रामसिंह गुफासे बाहर निकलव
उस पेड़के पास चले आये। उनको देखकर दोनों भाई अचकचा गये

राजा——मुझे ले चलो।

जंगली—नहीं महाराज ! ये लड़का पागल है। इसकी बातोंप
कान मत दीजिये।

राजा—अगर मेरी जानके द्वारा किसीकी भलाई हो जाय त
क्या हर्ज है ? पर उपकार सरिस नहिं धर्मा ! मुझे ले चलो।

मंगली गुमसुम खड़ा राजाको देखने लगा।

जंगली—हम अपनी जान देकर आपकी जान बचायेंगे—
महाराज !

राजा—अच्छा तो मैं खुद ही राजा श्यामसिंहके पास जाता हूँ
कह दूँगा कि इस लकड़हारेने मुझे गुफामें छिपा दिया था।

जंगली हँसा। बोला—यह काम भी आप न कर सकेंगे—जा साहब ! जो दूसरेकी भलाई किया करता है, उससे दूसरेकी ,राई हो ही नहीं सकती।

बातचीत सुनकर चार राहगीर वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने ,ाजाको पहचान लिया और पकड़ लिया। जंगली भी रोता हुआ ीछे-पीछे चला। लकड़ी लेकर मंगली घर चला गया। मंगलीने मनमें कहा—'धत् तेरी तकदीरकी। जालमें आकर चिड़िया उड़ गयी।'

(४)

श्यामसिंह—शाबास ! तुमलोग पकड़ लाये? किसने पकड़ा?

एक बोला—मैंने !

दूसरा बोला—मैंने !

तीसरा बोला—मैंने !

चौथा बोला—मैंने !

श्यामसिंह—सच कहो किसने पकड़ा?

चारों—सच कहते हैं—हमने !

रामसिंह—आप बिल्कुल सच बात जानना चाहते हैं?

श्यामसिंह—जी हाँ !

रामसिंह—मुझे इन चारोंमेंसे किसीने नहीं पकड़ा।

श्यामसिंह—फिर किसने पकड़ा?

रामसिंह—वह जो कोनेमें कुल्हाड़ी लिये लकड़हारा खड़ा है उसने पकड़ा है। उसे इनामका एक लाख दीजिये।

श्यामसिंहने इशारेसे जंगलीको अपने पास बुलाया।

श्यामसिंह—सच कहो। मामला क्या है?

जंगलीने आरम्भसे अन्ततक सारा किस्सा सच्चा बयान क दिया।

श्यामसिंहने कहा—इन चारोंपर सौ-सौ जूते फटकार क दरबारसे बाहर निकाल दिया जाय।

सिपाही लोग झपटे। चारोंको मार-पीट बाहर कर दिया। एव लाख रुपये देकर जंगलीको भी विदा कर दिया गया।

(५)

श्यामसिंहने गद्दीपरसे कूदकर रामसिंहको छातीसे लगा लिया। फिर बोले—'जैसा सुना था—वैसे ही आप निकले। परोपकारके लिये अपनी जान भी खतरेमें डाल दी! मैं सात जनम भी आपकी चरणरजकी समानता नहीं कर सकता। अपना राज्य लीजिये, अपना महल लीजिये और खजाना सँभालिये। मैंने आपकी परीक्षा कर ली। आप नामवरीके योग्य हैं।'

तीन दिन मिहमानी खाकर राजा श्यामसिंह अपनी सेना लेकर अपने देशको चला गया।

गद्दीपर बैठकर राजा रामसिंहने दरबारमें कहा—

'अपने शत्रुको मत मारो। उसमें भी जीवात्मा है; किसी उपायसे शत्रुताको मार डालो। बस—शत्रुको मानो जीत लिया।'

मूर्तिमान् परोपकार

वह आपादमस्तक गंदा आदमी था। मैली धोती और
हुआ कुर्ता उसका परिधान था। सिरपर कपड़ेकी एक पुरानी
टोपी लगाता था, जिसमें एक सूराख भी था। उसकी कमर का
बन गयी थी। बाल चाँदी और मुँह वेदान्ती। चेहरेपर झुर्रियाँ थं
दो भूरी आँखें गहरे गड्ढोंमेंसे झाँकती थीं। उसके शरीरकी हि
और नसें उभरी हुई थीं। कहीं-कहीं मांस सिकुड़कर लटक गया थ

स्कूलके सामनेवाली झोंपड़ीमें उसने एक छोटी-सी दूकान
रक्खी थी, जहाँसे बच्चोंको स्याही, कलम, पेंसिल, कापी अ
छोटी-छोटी चीजें प्राप्त हो जाया करती थीं। उसी दूकानसे उस
जीवन-निर्वाह होता था। सुना जाता था कि उसके पास कु
खेती भी थी और वह एक गाँवमें रहता था। उससे लड़कोंने खे
छीन ली थी और उसे घरसे निकाल दिया था। उसने भी कभी अ
दिन देखे थे। अब तो वह किसी प्रकार जीवनके दिन पूरे कर रहा थ

सभ्यताके नाते मैं उस गंदे और गरीब आदमीको 'बाबाज
कहा करता था। वास्तवमें मुझे उसकी सूरतसे, चाल-ढालसे अ
उसकी बोल-चालसे अत्यन्त घृणा थी। हाथमें एक चिलम लिये
जिसमें एक छोटा-सा चीमटा बँधा रहता था, जब शामको व
धीरे-धीरे चलता हुआ मेरे पास स्कूलमें आता था, तब मैं अप
मनमें उसे कई दर्जन गालियाँ दिया करता था।

कई बार मैं ऐसी हरकतें करता, जिससे वह स्कूलके चबूतरेप बैठकर चिलम पीना और खाँसना छोड़ दे। मैं नहीं चाहता थ कि वह मेरे पास आया करे। जब वह आकर बैठता, तब मैं उठक अलहदा टहलने लगता था। जब वह मुझसे बातें करने लगता तब मैं कोई किताब पढ़ने लगता। मगर मेरी इस बेजारीका को असर उसपर नहीं पड़ता था। जहाँ शाम हुई और वह चिलम लेकर आ बैठा। कभी-कभी कहता—

'मास्टर साहबने रोटी तो बना ली होगी ?'

'हाँ—बना ली।'

'सब्जी क्या बनायी थी ?'

'आलू बनाये थे।'

'थोड़ी सब्जी बची भी होगी ?'

इस प्रकार वह रोजाना मुझसे कुछ सब्जी या दाल ले लिया करता था, फिर एक काले रूमालमें बँधे दो बाजरेके टिक्कर निकालता और बैठकर खाने लगता। यह देखकर मेरा जी जल उठता। गंदे कपड़े, गंदी रोटियाँ और खानेका गंदा तरीका। वह यह तो जानता ही न था कि सफाई क्या वस्तु होती है। उस बूढ़ेने मेरा जीवन दूभर कर डाला था। जितना खून रोजाना बनता था, उससे दूना जल जाता था। उसे स्कूलमें आनेसे कैसे रोकूँ, यही चिन्ता मुझे दिन-रात सताती रहती थी। अन्तमें एक दिन मैंने एक तरकीब निकाली। शामको जब वह स्कूलके चबूतरेपर आकर बैठा, तब मैं गरजकर बोला—

'बाबाजी ! कल शामको जब तुम आये थे, तब मेजपर दस रुपयेका एक नोट रक्खा था ।'

'ना महाराज ! मुझे तो पता नहीं ।' हाथ जोड़कर रुलारे स्वरमें उसने उत्तर दिया ।

'इस हाथ जोड़कर गिड़गिड़ानेसे, तुम यह साबित नहीं कर सकते कि तुमने नोट नहीं उठाया । मैं तुम-सरीखे नीच लोगोंको खूब पहचानता हूँ ।'

'पहचानते होंगे—महाराज ! भगवान् जाने जो मैंने वह नोट देखा भी हो ।'

'बगला भगतोंवाली बातें छोड़ो । अगर तुम बुरे न होते तो तुम्हारे लड़के तुमको घरसे क्यों निकालते ? कमीना कहाँका—भाग जा यहाँसे—खबरदार जो फिर कभी इधरका रुख किया ।'

वह मेरी तरफ देखता हुआ, चिलम उठाकर चल दिया । मैंने उसका चेहरा देखा । वहाँपर दिल हिला देनेवाला एक दुखी दिखलायी पड़ा । उसका दिल टूट गया था । उसकी आँखें कह रही थीं—'मैं गरीब हूँ—असहाय हूँ—निर्बल हूँ—परंतु इतना नीच नहीं हूँ कि किसीकी चोरी करूँ ।'

× × ×

उस दिनसे उसका आना-जाना बंद हो गया । बोलचालका तो प्रश्न ही नहीं उठता । इस तरहसे मेरे दिन आरामसे कटने लगे । दिल-दिमागकी बेचैनी खतम हो गयी । मैं प्रसन्न रहने लगा ।

कुछ दिनों बाद वर्षाऋतु शुरू हो गयी । प्रायः प्रतिदिन रातको वर्षा होने लगी । खैर, कोई बात नहीं । वर्षाऋतुमें वर्षा तो

होगी ही; परंतु एक रातको तो वर्षाने सीमा तोड़ दी। संध्या-समयसे जो वर्षा शुरू हुई तो थमनेका नाम ही न लिया। मैंने जल्दीसे भोजन बनाया और स्कूलके बरामदेमें चारपाईपर लेट गया। नींद नहीं आ रही थी। तीन घंटे बीत गये, परंतु वर्षा समाप्त न हुई। न मालूम क्यों आज पहली बार मुझे भय लगा। वर्षाके शोरके अतिरिक्त कोई आवाज नहीं आ रही थी। उस स्कूलसे गाँव आधा मील दूर था। न तो किसी आदमीकी आवाज सुनायी पड़ती थी और न कोई रोशनी ही दृष्टिगोचर हो रही थी। कुत्ते भी नहीं भौंक रहे थे। चारों तरफ घोर सन्नाटा छाया हुआ था। झींगुरोंकी झाँझ बज रही थी, मेढकोंका तबला बज रहा था और बरसात झमाझम नाच रही थी। केवल बाबाजीकी झोंपड़ी अवश्य सामने थी, परंतु शायद आज वह भी सबेरे सो गया था। खाँसनेकी भी आवाज नहीं आ रही थी।

मुझे जो भयका वातावरण घेरे हुए था, वह अकारण न था। थोड़ी देर बाद जब मैं लघुशंकाके लिये उठकर चारपाईसे नीचे उतरा तो मेरी चीख निकल गयी। मैं उछलकर चारपाईपर जा बैठा। मेरा हृदय जोर-जोरसे धक-धक करने लगा। चारपाईके नीचे एक साँप लेटा हुआ था। मैंने तकियेके नीचेसे दियासलाई निकाली। वह सरदी खा गयी थी। कई तीलियाँ रगड़ीं परंतु वह जली नहीं।

लाचारीसे मैंने जोरसे दूसरी चीख मारी। शायद बाबाजीने सुनी हो। परंतु वह बेचारा मेरी सहायताके लिये क्यों आने लगा?

मरता क्या न करता? मैंने भगवान्‌का नाम लिया। हिम्मत

बाँधकर, चारपाईके सिरहानेसे उतरकर कमरेमें गया। बक्समेंसे नयी दियासलाई निकाली और लालटेन जलायी। एक हाथमें लाठी और दूसरे हाथमें लालटेन लेकर बाहर निकला। परंतु साँप गायब था। मैं लालटेन फर्शपर रखकर चारपाईपर बैठ गया, परंतु भयके कारण हृदय काँप रहा था। उधर वर्षाने और भी जोर पकड़ रक्खा था। क्षण-क्षणमें बिजली चमक रही थी। बादल भी खूब गरज रहे थे। अन्तमें सोच-विचारकर शर्मको एक तरफ रखकर लालटेन उठायी और मैं लाठी लिये हुए बाबाजीकी झोंपड़ीके सामने जा खड़ा हुआ। मैंने धीरेसे पुकारा—'बाबाजी !'

परंतु—कोई उत्तर न मिला।

बाबाजी-बाबाजी, लगातार जोरसे मैंने दूसरी और तीसरी आवाज लगायी। शायद बाबाजी गहरी नींदमें सो रहे थे। फिर मुझे यह भी विचार आया कि कहीं किसी साँपने उसे काट न खाया हो—चटाईपर जमीनपर सोता था बेचारा, परंतु यह असम्भव था; क्योंकि वह एक माना हुआ सँपेरा था। तब मैंने जोरसे झोंपड़ीका दरवाजा खटखटाया। अंदरसे आवाज आयी—

'कौन है ?'

'मैं हूँ।'

'कौन ? मास्टरजी ?'

'हाँ।'

'क्या बात है ?' बाहर आकर वह बोला।

'मुझे वहाँ डर लगता है। तुम वहाँ चलो।'

'कहाँ चलूँ ?'

'स्कूलमें ।'

'क्यों ?'

'अभी-अभी एक भयानक साँप मेरी चारपाईके नीचे लेटा था

'ना, महाराज ! मैं स्कूलमें नहीं जाता । मैं तो चोर हूँ ।'

'बाबाजी ! वह बात और ही थी मुझे मुसीबतसे बचाओ ।'

'चले जाओ—यहाँसे !' उसने गरजकर कहा ।

मैं निराश होकर लौट चला । मुझे बाबाजीपर बड़ा क्रोध :
रहा था । सहसा वह बोला—'मास्टरजी ! जरा सुनो तो ।'

मैंने सोचा कि दयालु भगवान्‌ने उसके दिलमें दया भर दी
मैं लौटकर उसके पास जा खड़ा हुआ । वह बोला—

'कितना बड़ा साँप था ?'

'होगा कोई दो गज लम्बा !'

'हूँ'—कहकर उसने मुँह फेर लिया ।

'हूँ क्या बाबाजी ?' मैंने नम्रतासे पूछा ।

'कुछ नहीं । कोड़िया नाग होगा । उसका काटा पा
नहीं माँगता ।'

'तो फिर ?' मैंने गिड़गिड़ाकर कहा ।

'तो फिर मैं क्या करूँ ? तुम जाओ ।' उसकी जीभ लड़खड़
रही थी ।

मुझे बड़ी निराशा हुई । उसने वापस बुलाकर मेरा भय औ
भी बढ़ा दिया था । मैंने सोचा कि इस बूढ़ेका शरीर जितना गंद

है, उससे भी ज्यादा इसका मन गंदा है। मेरे जीमें आया कि इस स्वार्थी बूढ़ेकी गरदन मरोड़ दूँ।

मैं फिर मुड़ा। उसका चेहरा देखा तो उसके आँसू बह रहे थे। मैं पश्चात्तापकी आगमें जलने लगा। वह कठोरहृदय न था—भावुकहृदय था। मैंने पास जाकर कहा—'मुझे क्षमा करो—बाबाजी! मैंने चोरीकी बात झूठ कही थी।' मेरी आवाज आँसुओंमें डूब गयी।

'रोते हो मास्टरजी! भला इसमें तुम्हारा क्या अपराध? जब मेरे लड़कोंने ही मुझे घरसे निकाल दिया, तब दूसरोंकी क्या शिकायत? अपना-अपना भाग्य है—बाबू!' उसने चुपकेसे अपने आँसू पोंछ लिये।

'नहीं बाबाजी! मैं बड़ा पापी हूँ।' मेरी हिचकी बँध गयी।
'पागल हो गये हो—मास्टरजी!'

वह बातें करता हुआ मेरे साथ स्कूलमें आ गया। काफी देरतक बैठा-बैठा मुझे साँपोंके किस्से सुनाता रहा। अन्तमें वह बोला—
कितना ही जहरीला साँप हो मैं उसे हाथसे पकड़ सकता हूँ
'तो साँप काटेका मन्त्र भी है—आपके पास—बाबाजी?
'मन्त्र होता तो है—मास्टरजी! परंतु मुझे मालूम नहीं मैं तो मुँहसे चूसकर जहर बाहर निकाल देता हूँ।'
'मुँहसे? और जहर तुमपर असर नहीं करता?'
बाबाजीने हँसकर उत्तर दिया—'असर अवश्य करता है-बाबू! परंतु उसके लिये मेरे पास एक दवा है। झोंपड़ीमें काली-सी बोतल रक्खी है। उसमें एक बूटीका अर्क भरा है। ज

चूसकर उसे थूक देता हूँ और उस अर्कसे तुरंत दो कुल्ले डालता हूँ, फिर कोई असर नहीं होता। जब मैं किसीका खींचने जाता हूँ, तब वह काली बोतल साथ लेता जाता हूँ।'

बातें करते-ही-करते बाबाजी वहीं फर्शपर लेट गये और सो गये। उनकी नाक बजने लगी। परंतु मुझे नींद कह चारपाईपर करवटें बदलते-बदलते काफी देर हो गयी। मुझे लग आयी। पानीका घड़ा कमरेके अंदर था। साँपके डरसे एक फिर कलेजा काँप गया। लेकिन यह सोचकर साहस बाँधा बाबाजी तो पास ही हैं। मैं पानी पीनेके लिये उठा। च उतरकर जूता पहिना। लेकिन यह क्या? पैरपर मानो वि जलता हुआ अंगारा रख दिया। उसी साँपने कहींसे आकर मेरे पै जोरसे डँस लिया था। मेरी आत्माने कहा—तुमने चोरीका दोष लगाकर बाबाजीका दिल बेकार दुखाया था, उसका बद महामायाने ले लिया। दिल दुखानेकी सजा बड़ी भयानक होती क्योंकि दिलमें दिलदारका निवास होता है।'

इसके बाद मैं बेहोश हो गया।

× × ×

जब मैं होशमें आया तो धूप फैल रही थी। आकाश सा था। मेरे आस-पास स्कूली बच्चोंका और कुछ किसानोंका जमाव थ स्कूलके आस-पास जिनके खेत थे, वे किसान लोग जमा थे। मेरा सि घूम रहा था। निर्बलताके कारण उठा नहीं जाता था। पैरमें भी कुछ जलन हो रही थी। मैंने किसानोंसे पूछा—'बाबाजी कहाँ हैं।

'बाबाजी, भगवान्‌जीके पास पहुँच गये!' एक किसान बोला

'कैसे क्या हुआ—?' मैंने अचकचाकर पूछा।

वही किसान कहने लगा—'सुबह जब लड़के स्कूल आ रहे थे तो उनकी लाश झोंपड़ीके पास पड़ी मिली। जहरसे सारा शरीर नीला पड़ गया था। जीभ सूजकर बाहर निकल आयी थी। मालूम होता है कि रातमें आपको साँपने काटा था। बाबाजीने जहर खींच लिया। परंतु दवाकी बोतल झोंपड़ीमें थी। वहाँतक जाते-जाते जहर अपना काम कर गया!'

'बेशक मुझे साँपने काटा था। लेकिन उनको चाहिये था कि बोतल ले आकर जहर खींचते।' मैंने कहा।

'तबतक आप मर भी जाते—मास्टरजी!' वही किसान बोला। मैं फिर बेहोश हो गया।

× × ×

मैंने बाबाजीकी लाश जलायी। उस स्थानपर पक्का चबूतरा बनवा दिया। वहाँ एक पत्थर लगवा दिया, जिसपर लिखा था—

"मूर्तिमान् परोपकारी बाबाजी,

जिनको मैंने झूठी चोरी लगायी थी। पर जिन्होंने मेरे पैरका जहर खींचकर अपने प्राण दे दिये। इसे बलिदानकी पराकाष्ठा कह सकते हैं। परमात्मा उनकी आत्माको शान्ति दें। किसीका शरीर गंदा देखकर यह नहीं सोचना चाहिये कि उसका हृदय भी गंदा होगा" मास्टरजी।

शुभचिन्तनका प्रभाव

सेठ गंगासरनजी काशीमें रहते थे। वे भगवान् शंकरजीके सच्चे भक्त थे। सोमवती अमावस्याका प्रातःकाल था। मणिकर्णिका घाटपर अनेक नर-नारी, साधु-संन्यासी स्नान कर रहे थे। 'जय गङ्गे' 'जय शंकर' और 'जय सूर्यदेव' के नारे लगाये जा रहे थे। भक्त गंगासरनजी भी स्नान कर रहे थे। तबतक अलवरके मन्दिरपरसे कोई गङ्गामें कूदा और डुबकियाँ खाने लगा। किसीकी हिम्मत न पड़ी जो उस डूबनेवालेको बचानेकी कोशिश करता; क्योंकि कभी-कभी डूबनेवाला अपने बचानेवालेको इस तरह पकड़ता है कि दोनों डूब मरते हैं, परंतु सेठजीका हृदय करुणासे भर गया। वे तैरना भी जानते थे। चार हाथ मारे और डूबनेवालेको जा थामा। किनारेपर लाकर देखा तो वह सेठजीका ही मुनीम नन्दलाल था। पेटसे पानी निकालनेके बाद जब नन्दलालको होशमें देखा, तब भक्तजीने कहा—

'मुनीमजी ! आपको किसने गङ्गाजीमें फेंका था ?'

'किसीने नहीं ।'

'तो क्या किसीका धक्का खाकर आप गिरे थे ?'

'नहीं तो ।'

'फिर क्या बात थी ?'

'मैं स्वयं ही आत्महत्या करना चाहता था ।'

'वह क्यों ?'

'मैंने आपके पाँच हजार रुपये सट्टेमें बरबाद कर दिये हैं। मैंने सोचा कि आप मुझे गबनके अभियोगसे गिरफ्तार कराकर जेलमें बंद करा देंगे । अपनी बदनामीसे बचनेके लिये मैंने मर जाना उत्तम समझा था ।'

'एक शर्तपर मैं तुम्हारा अपराध क्षमा कर सकता हूँ ।'

'वह शर्त क्या है ?'

प्रतिज्ञा करो कि 'आजसे किसी प्रकारका कोई जुआ नहीं खेलोगे—सट्टा नहीं करोगे ।'

'प्रतिज्ञा करता हूँ और जगद्गुरु शंकर भगवान्‌की शपथ खाता हूँ ।'

'जाओ, माफ किया । पाँच हजारकी रकम मेरे नाम घरेलू खर्चमें डाल देना ।'

'परंतु अब आप मुझे अपने यहाँ मुनीम नहीं रक्खेंगे ?'

'रक्खूँगा क्यों नहीं । भूल हो जाना स्वाभाविक है । फिर तुम नवयुवक हो । लोभमें आकर भूल कर बैठे । नन्दलाल ! मैं तुम्हें अपना छोटा भाई मानता हूँ । चिन्ता मत करो ।'

मुनीमने अपने दयालु मालिकके चरणोंमें सिर रख दिया।

× × ×

अगले वर्ष सेठ गंगासरनजीको कपड़ेके व्यापारमें एक लाखक मुनाफा हुआ। मुनीम नन्दलालको फिर लोभके भूतने घेरा। अबकी बार सेठजीके प्राण लेनेकी तरकीब सोची जाने लगी। उसने सोचा—यदि सेठजी बीचसे उठ जायँ तो विधवा सेठानी और बालक शंकरलाल मेरे ही भरोसे रह जायँगे। वे दोनों क्या जानें कि 'मिती काटा और तत्काल धन' किसे कहते हैं। बुद्धिमानीसे भरे हीले हवालेसे यह एक लाख मेरी तिजोरीमें जा पहुँचेगा। किसीको कुछ खबर भी न होगी, अन्तमें घाटा दिखला दूँगा। व्यापारमें लाभ ही नहीं होता। घाटा भी तो होता है।

संध्याका समय था। नन्दलाल अपने घरसे एक गिलास दूध संखिया डालकर सेठके पास ले गया और बोला—'दस दिन हुए मेरी गायने बच्चा दिया था। आजसे दूध लेना शुरू किया जायगा। आपकी बहूने कहा—पहिला गिलास मालिकको पिला आओ। तब हमलोग दूधका उपयोग करेंगे।'

सेठजी बोले—गिलास मेजपर रखकर घर चले जाओ। मैं भी भोजन करने जा रहा हूँ। सोते समय तुम्हारा लाया हुआ यह दूध मैं अवश्य पी लूँगा।

मेजपर वह विषाक्त दूध रखकर दुष्ट मुनीम चला गया।

भोजन करके सेठजी आये तो देखा कि गिलास खाली पड़ा है। सारा दूध पड़ोसीकी पालतू बिल्ली पी गयी। सुबह सुना कि

पड़ोसीकी बिल्ली मर गयी। वह क्यों मरी, कैसे मरी—इस बातकी छानबीन नहीं की गयी। पशुके मरने-जीनेकी चिन्ता मनुष्य नहीं करता। दूकानपर सेठको गद्दीपर बैठा देख मुनीमको महान् आश्चर्य हुआ, परंतु वह बोला कुछ नहीं।

रातको स्वप्नमें सेठजीको भगवान् शंकरजीके दर्शन हुए। भगवान् कह रहे थे—'तुमने जिस दुष्ट मुनीमको पाँच हजारके गबनके मामलेमें क्षमा कर दिया था, उसने दूधमें संखिया मिलाकर तुमको समाप्त करनेका षड्यन्त्र रचा था। मैंने प्रेरणा करके बिल्ली भेजी थी और तुम्हारे प्राण बचाये थे। उसी विषसे पड़ोसीकी बिल्ली मरी थी।'

सेठने उसी समय जाकर सेठानीको अपना सपना सुनाया। सुनकर बेचारी सेठानी सहम गयी। फिर सँभलकर बोली—'जब वह तुम्हारा ऐसा अशुभचिन्तक है, तब उसे निकाल बाहर करो। कोई दूसरा ईमानदार मुनीम रख लो।'

'मैं अपने शुभचिन्तनके द्वारा उसका अशुभचिन्तन नष्ट कर डालूँगा!' सेठने दृढ़ताके साथ कहा।

'यह कैसे हो सकता है?' सेठानीने आश्चर्यचकित होकर प्रश्न किया।

'मैं अपने मनमें उसके प्रति वैर-भावना नहीं रक्खूँगा—बल्कि प्रेम-भावनाको बढ़ाता रहूँगा।'

'इससे क्या होगा?'

'जब हम किसीके प्रति शत्रुताके विचार रखते हैं, तब व

मानवके प्रबलतम शत्रु हैं। मुझे अपने जीवनका भय नहीं है। क्योंकि—

'तुम रहते जिसके मन भीतर,
उसको परवाह नहीं होती,
जंगलमें कितने काँटे हैं,
पैरोंमें कितने छाले हैं!'

मैं तो 'आत्मसमर्पण' करके निश्चिन्त हो गया हूँ।'

× × × ×

साँझको एक सँपेरा मुनीमजीके घरके सामनेसे निकला। मुनीमने उसे बुलाकर कहा—'तुम्हारे पास कोई ऐसा साँप है, जिसके विष-दाँत तोड़े न गये हों?'

'जी हाँ—इसी पेटीमें मौजूद है। कल ही पकड़ा था।'

'तुम उसे बेच दो। ये लो पाँच रुपये।'

सँपेरेने वह विषधर फणिधर एक मिट्टीकी हाँड़ीमे बंद कर दिया और मुँहपर कपड़ा बाँध दिया।

जब रातके दस बजे, तब हाँड़ी लेकर नन्दलाल सेठजीके मकानपर पहुँचा। जिस कमरेमें सेठजी सोते थे, उसकी खिड़कीका एक शीशा टूटा हुआ था। खिड़कीके नीचे ही भक्तजीका पलंग रहता था। नन्दलालने उसी खिड़कीके द्वारा वह काला साँप अंदर फेंक दिया, जो सेठजीकी रजाईके ऊपर जा गिरा। हँसता हुआ नन्दलाल लौट गया।

प्रातः जब सेठजी रजाईसे बाहर निकले, तब सेठानी भी

वहीं खड़ी थी। उसी रजाईमेंसे एक काला साँप निकला और पलंगपरसे नीचे उतर गया। सेठानी चीख पड़ी। नौकरको बुलाने लगी।

'नौकरको क्यों पुकारती हो' सेठजी बोले।

'इस साँपको मरवाऊँगी। आपको काटा तो नहीं?' सेठानीने कहा।

'मेरी प्रेमपरीक्षा लेनेके लिये भगवान् भोलानाथने अपने गलेका हार भेजा था। रातभर साथ सोता रहा। कभी मेरा हाथ पड़ गया तो कभी पैर भी पड़ गया; परंतु काटता तो रातभरमें सौ बार काट सकता था।' सेठने कहा।

तबतक लाठी लेकर नौकर आ गया। सेठजी बोले—'हीरा! लाठीको रख दो! एक कटोरा दूध लाओ। दूध पिलाकर सर्प-देवताको जाने दो—जहाँ वे जाना चाहें। खबरदार! मारना मत।'

'और वह इसी घरमें रहने लगे?' सेठानीने व्यङ्ग्य किया।

'कोई परवा नहीं, रहने दो। भला साँप कहाँ नहीं रहते? साँपपर ही पृथ्वी टिकी है!' सेठजीने कहा।

रातको सेठानीने सपनेमें फिर भोलानाथको बैलपर चढ़े हुए मुस्कराते देखा। भगवान्ने मुनीमवाली सर्प-क्रिया बयान कर दी। सेठने कहा—'कुछ हो, अपने शुभचिन्तनके द्वारा मुनीमके अशुभ-चिन्तनको नष्ट करना है। आपका आशीर्वाद है, इस परीक्षामें पार हो ही जाऊँगा। आप भी इसमें मेरी सहायता करें।'

अपने दोनों अशुभचिन्तन विफल देख मुनीम नन्दल
तीसरी स्कीम सोचीं । उसने दो नामी चोरोंसे दोस्ती गाँठी ।
दिन आधी रातके समय नन्दलाल उन दोनों चोरोंको लेकर सेठ
मकानके पीछे जा पहुँचा । सेंध लगवाकर तीनों भीतर घु
सेठजीकी तिजौरी जिस कमरेमें रहती थी, उस कमरेको मु
जानता था । ज्यों ही मुनीम उस कमरेमें पहुँचा, उसने सा
काशीके कोतवाल भगवान् का भैरवको त्रिशूल लिये खजा
पहरेपर खड़ा देखा । भय खाकर भागना चाहा तो भगवान्ने
पकड़ लिया । दो तमाचे लगाकर कहा—'कमीने ! जिसने
आत्महत्यासे बचाया, उसके प्रति बदमाशी-पर बदमाशी करता
चला जा रहा है ? आज तुझे खतम करूँगा ।'

दोनों चोर भाग गये । मुनीमने भगवान् भूतनाथके च
पकड़ लिये और गिड़गिड़ाने लगा—'आज मेरा सारा अशुभचिन्त
मर गया । मैं अभी सेठजीसे माफी माँगता हूँ । अपने सुधारके लि
यह एक मौका दीजिये ।'

वही हुआ । मुनीमने जाकर सेठजीको जगाया और उन
चरण पकड़कर अपने तीनों अपराधोंको स्वीकार करते हुए क्षम
माँगी । सेठजीने हँसकर मुनीमको छातीसे लगा लिया और कहा—
'मेरे शुभचिन्तनकी विजय हुई ।'

और—वास्तवमें नास्तिक मुनीम ईमानदार आस्तिक ब
गया था ।

कहानीका असर

कई साल पहलेकी बात है। मि० सप्रू इटावामें डिप्टी ़लक्टर बनकर आये। एक दिन एक विचित्र घटना घटी। सप्रूजी ोजन करके पलंगपर लेटे हुए थे। रातके दस बजेका समय था। नोहर नाई चरणसेवा कर रहा था।

सप्रू—मनोहर! कोई कहानी सुनाओ!

मनोहर—आपको मैं क्या सुना सकता हूँ? आपने हजारों केताबें पढ़ी हैं और लाखों कहानियाँ सुनी हैं। आप रोज जो मुकदमें करते हैं वे सब कहानियाँ ही तो हैं। आप कुछ कहें और मैं सुनूँ!

स०—नहीं मनोहर! तुम्हीं कोई कहानी कहो।

म०—आप नहीं मानते तो सुनिये। बीच-बीचमें 'हूँ' जरूर कहते जायें। नहीं तो आप सो जायें और मैं बकता रहूँ।

स०—अच्छा !

म०—अरबमें एक बादशाह था। एक रातको दासीने
बादशाहका पलंग बिछाया। गरमीके दिन थे। छतपर केव
छिड़काव किया गया था।

स०—हूँ !

म०—सोनेका पलंग था, रेशमकी निवारसे भरा गया था, क
बिछा था, उसपर गद्दा बिछा था; फिर एक कालीन बिछा था, उस
सफेदी बिछी थी। आमने-सामने, अगल-बगल चार तकिये रक्खे थे
फूलोंसे सेज सजाकर, दासी उस पलंगकी शोभा एकटक देख रही

स०—हूँ !

म०—दासीके मनमें विचार आया कि पाँच मिनट इस
लेट लेना चाहिये। मैं भी तो देखूँ कि कैसा लगता है ! मन ही
है शैतान ! दासी बादशाहके पलंगपर लेट गयी।

स०— अच्छा ! फिर ?

म०—दासी थी बेचारी दिनभरकी थकी और माँदी ! ऊपरसे
लगी ठंढी हवा और नीचेसे उठी फूलोंकी गमक ! तीन मिनट भी
नहीं बीते; दासी टपसे सो गयी।

स०—अरे ! फिर क्या हुआ ! शामत आयी होगी ?

म०—एक घंटेके बाद भोजन करके बादशाह सलामत आराम
करने आये। पूरनमासीकी चाँदनी थी ही, बादशाहने तुरंत जान
लिया कि पलंगपर दासी सो रही है।

स०—गजब हो गया !

म०—बादशाहने दासीको जगाया । जमीनपर खड़ी होकर, मारे डरके, दासी थर-थर काँपने लगी । हाथ जोड़कर चरण पकड़ लिये और फूट-फूटकर रोने लगी । बादशाहने कहा कि 'इस कसूरकी बिल्कुल माफी नहीं हो सकती । हल्की सजा दी जायगी ।'

स०—अच्छा ! फिर ?

म०—बादशाहने बेगम साहेबाको बुलाया और सब माजरा कह सुनाया । इसके बाद बादशाहने बेगमसे कहा कि आप ही इस दासीकी सजा तजवीज करें; क्योंकि इसने आपका ही अपराध विशेष किया है ।

स०—ठीक ! फिर ?

म०—बेगम साहेबाने कहा कि इसने साठ मिनट पलंगपर व्यतीत किये हैं इसलिये साठ बेंतकी सजा दी जाती है ।

स०—बहुत सख्त सजा दे दी !

म०—रुतबा पा जानेपर आदमी कसाई हो जाता है !

स०—हाँ, हूँ, आगे चलो !

म०—सजा सुनकर बादशाहके भी होश उड़ गये । बादशाह सोचा कि अगर किसी आदमीने बेंत लगाये तो यह साफ मर जायगी

स०— हूँ !

म०—तबतक बेगम साहेबाने खुद ही कहा कि बेंत मैं लगाऊँगी । खूँटीपरसे चमड़ेका बेंत उठाकर बेगम साहेबाने चार-पाँ

हाथ करारे जमा दिये। बेचारी दासी रोती हुई गिर पड़ी। उसके बाद बेगम साहेबा थक गयीं। औरतकी जात मुलायम होती ही है!

स०—हूँ!

म०—बादशाह एक दो-तीन-चार-पाँच कहकर गिनती गिनने लगे। तीस बेंततक दासी जार-जार रोती रही, परंतु इसके बाद दासीकी मति पलट गयी। तीससे साठतक दासी खूब हँसती रही।

स०—सो क्यों?

म०—धीरज रखिये। सब बातें आप-ही-आप खुलती जायँगी।

स०—अच्छा हाँ!

म०—सजा समाप्त होनेपर बादशाहने दासीसे पूछा कि 'तू पहले रोयी क्यों और पीछे हँसी क्यों?' दासीने कहा कि 'चोटके कारण रोयी थी परंतु जब यह समझमें आया कि मैंने एक घंटा पलंगपर बिताया तब तो साठ बेंत लगे और बादशाह सलामत रातभर सोते हैं सो इनकी न मालूम क्या दशा होगी। पलंगकी सजासे बेगम साहेबा भी न बचेंगी। आप दोनोंपर अनगिनती बेंत पड़ेंगे। अतः यह सोचकर मैं हँसी कि सजा देनेवालोंको अपनी सजाकी खबर ही नहीं है। जिस तरहसे पलंगपर मुझे सोता देख आप क्रोधित हुए, उसी तरह आपको पलंगपर सोता देख खुदा गुस्सा होता है। मेरे हँसनेका यही कारण है।' इतना सुनते ही बादशाहकी बुद्धि बदल गयी। बादशाहने ताज फेंक दिया, इमामा फेंक दिया, जामा फेंक दिया और जूते फेंककर फकीरी कफनी पहिन ली। रामचन्द्रजी

दिनको वनकी ओर चले थे, बादशाह ठीक आधी रातको वनगामी हो गया।

स०—वाह वाह ! The duly is the beauty.

म०—अंग्रेजीमें क्या मुझे गाली देने लगे ?

स०—नहीं मनोहर ! तुमने बहुत अच्छा किस्सा कहा, किंतु अब हमको भी इस पलंगसे उतरना चाहिये।

Duly is beauty इतना कहकर वह पलंगसे उतर पड़े और पृथ्वीपर कम्बल बिछाकर लेट गये।

× × ×

शहरभरमें खबर फैल गयी कि फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट मिस्टर सप्रू ५५०) मासिकपर लात मारकर फकीर हो गये ! बँगलेके द्वारपर एक इमलीके नीचे, एक कम्बलपर, डिप्टी कलक्टर फकीरी-वेषमें बैठे हैं।

बात-की-बातमें अंगरेज कलक्टर साहब, सुपरिंटेंडेंट पुलिस, जिलेके शेष तीन डिप्टी कलक्टर और कोतवाल साहब घटनास्थलपर आ पहुँचे।

कलक्टर—वेल मिस्टर सप्रू। टुमको क्या हो गया ? टुम कलेक्टरीके वास्ते नामजद हो गया है। टुमने यह इसटीपा क्यों भेजा ? अम टुमारा इसटीपा मंजूर करने नहीं माँगटा !

स०—अभीतक सरकारकी नौकरी की, अब मालिककी नौकरी करूँगा।

कलक्टर—पिकीरी करेगा पिकीरी ? चौबीस घंटेमें पाँच घंटा

रहते हैं कि मैं कलमतोड़ जवाब देता हूँ! पीछे चाहे स्याह या सफेद हो!

(५)

बादशाह—आप भिगोकर मारनेमें लासानी हैं—माराज इसीलिये मैं आपके सब कसूर माफ किये बैठा हूँ।

बीरबल—हाँ, फिर सोना बना?

बादशाह—फकीरने कहा—तीन चीजें ले आ। (१) चमड़े धोंकनी और कोयला, (२) ताँबा और (३) पारा। आग ताँबा गलाया और पारेका दिल मिलाया—वही सोना बना मगर इस्म आजमके बिना पारा अपना दिल नहीं देता है! व आगपर उड़ जाता है। वह कुछ नहीं बनता हुआ सब कुछ समा जाता है! खैर साहब—खुदा आपका भला करे। मैं रात तीनों चीजें ले गया। उसने ताँबा गलाया और पारेका दिल मिलाया सोना तो क्या चीज—कुन्दन बन गया—पंडीजी!

बीरबल—आपने सोना बनाना सीख लिया है?

बादशाह—हाँ! जिसे आप 'अकबरी' मुहर समझते हैं वह रसायनका सोना है। जौहरी लोग उसे कीमती सोना कहते हैं। वह सोना मैं खुद बनाता हूँ।

बीरबल—उस फकीरने और क्या बात कही थी?

बादशाह—उसने कहा था कि देखो मैंने मन्त्रसहित तरकीब तुमको बतला दी है। तुम किसीको यह इल्म मत बतलाना। बादशाहने मुझे इसीलिये कैद किया है कि मैंने उसे तरकीब बतानेसे

इन्कार कर दिया। अगर बादशाह खुशामद करता तो बतला देता। चार चीजें अगर बादशाह पा जाये तो वह दिल्लीके तख्तपर हमेशा कायम रह सकता है।

बीरबल—कौन चार चीजें?

बादशाह—(१) एक संतकी मिहरबानी, (२) एक सतीकी मिहरबानी, (३) रसाइन और (४) चित्तौड़का किला।

बीरबल—पाया क्या-क्या?

बादशाह—कबीर साहब संतकी मिहरबानी पा ली है। रसाइन पा ली है। चित्तौड़का किला पा लिया है। सिर्फ सतीकी मिहरबानी बाकी रही।

(६)

बीरबल—यही बाकी—बाकी तीनोंकी बाकी-निकाल देगी!

बादशाह—क्या फरमाया—पंडीजी?

बीरबल—जिस दिल्लीके सिंहासनपर युधिष्ठिर और पृथ्वीराज 'अमर राजा' न बन सके—उसपर आप कैसे बनेंगे?

बादशाह—एक सतीकी मिहरबानी बाकी है। अगर मेरे चारों काम पूरे हो जायें तो फिर मैं देखता हूँ कि मुझे कौन मारता है!

बीरबल—वह देखिये! संग्रामभूमिके बीचोबीच एक सती-दाह होने जा रहा है। चिता जल उठी है—सती परिक्रमा कर रही है। आपको चाहिये कि सतीकी मिहरबानी प्राप्त करें। चलिये, वहाँ चलिये।

दोनों सतीके सामने जा पहुँचे। दोनोंने सतीको प्रणाम किया। बादशाहने हाथ जोड़कर सतीसे बातचीत की—

महाकाल

सम्राट् विक्रमादित्य अन्य राजाओंकी तरह विलासी नहीं थे
वे हर समय इसी चिन्तामें रहा करते थे कि प्रजाको किस-वि
बातकी तकलीफ है और वह किस प्रकारसे दूर की जा सकती है
जिस शासकको प्रजाकी चिन्ता नहीं—अपनी ही चिन्ता रहती
उसे रक्षक नहीं, भक्षक ही समझना चाहिये ।

एक दिन प्रातः चार बजे महाराज अपने महलसे बाहर निकले
बिल्कुल अकेले । किसानी वेश । एक ओरको चल दिये । एक जंगल
जाकर देखा कि एक तरफसे एक रीछ आया और उनकी सामनेवा
राहपर होकर आगे चलने लगा । उस रीछने महाराजको नहीं देख
परंतु सम्राट्ने उसे देख लिया था ।

थोड़ी दूर चलकर वह रीछ जमीनपर लोट-पोट हो गया औ
एक आलाबाला सोलहसाला नवयुवती बनकर एक कुएँपर जा बैठा
सम्राट् भी छिपकर यह निराला तमाशा देखने लगे ।

तबतक कुएँपर दो सिपाही आये । दोनों सगे भाई थे । छुट्ट
लेकर घर जा रहे थे ।

युवतीने मुसकराकर बड़े भाईसे कहा—'तुम्हारे पास कुछ
खानेको है ?'

बड़ा *सिपाही*—जी नहीं ।

युवतीने कटाक्ष मारकर कहा—मुझे बड़ी भूख लगी है ।

बड़ा सिपाही उस युवतीपर मोहित हो गया था । वह बोला—
यदि आपकी आज्ञा हो तो समीपके किसी गाँवसे कुछ खानेकी
चीज ले आऊँ ?

युवती—आपको तकलीफ होगी ।

बड़ा—आपके लिये तकलीफ ! आपके लिये मैं जानतक दे सकता हूँ ।

युवती—क्यों ?

बड़ा—सुन्दरताके कारण । सुन्दरता भी ईश्वरमेंसे आती है । सुन्दर चीजको देखनेसे माळूम होता है मानो ईश्वरका दर्शन हो रहा है ।

युवती—तो ले आओ ।

बड़ा भाई चला गया ।

युवतीने छोटे भाईको कटाक्ष मारा और अपने पास बुलाया । वह आकर अदबसे अलग बैठ गया ।

युवती—मैं तुम्हींपर रीझ गयी हूँ ।

छोटा—ऐसी बात मत कहिये । आपने बड़े भाई साहबपर कृपाकटाक्ष किया था । आप मेरी भावज हैं । भावज होती है—माता ।

युवती—तुम बड़े मूर्ख माळूम पड़ते हो ।

छोटा—क्यों ?

युवती—तुम्हारे बड़े भाईकी क्या उम्र है ?

छोटा—पचास साल ।

युवती—तुम्हारी ?

छोटा—पैंतीस साल ।

युवती—और मेरी ?

पहुँचकर साँप चिटका और नावमें जा गिरा । लोगोंने यह तम
जो देखा तो साँपकी ओरसे हटकर दूसरी ओर भागे । तीन
आदमी नावके एक किनारे हो गये । नाव उलट गयी । सब डूब
मर गये । वह साँप फिर लौटा और जमीनपर लोट मारने लगा ।

सम्राट्ने सोचा—अजब लीला है ।

अबकी बार वह एक वृद्ध ज्योतिषी बन गया । सफेद दा
शोभा दे रही थी । हाथमें पत्रा । पैरोंमें खड़ाऊँ । ललाटपर चन्दन
सम्राट्ने आगे दौड़कर उसके कदम पकड़ लिये ।

वह—तुम कौन ?

सम्राट्—मैं एक राजा हूँ ।

वह—क्या चाहते हो ?

सम्राट्—मैं सुबहसे आपके पीछे लगा हूँ कि जब आप रीछ
रूपमें थे । आपने युवती बनकर और साँप बनकर जो-जो का
किये, वह मैंने देखे हैं । यह आपका चौथा रूप है ।

वह—अच्छा तो तुम क्या पूछते हो ?

सम्राट्—यह कि आप कौन हैं ?

वह—तुम इस बवालमें मत पड़ो । अपने रास्ते जाओ

सम्राट्—नहीं, स्वामिन् ! जबतक आपका परिचय प्राप्त न क
लूँगा, तबतक डग न धरूँगा ।

वह—मेरा नाम है महाकाल । मैं गीतामें वर्णित उत्कट काल
हूँ । लोगोंके विनाशके काममें लगा रहता हूँ ।

सम्राट्—आप जिसे चाहते हैं, उसे साफ कर डालते हैं ?

महाकाल—नहीं, मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ। परमात्माका एक तुच्छ सेवक हूँ। परमात्मा सम्राट् हैं। प्रारब्ध प्रधान मन्त्री है। मैं एक अधिकारी हूँ। प्रधान मन्त्रीकी आज्ञासे मैं मारने योग्य पात्रोंको पहचानता हूँ।

सम्राट्—अच्छा महाकालजी ! मेरी मौत कब आयगी ?

महाकाल—यह बतानेकी सरकारी आज्ञा नहीं है। तुम अभी बहुत दिनोंतक जीवित रहोगे। तुम्हारे द्वारा ईश्वर अनेकों परोपकारके काम करायेंगे। तुम भी ईश्वराधीन—मैं भी ईश्वराधीन, जाओ।

सम्राट्—फिर भी इतना तो बतला ही दीजिये कि मेरी मौत कैसे होगी ?

महाकाल—कोठेपरसे गिरकर। जिस दिन तुम रपट पड़ोगे समझ लेना कि बस, मौत आ गयी।

सम्राट्—अब आप किसकी घातमें हैं ?

महाकाल—तुम्हारे अधिकारसे बाहरका प्रश्न है।

सम्राट्—आपने रीछ बनकर क्या किया था ?

महाकाल—एक आदमी एक पेड़पर चढ़ा लकड़ी काट रहा था। उसको पेड़परसे गिरानेके लिये मैं रीछ बन गया था और पेड़पर चढ़ गया था उसे गिराकर मारा था।

सम्राट्—आप विविध प्रकारके रूप क्यों बनाते हैं ?

महाकाल—जिसकी मौत जिस रूपसे लिखी होती है, उसे मैं उसी बहानेसे मारता हूँ।

'हीला रिजक, बहाने मौत !'

सम्राट्—क्या कोई आपके कराल हाथसे बचा भी है ?

महाकाल—

कोइ कोइ जोगी बच गये, पारब्रह्मकी ओट !
चक्की चलती कालकी, पड़ी सभीपर चोट !

सम्राट्—क्या करनेसे मौत नहीं आती ?

महाकाल—परमात्माकी शरणागतिसे। परमात्मा अपने भक्तक काल अपने हाथमें ले लेते हैं। उसपर मेरा अथवा प्रधान मन्त्रीव कोई अधिकार नहीं रह जाता।

सम्राट्—आपका यह आजका किस्सा यदि किसीको मैं सुना तो क्या वह सुनेगा ? सुनकर भी क्या वह कुछ समझ सकेगा ?

महाकाल—लोग प्रेमके किस्से लिखते-पढ़ते हैं। दिलबहलाव कहानियाँ सुनते हैं। जिन कहानियोंसे दिमागको खूराक मिल है, उन कहानियोंको वे नहीं सुनते।

सम्राट्—सुनेंगे भी तो उसे गप्प मानेंगे।

महाकाल—कहेंगे, ऐसा हो ही नहीं सकता।

सम्राट्—सचमुच यह जगत् विचित्रताओंकी रंगभूमि है। इ जगत्को कोई भी नहीं जानता है, यद्यपि सभी समझते हैं कि इस जगत्को जानते हैं।

महाकाल—यह भी इनकी एक विचित्रता ही समझो।

सम्राट्—मैं आपको प्रणाम करता हूँ। अब आप जाइये आपके दर्शनसे मुझे यह उपदेश मिला कि 'काल और ईश्वरको क नहीं भूलना चाहिये।'

भक्त रानी मैनावती

आजसे दो हजार वर्ष पूर्व भारतकी राजधानी उज्जैनमें थी। भारतसम्राट् भरथरी (भर्तृहरि) महाराज जब योगी हो गये, तब विक्रमादित्यजी सिंहासनपर विराजमान हुए। उस समय बंगालके राजा गोपीचन्दजी थे जो कि भरथरीके मामा थे। गोपीचन्दने जब सुना कि भरथरीने गुरु गोरखनाथजीसे अमरविद्या पढ़ी है और भोग त्यागकर योगसे अनुराग किया है, तब वे भी गोरखनाथजीके शिष्य हो गये। गुरुने गोपीचन्दसे भी कहा कि यदि तुम अमरविद्याके प्रेमी हो तो राज्य त्याग दो और भरथरीके साथ रहो। गोपीचन्दजीने वही किया।

राज्य त्याग दिया। अपने छोटे भाईको गद्दीपर बैठाकर आपने योगीरूप धारण किया। गोरखगुरुके आज्ञानुसार रानी और मातासे भिक्षा माँगनेके लिये गोपीचन्दजी रंगमहलमें गये।

रानी—मैं आपको क्या भिक्षा दूँ? मेरे आँसुओंका हार लेते जाओ। जनक राजाकी तरह क्या आप भोगके अंदर योगको नहीं निभा सकते?

राजा—रानी साहबा! योगसे भी कठिन भोग है। बिना योगके भोग भी तो नहीं हो सकता। योग और भोग दोनोंसे समाधि लगती है। परंतु भोगका जाननेवाला योगके जाननेवालेसे भी अधिक दुर्लभ है।

रानी—क्या अमरविद्याके लिये राज्यका त्याग आवश्यक है?

राजा—आवश्यक है। अमरविद्याके नियमोंको पालनेके लिये राज-काज छोड़ना अनिवार्य है।

रानी—यदि मुझे त्यागनेसे आप अमर हो सकते हैं तो मुझे त्याग दीजिये। मैं अपने कलेजेपर पत्थर रख लूँगी, परंतु आपकी हानि न करूँगी। सच्ची पत्नी पतिके सुखके लिये सब सुख त्याग सकती है।

राजा—मेरे अनुरागके लिये आप जो त्याग कर रही हैं, उसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ। मैं आपसे यही भिक्षा माँगने आया हूँ कि आप सहर्ष मुझे वनवासकी आज्ञा प्रदान करें।

रानी—सहर्ष कहती हूँ कि आप अमरविद्याके विद्यार्थी बनें।

समोद चाहती हूँ कि जनता भरथरीके साथ आपका भी नाम लिया करे। एक भिक्षा आप भी मुझे देंगे क्या ?

राजा—क्या ?

रानी—जिस दिन मेरी मौत हो, उस दिन आपके दर्शन प्राप्त करूँ।

राजा—तथास्तु !

× × ×

गोपीचन्द—अलख ! माताजी ! भिक्षा दीजिये।

मैनावती—आज मैं धन्य हुई। मेरे पेटसे एक भक्त पुत्र उत्पन्न हुआ—इसलिये मैं धन्य हूँ।

गोपीचन्द—मुझे भिक्षा दो माताजी !

मैनावती—मैं तुझे तीन शिक्षाओंकी भिक्षा देती हूँ। एक शिक्षाका मूल्य एक हीरेसे कम नहीं है।

गोपीचन्द—शिक्षाके लिये ही मैंने हीरोंकी खान यानी राजपाटका त्याग किया है। आप शिक्षाकी भिक्षा दीजिये।

मैनावती—मेरी पहली शिक्षा यह है कि सर्वदा किलेके अंदर रहना जिससे शत्रुलोग हमला न कर सकें !

गोपीचन्द—मैं आपकी शिक्षाको समझ नहीं सका हूँ। आपने रहस्यवादकी वाणीमें शिक्षा दी है।

मैनावती—मनुष्यके लिये ब्रह्मचर्यसे बढ़कर कोई किला नहीं है। रोग, शोक, भय, बाधा, व्याधि, चिन्ता और अशान्ति कोई भी शत्रु

गोपीचन्द—महाराज !

गोरख—तुमने अपनी रानीसे क्या भिक्षा प्राप्त की ?

गोपीचन्द—दूसरेके उपकारके लिये अपना स्वार्थ त्याग करना चाहिये। रानीने मुझे इसी शिक्षाकी भिक्षा दी है।

गोरख—तुमने अपनी मातासे क्या भिक्षा पायी ?

गोपीचन्द—माताने तीन शिक्षाओंकी भिक्षा दी है।

(१) ब्रह्मचर्यसे रहना, (२) खूब भूख लगे तब भोजन करना और (३) खूब नींद लगे तब सोना।

गोरख—ठीक है। तुमको सिद्धि प्राप्त होगी। प्रत्येक स्त्री प्रवृत्तिका जाल बिछाये बैठी है। प्रत्येक स्त्रीका सर्वस्व प्रवृत्तिमार्ग है। परंतु रानी मैनावतीने निवृत्तिका पक्ष ग्रहण किया है। मैंने यह पहली स्त्री देखी है, जिसने निवृत्तिसे प्रेम दर्शाया है। मैनावती रानीने, सुमित्रा रानीकी तरह ब्रह्मको प्यार किया है। वास्तवमें तुम्हारी माता—माता कहलाने योग्य है। मैं उसको श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूँ।

गोपीचन्द—ईश्वर करे मेरी माता-जैसी सब माताएँ हो जायँ।

गोरख—तुम और भरथरी मेरे साथ-साथ स्यालकोट चलो। स्यालकोटका राजकुमार पूरनमल बड़ी भारी विपत्तिमें फँस गया है। पूरनमलको भी प्रवृत्तिके दलदलसे निकालना है। उसके बाद तुम तीनों मेरे साथ विन्ध्याचलमें चलकर तप करना और अमरविद्याका अध्ययन करना। मेरेद्वारा तुम तीनों अमर बनोगे। तुम तीनोंकी कहानी जगत्में प्रसिद्ध रहेगी।

गोपीचन्द—आजतक कितने व्यक्ति अमर हो चुके हैं ?

गोरख—एक हजार ।

गोपीचन्द—वे कहाँ रहते हैं ?

गोरख—हिमालयमें । कोई-कोई सर्वत्र घूमते भी रहते हैं । परंतु कोई उनको पहचानता नहीं । वे लोग अपना नाम बदल लेते हैं ।

गोपीचन्द—मर और अमरमें क्या अन्तर है ?

गोरख—खेतके कास्तकार दो प्रकारके होते हैं—(१) शिकमी और (२) दखिलकार । शिकमी किसानको जमीनदार बेदखल कर सकता है; परंतु दखिलकारसे खेत नहीं छीना जा सकता । तुमलोग शरीररूपी खेतके अभी शिकमी कास्तकार हो—मेरी सहायतासे अब तुमलोगोंको दखिलकार काश्तकार बनना चाहिये ताकि कालरूपी जमीनदार तुम्हारा खेत न छीन ले । कालद्वारा शरीर इसीलिये नष्ट किया जाता है कि जिससे किसीको अनुभव प्राप्त न हो । अनुभवकी प्राप्तिसे तुम ज्ञानी हो जाओगे और कालचक्रका बहिष्कार कर दोगे । उस समय भक्तिकी झलक सामने आयेगी । मृत्युप्रिय भक्तसे जीवनप्रिय भक्तका दर्जा श्रेष्ठ माना गया है ।

लोग कहते हैं कि 'गोपीचन्द-भरथरी' अमर हैं और संसारमें नाम बदलकर घूमा करते हैं ।

रह सकूँगा ? जिस गाँवके सब लोग नशेबाज हैं, उस गाँवमें मेरा गुजारा कैसे होगा ? नहीं-नहीं, औरतोंके शहरमें मेरा निवास नहीं रह सकता।

भरथरी—क्यों जी ! तुम कौन हो ? मेरी बात नहीं सुनते

गोरख—आपकी अप्रकाशित 'विधान' नामक नाटक-पुस्तकमें दो भाग हैं—एक 'दुःखान्त नाटक' और दूसरा 'सुखान्त नाटक'। दुःखान्त नाटक पहले खेला गया और सुखान्त नाटक बादको खेला जायगा। परन्तु इस दुःखान्त नाटकका अन्तिम परदा कब उठेगा ? इसकी समाप्ति किस संवत्में होगी ? ऐसा न हो कि आप 'सुखान्त' का समय भूल जायँ ! आपमें चाहे कोई अवगुण न हो, किंतु भूलका अवगुण तो है ही ?

भरथरी—क्यों जी ! यहाँसे कोई गाँव नजदीक है ?

गोरख—यह धरतीका देश बहुत बड़ा है। यह विशाल धरतीका देश, पानीके देशके बीचोबीच सो रहा है और पानीका देश—आगके देशमें हिलोर भर रहा है, तो भी इस धरतीपर रहनेवाले समस्त 'कीटाणु' बेफिक्रीके इन्तजाम सोच रहे हैं—निधड़क घूम रहे हैं सब निशाचर !

भरथरी—पूरा पागल मालूम होता है। मैं पूछता हूँ आगरेकी बात और यह देता है दिल्लीकी खबर। संध्या हो रही है और उस हिरनका पता नहीं।

× × ×

तबतक गोरखनाथजीका वह पालतू काला हिरन वहाँ आ

पहुँचा जिसके पीछे महाराज परेशान हो रहे थे। महाराजने एक तीर चला दिया और हिरन मरकर वहीं योगिवर गोरखनाथजीकी गोदीमें गिर पड़ा। उनकी चित्तवृत्ति अन्तर्जगत्से हटकर इस बाहरी जगत्में आ गयी। हिरनको मरा हुआ देख गोरखनाथजीने महाराजसे कहा—

गोरख—तुम कौन हो?

भरथरी—भारतके उदय-अस्तका मैं राजा हूँ।

गोरख—भारतका उदय जब होगा तब होगा—तुम्हारा अस्त तो आज हो जायगा।

भरथरी—क्यों?

गोरख—इस निरपराध और पालतू हिरनको क्यों मारा?

भरथरी—मैं राजा हूँ। जिसको चाहूँ मारूँ!

गोरख—मैं नहीं मानता कि तुम राजा हो! शूर नहीं, क्रूर हो।

भरथरी—तुम्हारे न माननेसे क्या होता है?

गोरख—हमारे न माननेसे तुम राजा रह कैसे सकते हो?

भरथरी—अच्छा!

गोरख—और नहीं तो?

भरथरी—क्या करोगे मेरा—तुम?

गोरख—जो तुमने हिरनका किया—ठीक वही!

भरथरी—तुम्हारे पास हथियार तो कोई है ही नहीं। फिर मुझको मारोगे कैसे?

गोरख—हथियारसे मारा करते हैं हिंजड़े लोग। हमारी दुआ ही हमारी तलवार है। दुआसे जमीनतक फट जाती है। तुम्हारा फट जाना कौन बड़ी बात है?

भरथरी—क्या मैंने कोई अपराध किया है?

गोरख—बड़ा भारी।

भरथरी—क्या?

गोरख—मार वही सकता है कि जो जिला भी सकता हो। जो जिलाना नहीं जानता उसको मारनेका हक नहीं है, हुक्म नहीं है, कानून नहीं है।

भरथरी—मरकर कोई जीवित नहीं हो सकता। यह बात प्रकृतिके नियमसे विरुद्ध है।

गोरख—प्रकृतिके नियमोंको तुम क्या जानोगे? प्रकृतिका नाम ही सुन लिया या उसे कभी देखा भी? विष खानेसे आदमी मर जाता है, परंतु शंकरजी विष खाकर अमर हो गये। बिना जड़का कोई पौधा नहीं होता। किंतु अमर बेल बिना मूलके ही फूलती है। सम्भव और असम्भव दोनों नियमोंकी नियमावलीकी माला जो प्रकृति पहिने है उसका नाम ही सुन भगे हो या कुछ जानते भी हो?

भरथरी—मुझे फुरसत नहीं जो ज्यादा बकवाद करूँ। हिरनको लेकर राजधानी लौटना है।

गोरख—हिरनको लेकर? हिरनको छोड़कर ही राजधानी चले जाओ तो मैं जानूँ? बिना इसको जीवित किये तुम एक 'डग'

नहीं रख सकते। राजधानीमें नहीं जाओगे तो कुरबानीमें जरूर जाओगे। हजार बातकी एक बात यह कि इसे जीवित करो या मरनेको तैयार हो जाओ।

भरथरी—तुम कौन हो ?

गोरख—पब्लिकको बनाने और बिगाड़नेका खेल राजा लोग खेला करते हैं। हम योगी वे लोग हैं जो राजाओंके बनाने-बिगाड़नेका खेल खेला करते हैं।

भरथरी—क्या तुम इस हिरनको जीवित कर सकते हो ?

गोरख—अगर जीवित कर दें तो ?

भरथरी—तो भारतका सम्राट् तुम्हारा गुलाम हो जायगा।

गोरख—कञ्चन, कामिनी और कीर्तिकी आपातकमनीय त्रिमूर्ति राजपाटको छोड़कर नम्रता, ब्रह्मचर्य और त्यागकी आपात-भयावनी त्रिमूर्ति भक्तिमार्गमें आ जाओगे ?

भरथरी—जरूर आ जाऊँगा।

अमरविद्या या प्राणकलाके एक आचार्य गोरखनाथजीने उसी क्षण मरे हुए हिरनको सचमुच जिला दिया।

गोरख—राजा भरथरी !

भरथरी—बाबा भरथरी कहो—बाबा !

गोरख—राजा बड़ा कि योगी ?

भरथरी—राजा केवल मार सकता है, पर योगी मार भी सकता है और जिला भी सकता है !!

गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर हैं !

विन्ध्याचलकी एक चोटीपर खड़े हुए महात्मा कपिलजीने ३
शिष्य नन्दनसे कहा—

कपिल—तुम क्या चाहते हो ?

नन्दन—भगवान्‌का निरन्तर दर्शन ।

कपिल—तो त्रिगुणकी तिकड़मसे बचकर रहना सीखो ।

नन्दन—त्रिगुण किसे कहते हैं, गुरुदेव ?

कपिल—सत्त्व, रज और तम ।

नन्दन—वे क्यों त्याज्य हैं ?

कपिल—सत्त्वगुण मारता है कीर्तिके द्वारा । रजोगुण मारत
धनके द्वारा और तमोगुण मारता है स्त्रीके द्वारा । कामिनी-क
कीर्ति, यही त्रिगुणकी तिकड़म है । यही तीन निशाचर जीवा
सत्यानाश किया करते हैं ।

नन्दन—इस त्रिगुणको बनाया किसने, महाराज ?

कपिल—मायाने ! मायासे बचकर चलना ही जीवा
पुरुषार्थ है । त्रिगुणात्मक माया ही जीवात्माकी समझकी परीक्ष
है । अगर त्रिगुणके त्रिशूलकी एक भी नोक छू ली तो फिर
समझना । गुरुका काम है—ज्ञान देना । इसलिये मैं यही ज्ञान
हूँ कि गुणातीत बनो । अब मैं जाता हूँ ।

नन्दन—जाते हैं ? कहाँ जाते हैं आप ? गुरुदेव ! :
लिये तो मैंने माता-पिता त्यागे; क्या आप भी नसीब न होंगे ?

कपिल—मैं सदा तुम्हारे पास हूँ । सद्गुरु, परमात्मा

।—ये तीनों हर जगह हैं। निश्चयके साथ जब जहाँ याद करोगे, मैं ट हो जाऊँगा। वैसे भी मैं तुम्हारी रक्षा करता रहूँगा। पर साथ रहूँगा।

नन्दन—क्यों ?

कपिल—योग, भोग और भोजन—ये तीन काम एकाकी करने हिये। मैं गङ्गासागरपर तप करने जाता हूँ। तुम इसी विन्ध्याचल-चोटीपर तप करो। फिर भी मुझे दूर मत समझना। माया, । और परमात्माके लिये दूरी नापकी कोई चीज नहीं होती।

नन्दन—मायाकी व्यापकता क्या किया करती है ?

कपिल—त्रिगुणके द्वारा जीवात्माको भुलाये रखती है। आफिरको मंजिलतक न पहुँचने देना ही उसका जीवन-व्रत है।

नन्दन—संतकी व्यापकता क्या किया करती है ?

कपिल—प्रत्येक जीवात्माको अच्छाई और बुराईकी तमीज दिया रती है।

नन्दन—परमात्माकी व्यापकता क्या काम करती है ?

कपिल—माया और संतकी करतूत देखा करती है और दोनों-ो अपनी सत्तासे जीवित रखती है।

नन्दन—क्या संतका काम परमात्मा नहीं कर सकता ?

कपिल—नहीं

नन्दन—क्यों महात्माजी ?

कपिल—परमात्मा वक्ता नहीं है—द्रष्टा है। वह देखता है, गर बोलता नहीं। बोलनेका काम संतके अधीन किया गया है।

नन्दन—क्या परमात्मामें बोलनेकी शक्ति नहीं है ?

कपिल—उनमें सब शक्तियाँ हैं। वे बोल सकते हैं—प बोलना नहीं चाहते। उन्होंने अपनेको आप ही मूक बना दिय है। इसका कारण वे ही जानें। उनके अवतार बोला करते है पर वे स्वयं नहीं बोलते।

नन्दन—न बोलना परमात्माकी एक अदा है ?

कपिल—जो समझो।

(२)

महात्मा कपिलजीके चले जानेके एक महीने बाद, एक दि नन्दन बाबा पहाड़ी र घूम रहे थे। दैवात् एक स्थानपर उनके सोनेकी एक खान मिल गयी।

सोनेकी खान देखते ही भगतजीकी नीयत बदल गयी। आ कहने लगे—'गुरुजीने त्रिगुणसे बचनेका उपदेश दिया है। मग उनके प्रवचनमें परिवर्तनकी गुंजाइश है। मान लो कि मुझे आ कञ्चन मिल गया है। यदि मैं इस कञ्चनद्वारा बुरे कर्म करूँ तो यह हानिकर प्रमाणित हो सकता है। उस अवस्थामें कञ्चन त्याज ठहराया जा सकता है। पर इसी कञ्चनसे अगर अच्छे काम करू तो यह धन कैसे जहर बन जायगा ? गुरुजीके निर्णयमें यह आलोचना हो सकती है कि धन बुरा नहीं, किंतु उसका उपयो बुरा हो सकता है।

भगत नन्दनदासजीने मजदूरोंको बुलवाया। राजलोग आर्द ... लेकर आ मौजूद हुए। भगतजीने उनको समझाया—

'देखो, इस जगह एक मन्दिर बनेगा । उसमें भगवान् कपिलजी और ावजीकी स्थापना होगी । तुमलोग जगद्गुरु कपिलजीको अभी नहीं हचानते हो । पुरुष, प्रकृति और जीवके कर्तव्योंका निर्देश करनेवाले ःपिलजी ही हैं । तीनोंकी स्थिति तो बहुतोंने मानी और जानी है । रंतु तीनोंका व्यावहारिक प्रोग्राम किसीने नहीं बतलाया । बोलो— गद्गुरु कपिलजीकी जय !'

राजों और मजदूरोंने देखा कि यहाँपर गहरा हाथ लगेगा । उन्होंने श्रद्धा न होते हुए भी बड़े जोरसे नारा लगाया ।

भगतजीने सोचा—अब गुरुजीकी नाराजी मिट जायगी । इस प्रान्तमें अपनी जय-जयकार सुनकर भला, कौन ऐसा गुरु होगा, जो द्रवित न हो जाय ।

भगतजीने राजोंसे कहा—केवल मन्दिर बनानेसे ही तुमको छुट्टी न मिल जायगी । मन्दिरके सामने कुआँ भी बनाना होगा ।

राजोंने कहा—बनाना होगा । जरूर बनाना होगा । बिना कुएँका मन्दिर किस मसरफका ?

भगतजी बोले—केवल मन्दिर और कुआँ बनाकर ही तुमलोग न भाग सकोगे । एक धर्मशाला भी बनानी पड़ेगी ।

राजोंने कहा—धर्मशाला भी बनानी पड़ेगी । जरूर बनानी पड़ेगी । अरे भाई, गुरुजीके दर्शनोंके लिये जो सारा आलम उमड़ पड़ेगा वह ठहरेगा कहाँ ?

भगतजीने देखा—गुरुजीके दर्शनके लिये जो अखिल ब्रह्माण्ड उमड़ेगा तो धर्मशाला विशाल होनी चाहिये ।

करता ? जमींदारका लड़का हूँ ! पढ़ा-लिखा हूँ । कुछ मूर्ख थोड़े ही हूँ

चातकी—आप मेरे साथ विवाह करें अथवा न करें, मैंने आपके साथ विवाह कर लिया !

नन्दन—कैसे ?

चातकी—इच्छासे । इच्छाका विवाह ही स्वयंवर कहलाता है। फिर, हमलोग यक्ष हैं । इच्छाको ही प्रधान मानते हैं ।

नन्दन—मैं तुमको छू नहीं सकता ।

चातकी—छूनेके लिये किसने कहा आपसे ? छूनेकी कोई जरूरत नहीं है । आप भजन कीजिये—मैं कन्द-मूल, फल-फूल लाकर आपकी पूजा किया करूँगी । छूनेकी तो बात ही नहीं है। छूना ही तो छूत है ।

नन्दन—मैं तुमको अपने पास नहीं रख सकता !

चातकी—क्यों स्वामी ?

नन्दन—मुझे स्वामी मत कहो !

चातकी—क्यों, प्रियतम ?

नन्दन—प्रियतम भी मत कहो !

चातकी—क्यों, इष्टदेव ?

नन्दन—हुश् ! पगली ! वही बात कहे जाती है जिसे मैं सुनना नहीं चाहता ! कह दिया कि तुमको साथ नहीं रख सकता—बस, चुपचाप अपना रास्ता नापो ।

चातकी—आखिर इसका कारण ?

नन्दन—मैं ब्रह्मचारी हूँ ।

चातकी—फिर वही बात ! जो लोग यह कहते हैं कि गृहस्था-श्रममें ब्रह्मचर्यका पालन नहीं किया जा सकता, वे दुर्बल मनुष्य हैं। अविवाहित रहकर ब्रह्मचर्यका पालन किया तो क्या किया ! शंकरजी-की तरह पत्नीके साथ रहकर ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहिये। विष्णुजी लक्ष्मीजीके साथ रहते हुए ब्रह्मचारी हैं। रामजी सीताजीके साथ रहकर भी ब्रह्मचारी हैं। कृष्णजी राधाजीको संग रखते हुए भी पूर्ण ब्रह्मचारी हैं। जिस बातके नमूने मौजूद हैं उस काममें आना-कानी कैसी !

नन्दन—नहीं, नहीं। मेरे गुरुने मना किया है।

चातकी—क्या कहा था गुरुजीने ?

नन्दन—कहा था कि कामिनीसे दूर रहना।

चातकी—जैसे गुरु आपके वैसे मेरे ! गुरुका कहना जरूर करना चाहिये। मैं भी तो नहीं कहती कि आप मुझे छुआ करें।

नन्दन—मैं किसी भी स्त्रीसे प्रेम नहीं कर सकता।

चातकी—मैं कब कहती हूँ कि आप मुझसे प्रेम करें। प्रेम तो आपको एक भगवान्‌से ही करना चाहिये।

नन्दनने सोचा—गुरुजीकी इस तालीममें कि औरतका साथ न करो, कुछ परिवर्त्तनकी गुंजाइश है। औरत बुरी नहीं। उसका उपयोग बुरा हो सकता है। मैं इसके साथ गृहस्थीका सम्बन्ध ही न रक्खूँगा। इसको भी परमात्माका भगत बना दूँगा।

दोनों साथ-साथ रहने लगे। जब फूस और आग इकट्ठे होते हैं तब आग जलती ही है।

गुरु गुड़ ही रहे, चेला चीनी हो गया !

(१)

ज्यादा दिनोंकी बात नहीं। संवत् १९०० वि० की एक सच्ची और विचित्र घटना सुनिये। उस घटनाने यह कहावत प्रमाणित कर दी कि—

'गुरु गुड़ ही रहे, चेला चीनी हो गया !'

दक्षिणके एक शहरमें भगवान् श्रीकृष्णका एक मन्दिर है। महन्त थे उस समय—बाबा धरमदासजी। एक दिन एक अहीरका लड़का उनके पास आया और उनका चेला हो गया। वह माता-पिताहीन एक बारह सालका लड़का था। वह अपने गाँवमें अपने काकाके पास रहता था। मगर उस कौए काकाने ऐसी 'कैं-कैं' लगायी कि लड़केको भागना पड़ा। लेकिन यदि काकाकी 'कैं-कैं' न होती तो न तो वह वहाँसे भागता और न विशाखापत्तनके मन्दिरका महन्त ही बन सकता। शहरके समस्त रईस, समस्त अहलकार और समस्त भक्त नर-नारी उस मन्दिरमें आया करते थे और मूर्तिके साथ ही महन्तको भी प्रणाम किया करते थे। इसीलिये यह सिद्धान्त माना गया है कि मालिककी अकृपामें भी कृपा छिपी रहती है। रोषके भीतर भी पोष रहता है। अस्तु, उस लड़केको नाम मिला—गरीबदास। गरीबदासको दिनभर मन्दिरकी पाँच गायें वनमें चरानी पड़ती थीं। दोपहर और शामको बनी-बनायी रोटी खायी और पड़कर सो रहे। यही गरीबदासकी दिनचर्या थी। लिखना-पढ़ना कुछ नहीं। पूजा-बंदगी कुछ नहीं। दूध पीना और गायें चराना।

एक दिन आयी—एकादशी । महन्तजीने गरीबदाससे कहा—'आज दोपहरको यहाँ मत आना । मेरा व्रत है, इसलिये भोजन शामको बनेगा । तुम आधा सेर आटा और बीस आलू लिये जाओ । दोपहरीको स्नान करना और वनकी कंडी बीनकर आग सुलगाना । पानीसे उस जगहको पवित्र कर देना । समझे ?

*गरीब*०—जी हाँ !

*धरम*०—अपने अँगोछेपर आटा गूँदना । मैं तुमको एक लौकीका कमण्डलु दूँगा, उससे पानीका काम करना । समझे ?

*गरीब*०—समझे !

*धरम*०—आध-आध पावके चार टिक्कर बनाना । फिर आलू भूनना । आज नमक नहीं खाना चाहिये । इसलिये नमक नहीं दूँगा—समझे ?

*गरीब*०—समझे । तो अपने आलू भी अपने पास रखिये । समझे !

बाबा धरमदासका तकिया-कलाम था—'समझे'। चेला गरीबदासने भी वही तकिया-कलाम स्वीकार कर लिया । इस हरकतपर बाबाजी नाराज नहीं हुए—किंतु प्रमुदित हुए कि चेलाने एक बात तो सीखी ।

*धरम*०—पागल है क्या ? नमकहीन आलू और भी अच्छे लगते हैं । सोंधापन मिलता है । समझे ?

*गरीब*०—समझे !

*धरम*०—जब भोजन बन जाय, तब अपने गलेका हीरा उतारना समझे ?

*गरीब*०—समझे ! हीरा कैसा—समझे !

*धरम*०—जिस दिन तुझे चेला किया था, उस दिन तेरे गलें मैंने एक शालग्रामकी मूर्ति—ताबीज बनाकर बाँध दी थी—उसीकं हीरा कहते हैं और वह ताबीज है कहाँ ? तेरा गला तो सून है। समझे ?

*गरीब*०—समझे ! उतारकर फेंक दिया। समझे !

*धरम*०—बड़ा गधा है। कहाँ फेंक दिया ? समझे !

*गरीब*०—छप्परमें खुरस दिया है—समझे !

*धरम*०—पूरा उल्लू मालूम पड़ता है समझे ! अबे, उसे फेंव क्यों दिया ? समझे !

*गरीब*०—गलेमें पत्थर बाँधनेसे फायदा। समझे ! सोते समय कभी-कभी वह गलेके नीचे आ जाता था तो मालूम पड़ता कि जान गयी। समझे ! मैं उसे नहीं पहनूँगा। समझे !

*धरम*०—अरे राम-राम चेला है कि—चैला ! समझे ! ले आ उसे मेरे पास। समझे !

गरीबदास घबरा गया। कहीं वृद्ध साधु उसे उस नाहक पत्थरके लिये पीटने न लगे। यह सोचकर वह चटपट ताबीज खोज लाया और गुरुजीको दे दिया।

*धरम*०—देखो बच्चा ! तुम अभी नादान हो। समझे ! इस कपड़ेके भीतर शालग्रामजीकी मूर्ति है—समझे ! मूर्तिके भीतर गुपालजी रहते हैं—समझे !

*गरीब*०—वही गुपालजी कि जिन्होंने 'बिनदाबन' में अवतार लिया था ? समझे ! मेरी ही जातिके थे—अहीर थे। दिनभर गायें चराया करते थे और मुरली बजाया करते थे। समझे !

*धरम*०—हाँ-हाँ वही। समझे ! जब भोजन बना लो, तब इस ताबीजको गलेसे उतारकर आगे रख देना और कहना कि 'गुपालजी भोग लगाओ।' समझे ! फिर तुम भोजन करना। समझे !

*गरीब*०—समझे !

*धरम*०—अच्छा तो आ हीरा बाँध दूँ। समझे !

*गरीब*०—अहूँ। समझे !

*धरम*०—कोई हरज नहीं है—समझे !

*गरीब*०—उहुँ ! समझे !

*धरम*०—हठ नहीं करना चाहिये। समझे !

*गरीब*०—गलेमें नहीं बाँधूंगा। सोते समय कभी गुपालजीने मेरा गला टीप दिया तो ! चोर आदमीको दूर ही रखना चाहिये। समझे ! मेरी कमरमें बाँध दीजिये—समझे !

*धरम*०—हुश् ! कमरमें नहीं। आओ बाजूमें बाँध दूँ। समझे ! हाथ जोड़कर—आँखें बंद करके भोग लगाना—समझे !

गरीबदासने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया। बाबाजीने वह तावीज. बाजूबंदकी तरह बाँध दिया। इसके बाद आधा सेर आटा और बीस आलू दिये। आधा पाव गुड़ इसलिये दिया कि बाबाजी उसकी बातोंपर खुश हो गये थे। इसके अलावा उसने उनका तकिया-कलाम कण्ठ कर लिया था। फिर एक तूँबा देकर

कहा—'जाओ। बच्चा! हरेक एकादशीको ऐसा ही करना पड़ेगा—समझे!'

गायें लेकर गरीबदासने नदीका रास्ता पकड़ा।

(२)

जब दोपहरी हुई, तब गुरुजीके बताये विधानके अनुसा गरीबदासने चार टिक्कर बनाये। आलू भूनकर भुरता बनायां औ चारोंपर थोड़ा-थोड़ा रख दिया। ढाकके पत्तोंसे एक पत्तल भी बन ली थी। उसीपर चारों टिक्कर रख दिये और मूर्ति भी रख दी। इसके बाद उसने अपने दोनों हाथ जोड़े और आँखें बंद कीं। फिर कहा—'गुपालजी! भोग लगाओ!'

आँखें खोलकर गरीबदासने देखा कि चारों रोटियाँ ज्यों-की-त्यों रक्खी हैं। एक भी कम नहीं हुई। यानी गुपालजीने भोग नहीं लगाया। वह सोच रहा था कि कम-से-कम एक रोटी तो गुपालजी खा ही लेंगे।

उसने फिर नेत्र बंद किये। फिर वही प्रार्थना की। मगर टिक्करोंमें कमी न हुई। गरीबदासने प्रतिज्ञा की कि जबतक गुपालजी भोग न लगायेंगे, तबतक वह भोजन न करेगा। गुरुजीकी आज्ञा भी ऐसी थी। ऐसा मुमकिन नहीं कि भोग लग जाये और भोजनमें कोई कमी न आये।

दोपहरके ग्यारह बजेसे गरीबदासकी यह हरकत शामके चार बजेतक जारी रही। गुपालजीने देखा कि गरीबदास वज्र मूर्ख है। गुपालजी प्रकट हो गये। वह या तो वज्र पण्डितके सामने प्रकट होते

है, या वज्रमूर्खके । बीचवाले यों ही मुँह उठाये बैठे रहते हैं ।

अबकी बार गरीबदासने जो नेत्र खोले तो देखता क्या है कि एक बारह सालका लड़का बैठा हुआ एक टिक्कर खा रहा है ।

गरीब०—गुपालजी ! तुम बड़े सुघर हो । जी चाहता है कि चिपटके रह जाऊँ । मगर, हो कठोर भी बहुत । समझे ? मार डाला मुझे—भूखसे । तब प्रकट हुए—समझे ? पहले ही बुलावेमें आ जाते तो क्या जात घट जाती ? समझे ?

मुसकराकर गुपालजीने कहा—अब पहले ही बुलावेमें आ जाया करूँगा ।

चटपट एक टिक्कर खतम करके गुपालजी खड़े हो गये और बोले—

गुपालजी—तुम भूखे तो नहीं रह जाओगे ?

गरीब०—नहीं । एक टिक्कर ज्यादा था । समझे ?

गुपालजी—लेकिन अबकी बार मेरे साथ राधाजी भी आयेंगी । तुम्हारे लिये दो ही टिक्कर बचेंगे—समझे ?

गुपालजी अन्तर्धान हो गये । गरीबदासने भोजन किया और अपना काम करने लगा । उसकी खूराक आध सेरकी थी । आज वह कुछ भूखा रहा था ।

(४)

फिर एकादशी आयी । बाबाजीने आटा दिया, तब गरीबदासने कहा—

गरीब०—पहली एकादशीमें अकेले ठाकुरजी आये थे । अबकी बार ठकुरानी भी साथ आयेंगी । पाव भर आटा और दीजिये, समझे

बाबाजीने सोचा कि भूखा रह गया होगा, इसलिये बकवा कर रहा है। बेपरवाहीके साथ तीन पाव आटा तौलकर दे दिया आलू भी दे दिये। बाबाजीने उसकी बात समझी नहीं। सुनी ही नहीं। सुनी, तो दिल्लगी मानी।

दोपहरको फिर वही लीला हुई। छः टिक्कर थे। सबप नमकहीन आलूका भुरता रक्खा था। ज्यों ही ठाकुरजीको बुलाय गया, त्यों ही ठकुरानीसहित आप आ गये। दो टिक्कर भोगमें ही चले गये।

गुपाल०—भूखे तो नहीं रहोगे—गरीबदास ?

गरीब०—उस दिन तो तीन ही टिक्कर बचे थे और आज चार बचे हैं। भूखा नहीं रहूँगा—समझे ?

गुपाल०—परंतु अबकी एकादशीमें सेरभर आटा लाना। नहीं तो भूखे रह जाओगे—समझे ?

गुपालजी चले गये। गरीबदास भजन करने लगा। उसने गुपालजीकी बात नहीं याद रक्खी; क्योंकि वह उस बातको समझ नहीं सका था। दिल्लगी समझी थी।

फिर एकादशी आयी। गरीबदासने तीन पाव आटा लिया था, इसलिये छः टिक्कर बने थे। भोग लगाया गया। ठाकुरजी और ठकुरानीजीके साथमें दो मूर्तियाँ और भी पधारीं। सत्यभामा और रुक्मिणीजीसहित चारोंने चार टिक्कर उठा लिये। अपने लिये दो ही टिक्कर देख गरीबदासजी मसोसकर रह गया। उसने सोचा—'ठाकुरजीकी ठकुरानियोंका अन्त नहीं है क्या ?'

जब सब लोग खा-पी चुके, तब हँसकर गुपालजीने कहा—
क्यों गरीबदास ! मैंने कहा नहीं था कि आटा सेर भर लाना ?
फेर, अबकी एकादशीपर डेढ़ सेर आटा लाना । समझे ?'

गरीब०—सो क्यों ? समझे ?

गुपाल०—मेरे दो सखा भी आना चाहते हैं—मनसुखा और
श्रीदामा । वे तो अभी आ रहे थे, कहते थे कि गरीबदासको देखेंगे
कि कैसे भोग लगाता है । समझे ?

गरीब०—उनको लानेकी जरूरत नहीं । मैं ठाकुरजीको भोग
लगाता हूँ या ठाकुरजीके खानदानभरको ? समझे ?

गुपाल०—समझो चाहे न समझो ! अबकी बार आटा ज्यादा
लाना । समझे ?

इस लीलाद्वारा भगवान् महन्त धरमदासकी आँख खोलना
चाहते थे । इस मर्मको गरीब गरीबदास कैसे समझ सकता था ।
वह चुपचाप भोजन करने लगा । ठाकुरजी अपनी पार्टीके सहित
गोलोक चले गये ।

(५)

धरम०—बेटा गरीबे ! आज फिर एकादशी है । समझे ?

गरीब०—रोज-रोज एकादशी खड़ी रहती है । समझे ?

धरम०—तुम्हें क्या तकलीफ होती है ? समझे !

गरीब०—जिसपर बीतती है, वही जानता है । समझे ?

धरम०—क्या तुम भूखे रहते हो ? तीन पाव खा जाते हो ?
यहाँ तो तुम दोपहरीमें आधा सेर ही खाते हो ? वनमें तीन पावमें
भी भूखे रहते हो ? समझे ? क्या आटा बेचने लगे हो—समझे ?

गरीब०—मैं ही सब खा जाता हूँ क्या ? समझे ? ठाकुर भोगमें कुछ खर्च नहीं होता है ? समझे ? कभी दो जने आते है कभी चार आ जाते हैं। अबकी बार ६ प्रानी आयेंगे। डेढ़ आटा दीजिये, नहीं तो मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा। आपकी चेंसे तो कक्काकी कैं-कैं ही भली थी। समझे ?

धरमदासने डेढ़ सेर आटा दे दिया और स्थिर किया कि खुद दोपहरीमें छिपकर देखेंगे कि वह आटेको फेंकता है या बे है या क्या माजरा है।

भनभनाता हुआ गरीबदास जंगलकी तरफ चला गया।

दोपहरी हुई। महन्त धरमदास छिपकर वहाँ जा पहुँचे, गरीबदास टिक्कर बना रहा था। एक झाड़ीमें पीछेकी तरफ बैठ ग गरीबदासने बारह टिक्कर बनाये थे। आटा बचाया नहीं था। रोटियोंपर थोड़ा-थोड़ा आलूका भुरता रक्खा था। जरा-जरा-सी मि भी सबके साथ रख दी गयी थी। दोनों हाथ जोड़कर ज्यों गरीबदासने भोग लगाया, त्यों ही यह क्या—

धरमदासने देखा कि सोलह हजार रानियोंसहित, अ महारानियोंसहित, तीन सखाओंसहित, मुरलीधर प्रकट हुए। स सब रोटियाँ टुकड़े-टुकड़े कर खा डालीं। उस दिन गरीबदास कुछ भी न बचा। सोलह आना एकादशीको सामने देख, बेचारा अकबका गया। धरमदासका शरीर पसीने-पसीने हो र था। भोग या सर्वस्व भोग लगाकर नटवर तो रासलीला करने लगे सब लोग नाचने और गाने लगे। गरीबदासने कहा—'मैंने पह

ही कहा था कि चोर आदमीसे दूर ही रहना चाहिये । समझे ?'

थोड़ी देर बाद वह परस्तान गायब हो गया । कहीं कुछ नहीं । मनमारे बैठे हुए गरीबदासके पैर पकड़कर धरमदास रोने लगे । यह नयी आफत देख बेचारा गरीबदास और भी घबरा गया और उछलकर दूर जा खड़ा हुआ ।

*धरम*०—धन्य हो महाराज ! जो तुमको साक्षात् दर्शन होते रहे और साक्षात् भोग लगता रहा । हाय, मुझे तो जीवनभर पूजा करते हो गया । कभी सपनेमें भी अपने गुपालजीको न देखा । आजसे मैं चेला और आप गुरु । समझे ?

*गरीब*०—आप कहते क्या हैं ? समझे ? आप तो कहते थे कि मैं आटेको बेचता हूँ । देखा कैसे बेचता हूँ । समझे ?

धरम०—समझे ! मैं पापी हूँ । मैं अपने प्रभुद्वारा त्यागा गया हूँ । समझे ! मुझसे कहीं ज्यादा आपकी पहुँच है । अब मन्दिरपर चलो । आजसे आप महन्त हुए और कलसे मैं गायें चराया करूँगा ।

गरीबदास और गायोंको साथ लेकर धरमदासजी मन्दिरपर गये । गरीबदासके बहुत रोकनेपर भी उसे महन्ती दे दी गयी । दूसरे दिनसे धरमदासजी गायें चराने लगे ।

शहरवालोंको जब यह घटना मालूम हुई तो उनके हृदयमें भगवान् श्रीकृष्णका विश्वास कहीं ज्यादा बढ़ गया । इस घटनापर पब्लिकने कहा—

'गुरु गुड़ ही रहे और चेला चीनी हो गया ।'

भगत रबिदास

आगरा प्रान्तके दासपुर-ग्राममें एक चमारके घर रबिदासजीका जन्म हुआ। घरमें माता नहीं थी। पिता, बड़ा और आप——यही तीन प्राणी थे। इनको शिक्षा मिली जूता बना अपढ़ होनेपर भी इनकी समझ ऐसी पवित्र और कीमती थ जिसकी याद करके मुझ-जैसे आठ कलम पास नवयुवक तरस उठते हैं!

जब रबिदास बारह सालके हुए, पिताने दो-दो रुपयेके जोड़े जूते बाजारमें बेच आनेके लिये आपको दिये। शामको अ बापके हाथमें आपने पूरे आठ रुपये रख दिये। अंकगणित नजरसे दो रुपये गैरहाजिर! पूछनेपर मालूम हुआ कि एक ग

लकड़हारेको काँटे निकालते देख एक जोड़ा इनायत कर दिया। पिता चार आना नाराज हुआ। भाईने सोलह आना नाराजगी प्रकट करते हुए एक तमाचा इनाम दिया। रवि रो पड़े। अपनी याद कर नहीं, काँटे निकालनेवालेकी यादसे। क्या वह करुणाका पात्र न था? सच है जो करुणाको नहीं जानता, वह भक्तिको भी नहीं पहचानता!

सोलह सालकी उम्रमें आपको स्त्री मिली। एक दिन फिर सात जोड़ी जूते देकर आप बाजार भेजे गये। चौदहकी जगह ग्यारह रुपया लेकर आये। पूछनेसे ज्ञात हुआ कि तीन जोड़े जूते दिये गये आधे दामोंमें। कारण वही गरीबीकी करुणा।

पिता और भाईने मिलकर आपको अलहदा कर दिया। दिया गया—एक सूजा, एक रापी और छः रुपये नकद। आपने इस अन्यायके खिलाफ राजाके इजलासमें फरियाद नहीं की। एक घूरेके पास झोंपड़ी डाली और स्त्रीसमेत वहीं रहने लगे। एक तोता उर्फ गंगाराम भी पाल लिया। काम वही, परंतु गरीबोंको कम दाममें और 'अमूल्य' जोड़ा दे डालना जारी रहा। गरीबपरवर स्त्री भी कुछ बाधा नहीं देती थी।

होते-होते बारह साल बीत गये। एक दिन भगवान् लक्ष्मीनारायणने सोचा कि रविदास सचमुच एक भक्त है। एम० ए० की तरह, भक्तिका इम्तहान भी बारह साल बाद सामने आता है भगवान्—संसारके संरक्षकने सोचा कि यदि रविदासने

धन दे दिया जायगा तो वह धर्मकी ही उन्नति करेगा पापकी तरक्की नहीं ।

जब बादशाह किसी प्रजाके मकानपर खुफिया जायँगे, अपना वेश बदल लेंगे । इसी कानूनके अनुसार भगवान्ने अपं एक ब्राह्मण-सा बना लिया ताकि जगत्की आँखोंमें धूल छायी र

फागुनका महीना था । सरसों फूल रही थी । झोंपड़ीके ब गंगाराम अपने पींजड़ेकी कील खींच रहे थे । तीतर पालतू य परतन्त्र बन सकता है—तोता नहीं ! रविदासकी स्त्री एक ब बैठी अपनी फटी चुनड़ी सी रही थी । एक ब्राह्मण आकर चुपच खड़ा हो गया । रविदास भगत अपना काम; नीची नजरके स कर रहे थे और गाते जाते थे—

सुरति बिरहुलिया
छाई निज देस ।
जहाँ न गरमी
जहाँ न सरदी
तहाँ बसंत हमेस ।
सुरति बिरहुलिया
छाई निज देस ॥

२

वहाँ न मूरत
वहाँ न सूरत
पूरन धनी दिनेस ।
सुरति बिरहुलिया
छाई निज देस ॥

यह वह गीत था कि जिसने ब्रह्मरूप ब्राह्मणको भी समाधि दे दी। ब्राह्मण बैठ गया। रबिदासने देखा। वर्ण-व्यवस्थाकी रक्षा करते हुए चमारने ब्राह्मणके चरणोंमें नमस्कार किया।

वर्तमानकी बाबू पार्टीवाले, अपने नमस्कारपर कम ध्यान देते हैं और नमस्कृत व्यक्तिके आशीर्वादपर अधिक! उस युगमें नमस्कारके बदलेमें कभी-कभी मारतक पड़ जाया करती थी। जो कलियुगमें घोर असभ्यता है। भगतको भगवान्‌ने कोई आशीर्वाद न दिया, क्योंकि वे साकार आशीर्वाद देने आये थे।

भगवान्—रबिदास!

भगत—महाराज!

भगवान्—मैं तुमपर हर तरह प्रसन्न हूँ। तुम्हारी क्या इच्छा है?

भगत—दे दो मुझे वह भगति, जिसके पा जानेसे फिर किसी चीजकी लालसा ही नहीं रहती।

भगवान्—वह तो स्वयं तुमने अपने ही पुरुषार्थसे प्राप्त कर ली! अब मैं तुमको अपनी ओरसे एक चीज देता हूँ।

भगत—जैसी मरजी!

भगवान्—देखो, यह एक छोटा-सा पारस है। विष्णु भगवान्‌ने मेरे द्वारा तुम्हारे पास भेजा है। रोज दोपहरको स्नान कर एक छटाँक लोहा इससे छुआ देना, सोना हो जायगा। इस कामको छोड़ देना। अपने लिये एक हवेली और गरीबोंके लिये एक धर्मशाला बनाना। गाँवमें अन्नसे कोई दुःख न पाये। धनसे

धर्म भी होता है—बड़ा भारी पाप भी। तुम धर्मकी सड़क क मत छोड़ना।

भगत—आपकी दया का क्या कहना। नहीं तो, कोई काहेको 'दीनबन्धु' कहता ? इस समय मैं अशुद्ध हूँ। आप अपने इस पारसको कपड़ेमें लपेट छप्परकी बतरमें खोंस दीजिये। दोपहरीमें जब स्नान करूँगा तब याद रहा तो उठाकर ठाकुरजीकी पिटारीमें रख दूँगा।

ब्राह्मणने वैसा ही किया।

होते-होते बारह साल बीत गये। अब लक्ष्मीके व्यवस्थापकने सोचा कि आज चलकर भगत रविदासका चमत्कार देखना चाहिये कि क्या-क्या किया और क्या-क्या न किया।

रविदासने देखा कि वही ब्राह्मण सामने है। चमारने फिर ब्राह्मणको नमस्कार किया।

भगवान्—भगतजी !

भगत—महाराज !

भगवान्—वह पारस खो दिया, या सोना नहीं बना अथवा कोई उस पारसको चुरा ले गया ? तुम्हारा तो वही हाल है। वही घूरा, वही झोंपड़ी।

भगत—जहाँ आप रख गये थे वहीं देखिये।

भगवान्—(देखकर) सचमुच यह तो जैसे-का-तैसा रखा है। इसे छुआ तक नहीं गया ! भगत !

भगत—महाराज !

भगवान्—मैं तो समझता था कि मैं ही परमात्माका एक बड़ा भारी भगत हूँ। लेकिन तुम तो मुझसे भी बढ़कर निकले! अब मुझे जरा अपना चरन तो छू लेने दो!

रबिदास—मैं चमार हूँ!

नारायण—लेकिन मैं गँवार हूँ!

रबिदास—सो कैसे?

नारायण—अभिमान हर हालतमें बुरा है, फिर चाहे वह विद्याका अभिमान हो या अविद्याका। मुझे विद्याका अभिमान है। और तुमने दोनों अभिमानोंका बहिष्कार कर दिया। इसलिये तुम्हारी भक्तिकी कीमत मेरी भक्तिकी कीमतसे ज्यादा है। मैं पारसकी इज्जत करता हूँ, तुम पारस और पत्थरको एक-सा देखते हो।

रबिदास—मैं चमार, आप ब्राह्मण!

नारायण—मैं ब्राह्मण, तुम महाब्राह्मण?

रविदास—यह देखिये, मेरा मस्तक पारस है।

इतना कह भगतने लोहेकी रापीसे ज्यों ही अपने मस्तकका पसीना पोंछा, त्यों ही वह काले लोहेसे पीला कुन्दन बन गयी! उसे कुएँमें डाल, वह दूसरी रापीसे काम करने लगा। ब्राह्मणने आकाशकी ओर हाथ जोड़ कहा—'हे अलख परमात्मन्! आप इसी प्रकार हम-जैसे अपने अफसरोंका मद चूर करते रहा करें!

रविदास—धन्य हो महाराज!

ब्राह्मण—रविदास भगतको मेरा नमस्कार है।

मौजी भगत

(१)

जिला गौहाटीके खगीपुर नामक एक गाँवमें एक अहीर रह था। नाम था—मौजी ! था भी—मन-मौजी ! उसने गाँव जानवरोंके चरानेका काम पसंद किया। यह कहानी उस समयकी जब कि भारतपर जहाँगीरी अमलदारी थी।

एक नदीके किनारे मौजी पाँच गायें चरा रहा था। वे गा जमींदारोंकी थीं। रोटी-कपड़ा और दो रुपये माहवारी तनखाहप मौजी काम करता था। न माँ न बाप। परम स्वतन्त्र। न पढ़ा, न लिखा। परम मौजी जिस बातको सच मानता—फिर चाहे वह एकदम गलत ही क्यों न हो—चींटा-सा चिपट जाता था। सत्यके

साथ सारूप्य हो जानेकी आदत मौजीमें थी। पर सत्य और असत्यका विवेक करनेवाली निर्णय-शक्ति उसमें न थी; क्योंकि वह सत्संगहीन था। सत्संगहीन सदा मूर्ख रहता है, फिर चाहे वह डबल एम० ए० ही क्यों न हो। बात यह है कि संसारमें सत्य और असत्य दूध और पानीकी तरह मिला दिया गया है। असल और नकलको जाननेकी शक्ति सत्संगसे ही मिलती है।

आमके पेड़के नीचे बैठा मौजी एक भजन गुनगुना रहा था। तबतक वहाँ आ पहुँचे एक पण्डितजी। कंधेपर झोला और मस्तकपर लंबे तिलक। पण्डितजी वहाँ ठहर गये। दोपहर हो रहा था। पण्डितजीने झोलेमेंसे धोती निकाली और स्नान किया। इसके बाद पालथी मारकर बैठ गये और दोनों आँखें बंद कर लीं। फिर दाहिने हाथसे नाक दबा ली। और बस—बड़ी देरतक बैठे रहे। इसके बाद उन्होंने मूँगके दो लड्डू निकाले और खा-पीकर चलनेको तैयार हुए। तब मौजी बोला—'पा लागी पिंडीजी माराज!'

पण्डित—आशीर्वचन।

मौजी—आप कहाँ रहते हैं?

पण्डित—केसमपुर।

मौजी—आप इधर जा कहाँ रहे हैं?

पण्डित—दौलताबाद। वहाँ मेरे चेले लोग रहते हैं।

मौजी—रिस न हो तो एक बात पूछूँ?

पण्डित—पूछो।

मौजी—अभी आप नाक बंद करके क्या कर रहे थे?

पण्डित—भगवान्‌का दर्शन कर रहा था ।

मौजी—ठीक बस ।

पण्डितजी एक तरफ चले गये ।

(२)

मौजीके पास दूसरी धोती न थी । वह नंगा होकर नदीमें पड़ा और नहाकर बाहर निकला । उसने धोती पहनी और वह पा मारकर बैठ गया । तब उसने आँखें बंद कीं और फिर नाक भी प ली; परंतु जब कुछ भी दिखायी न पड़ा तब मौजीने कहा—'पण्डि जीको भगवान् दीखते थे तो मुझे क्यों नहीं दिखायी देंगे ?' इ कहकर उसने नाक और जोरसे दबायी । शायद नाकको कम दब हो—यह सोचकर । मगर—कहीं कुछ नहीं । थोड़ी देर बाद मौजी साँस घुटने लगी । तब उसने कहा—'प्राण ही चाहे क्यों न निव जायँ, लेकिन जबतक भगवान्‌के दर्शन न होंगे, तबतक नाक न छोड़ूँगा ।' कुछ देर बाद व्याकुलताने असह्य रूप धारण किया मौजी बोला—'प्राण प्यारे हैं जरूर, लेकिन भगवान्‌से ज्यादा प्य नहीं ।' उसने नाक और भी कस ली । प्राणकी डोरी भगवान् सिंहासनसे बँधी होती है । चूँकि प्राणका रूप साँप-जैसा है इसलिये समस्त साँपोंके यानी समस्त प्राणोंके समूह शेषनागप भगवान् विष्णुजी सदा विराजमान रहते ही हैं । मौजीके प्राणक खटका सिंहासनपर पहुँचा । भगवान्‌ने देखा तो एक अहीरका लड़क नाक दबाये एक जंगलमें बैठा है । कारण जो पूछा तो मायाने पण्डितजीवाली कहानी समझा दी । लक्ष्मीजीके नामसे भगवान्‌के

पास योगमाया सदा हाजिर ही रहती है । भगवान्‌ने सारा माजरा जानकर सोचा कि मौजीकी मौत अभी आयी नहीं जो वह मर जायगा, इसलिये उसे दर्शन देना चाहिये । भगवान्‌ने मौजीके सामने प्रकट होकर कहा—'आँखें खोलो ! मैं आ गया ।'

आवाज सुनकर मौजीने आँखें खोलीं और नाक भी छोड़ दी । कुछ देर साँस लेकर वह बोला—

मौजी—आप कौन हैं ?

भगवान्—भगवान् हूँ ।

मौजी—इसका क्या सबूत कि आप ही भगवान् हैं ?

भगवान्—तुम जैसा चाहो सबूत ले लो ।

मौजी—मैं उन पण्डितजीको बुलाये लाता हूँ—अभी वे बहुत दूर नहीं गये होंगे । अगर पण्डितजी कह देंगे कि तुम्हीं भगवान् हो तो मैं मान लूँगा; क्योंकि उन्होंने भगवान् देखे हैं—मैंने तो कभी देखे नहीं !

भगवान्—अच्छी बात है ।

मौजी—लेकिन जबतक मैं पण्डितजीको लेने जाऊँ तबतक कहीं अगर आप खिसक गये तो ?

भगवान्—नहीं । मैं यहीं खड़ा रहूँगा ।

मौजी—अनजाने आदमीका क्या विश्वास ? मैं आपको रस्सीसे कसकर इस आमसे बाँध जाऊँगा ।

भगवान्—अच्छा, भाई बाँध लो ।

हिंदू-राज्य कैसे गया ?

(१)

बादशाह 'शाहेजहान' का दरबार लगा था। तीस करोड़के जवाहरातोंसे बने विचित्र 'तख्ते ताऊस' पर बादशाह बैठे थे। दाहिनी तरफ वजीर दिलदार खाँकी गद्दी और बायीं तरफ सिपाहसालार आजम (प्रधान सेनापति) सलावत खाँकी गद्दी थी। दोनों आसन सोनेके बने थे। तबतक राठौर राजा अमरसिंहजी दरबारमें आये और उन्होंने बादशाहको सलाम किया। इसके बाद न तो वजीरको सलाम किया और न सेनापतिको। वजीर था सूफी आदमी। किसने सलाम किया और किसने नहीं, इसकी छानबीन वह नहीं करता था। मगर सेनापतिकी आबरू चढ़ गयी, कमान तन गयी।

सेनापति—राजा साहब ! आप आठ रोजकी छुट्टीपर गये थे। मगर आज सोलहवें रोज, आप तशरीफ लाये हैं ?

अमरसिंह—मैं राजा हूँ। जीमें जब आया, आया, नहीं तो नहीं आया !

सेनापति—आप राजा थे तब थे। आज आप 'राजपूत-लश्कर' के सेनापति हैं। आप मेरे मातहत हैं। मैं जवाब चाहता हूँ।

अमर०—जवाब ?

सेनापति—हाँ जवाब ! जवाब !

अमर०—काम लग गया था।

सेनापति—जहाँपनाहके पास 'रुखसती दरख्वास्त' भेजना था या नहीं ! मगर वहाँ तो 'बादशाही-इस्लामी'से ही इन्कार है। गुस्ताखी इसीको कहते हैं। क्यों वजीर साहब ?

वजीर—हुआ क्या ? जाने भी दो—मेरे यार ! राजा अमरसिंह साहब ! आप ठीक कहते हैं। आप आजाद हैं। नौकरी तो दिलचस्पीके लिये है—न कि बवाले जान ! लानत ऐसी नौकरीपर ! लानत है !

सेनापति—माफी हरगिज नहीं दी जायगी। राजा साहब आपपर सात दिनके सात लाख रुपये जुर्माना किया जाता है शामतक रुपये खजानेमें जमा कीजिये। तबतक आप दरबारे नजरबंद हैं। खबर भेजिये घर।

अमरसिंह—बादशाह सलामत ! सेनापति क्या फरमा रहे हैं

वजीर—वही तो मैं भी कह रहा हूँ। सलावत मियाँको मालूम, कौन-सा बुखार चढ़ आया है।

अमरसिंह—जहाँपनाह ! इंसाफ कीजिये।

वजीर—इंसाफ तो साफ है—

आईना ! मुँह पर ही, कहता है—साफ साफ !
सच यह है—जो साफ होता है—सफा कहता है !!

अमरसिंह—क्यों सेनापति ! जुर्माना किया किसने और नजरबंद किसको कहते हैं ?

वजीर—वही तो ! नजरबंदीका तमाशा हो रहा है। एक शायर कहता है—

सँभल कर बैठना, जलवा मुहब्बत देखनेवाले !
तमाशा खुद न बन जाना तमाशा देखनेवाले !!

सेनापति—जुर्माना किया मैंने। मैं सब सेनापतियोंका सेनापति हूँ। मैं सिपाहसालार-आजम हूँ। आपका अफसर हूँ।

वजीर—जुर्माना तो होना ही चाहिये। सात लाख न सही, सात रुपये ही सही। क्यों राजा साहब ! क्या राय है ? उस शायरने क्या खूब कहा है ?

खुदाने हुस्न नादानोंको, बख्शा ज़र रज़ीलोंको !
अक्लमंदोंको रोटी खुश्क, औ हलुआ वख़ीलोंको !!

अमरसिंह—अगर मैं जुर्माना न दूँ ?

वजीर—जहाँपनाह ! जब उसके पास कुछ है ही नहीं तो वह कहाँसे दे ? मत दो। एक पैसा मत दो। मैंने माफ किया।

सेनापति—आप माफ करनेवाले कौन ? यह मेरे महकमेकी बात है।

वजीर—मैं तो अपने दिलमें यही गाता हूँ कि—

एक बुतको चूमनेको, शेखजी काबा गये।
गरचे-हर बुत क़ाबिल बोसा है इस बुतख़ानेमें॥

अमरसिंह—नजरबंदीके क्या मानी—सेनापति ?

वजीर—

नजरसे सर कलम कर दे, उसे शमशीर कहते हैं।
निसानेमें जो लग जाये, उसीको तीर कहते हैं॥

सेनापति—जबतक रुपये सात लाख आप जमा खजानाशाही न करेंगे, तबतक यहाँसे आप जा नहीं सकते।

अमरसिंह—और रातमें ?

वजीर—रातमें इसी 'तख्ते ताऊस' पर सोना। तीस करोड़के पलंगपर सो लो राजा अमरसिंह! सो लो! इतनी बेशकीमती चारपाई, सोनेके वास्ते, बेचारे बादशाहको भी नसीब नहीं। आज तुम जरूर सोना!

सेनापति—रातको जेलमें सोना होगा।

वजीर—एक रात मैं भी जेलमें सोना चाहता हूँ। तब आपके साथ ही चलूँगा राजासाहब! वाह, क्या खूब कहा है।—

न कह गया, न सुन गया और न नाम बता गया।
मैं क्या कहूँ कि मेरा दिल, किसने चुरा लिया॥

अमरसिंह—मुझे नजरबंद किया किसने ?

सेनापति—दरबार और बादशाहने!

वजीर—दरबारकी तरफसे मुझे इन्कार है। और खुदा हरा रक्खे! बादशाह तो बेचारे बोले भी नहीं! एक शायरने तो कलम तोड़ दी है—

बादशाह—क्या कहते हो, सेनापति ?

वजीर—क्या कहते हो, सेनापति ! फिर कहो !

सेनापति—आपकी लापरवाहीसे ये काफिर लोग हमारी बरा
करने लगे हैं।

'काफिर'का नाम सुनते ही अमरसिंहने तलवार-फरसे निका
ही तो ली। एक हाथ मारा और सेनापति सलावत खाँका सि
काटकर जमीनपर डाल दिया। खूनका फव्वारा छूटने लगा।

यह हाल देख 'दरबार-रक्षक-सेना' आगे बढ़ी और अमरसिं
बादशाहकी तरफ झपटा।

वजीरने बादशाहका हाथ पकड़ा और खिड़कीकी राहसे
महलमें घुस गया। भीतरसे खिड़की बंद कर दी। वहाँ
दोनों बैठ गये।

(२)

बादशाह—यह क्या हुआ, वजीर ?

वजीर—आप कहाँ थे ?

बादशाह—ताजमहलमें, आप कहाँ थे ?

वजीर—शायरीमें।

बादशाह—अमरसिंहने सलावतको मार डाला।

वजीर—बिल्कुल ! कतई जहाँपनाह !

बादशाह—मगर मेरी ओर क्यों झपटा था।

वजीर—कदमबोशी करने !

बादशाह—क्यों ?

वजीर—गौना करा लाया है। इस पाक हिंदू कौममें एक यह
यदा है कि जब ब्याह-गौना होता है तब दुलहा लोग माँ,
प, गुरु और राजाके चरन छूते हैं—क़दमबोशी करते हैं।

बादशाह—लाहौलबिला कुव्वत! मैं समझा था कि मुझे मारने
ा रहा है।

वजीर—मैने आपको डरते देखा तो मैं उठा लाया। क्योंकि—

'रहमानके फिरश्ते' गो हैं बहुत मुकद्दस ?
शैतानही की जानिब, लेकिन मिजोरटी है।

बादशाह—वजीर!

वजीर—जहाँपनाह!

बादशाह—दरबारमें लड़ाई हो रही है।

वजीर—दरबारकी तीन सौ सिपाह जबतक साफ न हो जायगी
तबतक लड़ाई होती रहेगी।

बादशाह—खिड़कीकी दरारसे ही दिखलाता है।

वजीर—मुझे बिना दरारके ही दिखलाता है। शायरने खूब
कहा कि—

बुतपरस्ती मेरे हकमें, हकपरस्ती हो गई।
दे दिया तेरा पता कुछ, यारकी तसबीरने॥

बादशाह—वह सबको काट डालेगा?

वजीर—बेशक! एक शेरका बच्चा एक हजार भेड़ियोंके लिये
काफी है।

बादशाह—बड़ा पानीदार है! बड़ा बहादुर है।

वजीर—बहादुरकी किताबमें अमरसिंहका नाम सोनेके पानी लिखा जायगा क्यों जहाँपनाह ! जब ऐसे बहादुर हिंदू मौजू हैं, तब हिंदू-शाही क्यों खतम हुई ?

बादशाह—सलाबत-जैसे ही हिंदूकी मुहब्बतको इस्लामसे दू किये हुए हैं। हिंदू-शाही क्यों गयी; यह आगे मालूम होगा

वजीर—जी। वे दोनों चरत भरत हैं। शायर कहता है—

मुहब्बत करो और निभा लो—तब पूछना।
कि दुश्वारियाँ हैं—कि आसानियाँ हैं ?

बादशाह—सलाबतने क्या कहा था ?

वजीर—काफिर।

बादशाह—काफिर किसको कहते हैं ?

वजीर—सुनिये—

वह काफिर है जो सिजदा न करे—बुतखाना समझकर।

बादशाह—वजीर !

वजीर—जहाँपनाह !

बादशाह—हिंदू काबिले-दोस्ती हैं। वे इस्लामकी मुहब्बतकी आजमाइश लेना चाहते हैं।

वजीर—लेना चाहते हैं, तब देना चाहिये।

बादशाह—हिंदूको काफिर नहीं कह सकते। काफिर उसे कहते हैं कि जो खुदाको न मानता हो।

वजीर—इस्लाम कहता है, खुदा निराकार है—हिंदू कहता है कि निराकार-साकार दोनों है। मगर 'है' तो कहता है, 'नहीं' तो नहीं कहता।

बादशाह—हिंदू हमारी मुहब्बत चाहता है।

वजीर—

समझकर अपना दीवाना, वह मुझसे मुँह छिपाते हैं।
हकीकत यों है, दरपरदा, मुहब्बत आज़माते हैं॥

बादशाह—अब तो दरबारमें सन्नाटा है।

वजीर—बिल्कुल कब्रस्तान कहिये—दरबार नहीं। कहा के—

शिकाइत किस ज़बाँसे मैं, करूँ उनके न आनेकी।
यही अहसान क्या कम है, कि मेरे दिलमें रहते हैं॥

बादशाह—अब भी अमरसिंहको मैं माफ करता हूँ।

वजीर—तभी 'माफी' है।

बादशाह—अमरसिंहको बुलाओ।

खिड़की खुल गयी। दोनों फिर अपने-अपने सिंहासनपर सीन हुए।

(३)

वजीर—क्या कोई ऐसा है कि जो खातिरके साथ अमरको लेवा लाये ?

अर्जुनसिंह—मैं उसका साला हूँ।

वजीर—जाओ। ले आओ। कहना—बादशाहने बुलाया है। अर्जुन ! तुमको एक लाख रुपया इनाम दिया जायगा।

अर्जुनसिंह गया। अपनी बहिनको अपने पक्षमें करके, अमरसिंहको लिवा लाया। चूँकि फाटक बंद था, इसलिये खिड़कीसे निकलना हुआ। पहले अर्जुनसिंह निकला और उसने तलवार नंगी

की। ज्यों ही अमरसिंहने खिड़कीमें अपना सिर डाला, त्यों अर्जुनसिंहने उसका सिर काट लिया। कटा हुआ सिर बादशा कदमके पास रखकर अर्जुनसिंह खड़ा हो गया।

बादशाह—यह किसका सिर है ?

अर्जुन—बादशाहके दुश्मन और इस्लामके दुश्मन, पा अमरसिंहका सिर है गरीबपरवर।

बादशाह—किसने मारा ?

अर्जुन—मैंने मारा! यह सोचकर मारा कि आप बहुत खुश होंगे।

बादशाह—मैं तो बहुत नाखुश हुआ। बहुत ही नाखुश हु नालायक!

वजीर—नाखुशीकी बात ही हुई। क्यों मारा ? कहा किसने थ कि मार डालना। यह कहा था कि दम-दिलासा देकर लि लाओ। तुमने यह कैसे जान लिया कि उसे सजा दी जायगी सजा नहीं दी जाती—मजा दिया जाता। उसे प्रधान सेनापति बनाया जाता। उसे खिलअत दी जाती। क्यों मारा ? अपनी बहिनको अपने हाथसे बेवा किया।

बादशाह—मेरी आँखोंमें आँसू भर आये। जिस दिन बेगम मरी थी, उस दिन आँसू आये थे। उसके बाद आज आँसू छलके!

वजीरने अपनी तलवार खींच ली और वे अर्जुनसिंह गौड़को जानसे मार डालनेके लिये झपटे, मगर बादशाहने हाथ पकड़ लिया और कहा—

'अपनी तलवार, सियारपर चलाओगे !'

वजीर—नहीं चलाऊँगा जहाँपनाह ! नहीं चलाऊँगा । सियार । मगर इसका मुँह काला करके, गदहेपर बिठलाकर आगरेभरमें घुमाऊँगा ।

बादशाह—यही काफिर है ।

वजीर—सच है अमरसिंह काफिर नहीं, अर्जुनसिंह काफिर है ।

बादशाह—एक हिंदू—अमरसिंह ।

वजीर—और एक हिंदू—अर्जुनसिंह ।

बादशाह—आपने पूछा था कि हिंदू-शाही कैसे गयी ?

वजीर—पूछा था जहाँपनाह ! आपसे नहीं पूछूँगा तो किससे पूछूँगा ? जरूर पूछा था मालिक ! हिंदू-राज्य क्यों गया ?

बादशाह—अब समझ गये कि कैसे हिंदू-शाहीको तबाही हासिल हुई ? अब जान लिया कि हिंदू-राज्य कैसे गया ?

वजीर—समझ गया, जान लिया जहाँपनाह !

बादशाह—इन जयचन्दी मूरतोंने ही, हिंदूमूरतको तोड़ डाला है, हिंदू ही बुतशिकन हैं ।

वजीर—और कहने यह लगे कि मुसल्मानोंने मूरत तोड़ी । कहा है—

> दुनियाँसे इक इफसाना कहनेको थे मगर सोचा ।
> दुनियाँ है खुद इफसाना—इफसानेसे क्या कहना ?
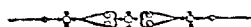
प्रभुकी अहैतुकी कृपा

(१)

फतहगढ़के सेठ रामगोपालजीका नियम था कि जबतक किसी अतिथिको भोजन न करा लेते, तबतक स्वयं भोजन न करते वे एक भक्त साहूकार थे। लखपती सेठ थे। पर लक्ष्मीसे वे ज कमल-पत्रके समान बिलग रहते थे। उनके दो लड़के थे गृहलक्ष्मी थी। घरपर तीन नौकर रहते थे। एक नौकर जोध यह काम था कि वह प्रतिदिन किसी-न-किसी अतिथिको सेठज यहाँ भोजन कराने लिवा लाया करे। अतिथिके मानी यह कि फतहगढ़ शहरका निवासी न हो। कई अतिथि मिल जायँ तो भी अच्छा, नहीं तो प्रतिदिन एक अतिथिका मिलना अनिवार्य थ

एक दिन शामके चार बज गये, परंतु कोई अतिथि न मिल जोधाने चार चक्कर शहरके लगाये, पर बेकार। अतिथि मिलते और जोधा उनको निमन्त्रण भी देता; पर कोई कुछ कह दे और कोई कुछ। एकने कहा—'मैं भोजन करके शहरमें आया हूँ दूसरेने कहा—'मेरे पास क्या कमी है कि जो दूसरेके यहाँ रो माँगता फिरूँ ?' तीसरेने कहा—'जान न पहचान, बड़े मि सलाम ! मैं तुम्हारे साथ चलूँ और तुम ले जाओ मुझे कहीं गुंडों अड्डेपर। भोजन एक तरफ—जो कुछ मेरे पास लट्ट-पट्ट है, उ भी छिनवा लो। अच्छा रोजगार सीखा है तुम्हारे मालिकने! लं काटो। मैं चकमेमें आनेवाला नहीं।

बड़ी कठिनतासे एक महात्माको साथ लेकर जोधा हवेलीपर आया। महात्माजीको देखकर सेठजी बहुत खुश हुए और बोले—

सेठ—आइये, महाराज! आपकी कुटी कहाँ है?

महात्मा—भागलपुर जिलेमें।

सेठ—आपका शरीर किस जातिका है?

महात्मा—ब्राह्मण।

सेठ—कितने दिनोंसे आप साधुई करते हैं?

महात्मा—तीस सालसे।

सेठ—अब आपकी क्या अवस्था है?

महात्मा—सत्तर सालकी।

सेठ—आपने सब तीर्थ किये होंगे?

महात्मा—हाँ।

सेठ—इधर किधर जानेका विचार है?

महात्मा—बिठूरके ब्रह्माजीका दर्शन करने जा रहा हूँ।

सेठ—आपने अनेक सिद्धोंकी संगत पायी होगी?

महात्मा—अवश्य।

सेठ—आप शिक्षित मालूम पड़ते हैं?

महात्मा—हिंदी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बँगला, गुजराती और गुरमुखी जानता हूँ।

सेठ—धन्यभाग, जो आपके दर्शन हुए। अब आज्ञा कीजिये कि आपके लिये कच्चा खाना मँगवाऊँ या पक्का? दोनों प्रकारके भोजन ब्राह्मण रसोईदारके बनाये हुए तैयार हैं।

महात्मा—पक्का भोजन ठीक है।

सेठजीके आज्ञानुसार एक पत्तलमें महात्माजीको पक्का भोजन परोसा गया।

बिना भोग लगाये ही महात्माजी भोजन करने लगे।

(२)

सेठ—आपने भोग नहीं लगाया ?

महात्मा—कैसा भोग ?

सेठ—आपने परमात्माका नाम भी नहीं लिया। हिंदुओंमें कायदा है कि भोजन करते समय भगवान्‌को अर्पण करके भोजन करते हैं। मुसलमानोंमें कायदा है कि खाना खाते समय 'बिस्मिल्लाह' कहते हैं।

महात्मा—यह सब ढोंग है।

सेठ—क्या आप परमात्माको नहीं मानते हैं ?

महात्मा—कहाँ है परमात्मा ? दिखलाओ !

सेठ—तो आप नास्तिक हैं ?

महात्मा—जी हाँ।

सेठ—(झल्लाकर) नास्तिकको मैं भोजन नहीं दे सकता। राम ! राम ! आज महापाप हो गया। आप पण्डित नहीं—मूर्ख हैं। आप महात्मा नहीं—बदमाश हैं। आपका तीर्थगमन बेकार है। आपका सत्संग व्यर्थ है। आप पापी हैं—निशाचर हैं।

इतना कहकर सेठजीने जोधाको बुलाया। जब वह आया तो कड़ककर बोले—'क्यों रे ! तुझे यही पाखण्डी मिला था, जो ईश्वरको

नहीं मानता ? मैं इसकी सूरत नहीं देखना चाहता। इस महापापी राक्षसकी पत्तल उठाकर बाहर कुत्तोंको फेंक दे और इसे गरदन पकड़कर अभी मेरे मकानसे बाहर निकाल दे।'

जोधाने बावाजीपर धावा बोल दिया। उनकी पत्तल फेंक दी। बेचारे आधी ही पूड़ी खा पाये थे। कान पकड़कर उस नास्तिक बाबाको घरसे बाहर ढकेल दिया गया।

(३)

सेठजीने जोधाको फिर भेजा कि किसी आस्तिक अतिथिको ले आये। बेचारा फिर भागा। एक घंटे बाद जोधा लौटा। साथ थे एक बाबाजी। वे रामनामी कपड़ा ओढ़े थे। गलेमें तुलसी-माला लटक रही थी। मस्तकपर तिलक थे। सेठने कहा—'यह अतिथि ठीक है!'

पूछनेपर बाबाजीने कच्चा भोजन माँगा। पत्तलें परोसी गयीं। बाबाजीने भोग लगाया। कहा—'धन्य भगवन्! जय हो गोपालजीकी। परमात्मा! आप बड़े दयालु हो। सेठजीकी जय हो। बाल-बच्चे हरे-भरे रहें। महिमा महाप्रसादकी—पावो भोग लगाय। जय सीतारामकी। लक्ष्मीनारायणकी जय। गुरुजीकी जय। संत-सतीकी जय। दाताकी जय। जगद्गुरु दत्तकी जय!'

भोग लगाकर बाबाजी भोजन करने लगे। सेठजीने कहा—'इसी तरह भोग लगाया जाता है। इसी तरहके बाबाजी ठीक होते हैं। वह मरभुखा नास्तिक बड़ा पाजी था। पक्का भोजन चाहिये और ईश्वरका नाम लेते छाती फटती थी। जिसने इतना अच्छा भोजन

दिया, उस प्रभुको धन्यवादतक नहीं ! साधू काहेका, सवादू था

भोजन करके जब बाबाजी चलने लगे, तब सेठजीने ए रुपया नजर दिया । बाबाजी आशीर्वादकी वर्षा करके चले गये

इसके बाद सेठजीने भोजन किया ।

(४)

रातको सेठजीने रामायण तथा गीताका पाठ किया और विनय पत्रिकाके पद गाये । सब लोगोंने मिलकर संकीर्तन किया । ब और सेठानी भी उस कीर्तनमें शामिल हुईं । यह रोजका नियम था इसके बाद ठाकुरजीकी आरती हुई ।

जब रात ज्यादा हुई और सेठजी पलँगपर जा लेटे, तब उनके हृदयमें एक आकाशवाणी हुई—

'रामगोपाल ! तुमने जिस नास्तिकको भूखा भगा दिया था, जानता है, उसको आज मैं सत्तर सालसे लगातार भोजन देता आ रहा हूँ ? तुम जिसका पालन एक दिन भी न कर सके—उसका पालन मैं सत्तर सालसे कर रहा हूँ । तुम मेरे कैसे भक्त हो ?'

सेठजीने कहा—'प्रभो ! आप सबके परम सुहृद् हैं, हम सबपर अहैतुकी कृपा रखते हैं । मेरी गलती क्षमा कीजिये । वास्तवमें मुझसे भूल हुई । नास्तिक और आस्तिक दोनोंका पालन आप करते हैं । इसीको कहते हैं—अहैतुकी कृपा । आप सबपर निःस्वार्थ तथा हार्दिक स्नेह रखते हैं । बाप अपने नालायक लड़केको भी रोटी देता है ।'

सिव चतुरानन देख डेराहीं

हनुमानगढ़ीके नागा—बालजी मेरे परिचित थे। अब तो वे समाधि ले गये, परंतु उनकी एक आप-बीती कहानी मुझे बार-बार याद आया करती है। उन्होंने एक दिन मेरे कुटीपर पधारकर वह विचित्र कथा सुनायी थी।

बालजी अनाथ थे। पाँच सालकी आयुमें एक बाबाजीके साथ लग लिये? जब बारह सालके हुए, तब बाबाजीने उनको हनुमान-गढ़ीके किलेमें, एक सिपाही बनाकर ढील दिया। चौबीस सालतक अखण्ड ब्रह्मचर्य साधकर और तत्कालीन महन्तकी गुरुदक्षिणा प्राप्तकर नागाजी देशाटनको निकले; क्योंकि देशाटनके बिना ज्ञान अनुभव-के पदपर नहीं पहुँचता—वह पुस्तकी ज्ञान रह जाता है।

घूमते-घामते वे नर्मदा-किनारे जा पहुँचे। वहाँ मिला एक योगी। उससे मित्रता हो गयी। दोनोंने एक साथ रहकर देश-पर्यटन करनेकी ठानी।

× × × ×

जिला छत्तीसगढ़के एक गाँवमें वे दोनों जा पहुँचे। गाँवके बाहर शिवजीके मन्दिरपर डेरा डाला। ग्रामवासी नर-नारी बालक आदि आकर दर्शन और सत्सङ्ग करने लगे। आजकल कोई

योगी द्वारपर ठहर जाता है तो मूर्ख गृहस्थ उससे बहस करनेपर आमादा हो जाता है। ज्ञान सीखना नहीं चाहता, वह अपना ज्ञान सिखाना चाहता है कि जो कुछ भी नहीं है।

रातको जब एकान्त हुआ। दोनों मित्रोंमें बातचीत छिड़ी।

योगी—आप मायासे अभीतक बचे हुए हैं?

नागा—माया ससुरी है क्या चीज जो बचना पड़ेगा? स्वरूप-रूपी हिमालयके सामने एक चींटी!

योगी—आपने स्वरूपका साक्षात्कार कर लिया? आप अपना सहज रूप पा गये? क्या आपने सनातन पुरुषको प्राप्त कर लिया?

नागा—निश्चय!

योगी—आपको माया कभी परास्त नहीं कर सकती?

नागा—सपनेमें भी नहीं। रातमें भी मैं रामपञ्चायतनकी पञ्चायत-में सोता हूँ, जहाँ बजरङ्गीका अटल पहरा है।

योगी—माया कहते किसे हैं?

नागा—कामिनी, काञ्चन और कीर्ति—इन तीन नदियोंकी त्रिवेणीको माया कहते हैं।

योगी—आप पक्के गुरुके चेले मालूम पड़ते हैं।

नागा—पक्के गुरुके होंगे आप, हम तो सच्चे गुरुके चेले हैं। जिन्होंने प्रत्येक तत्त्वके सारे बखिये खोलकर रख दिये।

योगी—आप कौन हैं?

नागा—जीव था, अब ईश्वर हो गया हूँ।

योगी—कैसे ?

नागा—ईश्वरने अपने महलकी एक खिड़की मुझमें खोल दी । अब वही वह है—मैं जो था, सो खिड़की खुलते ही न मालूम हाँ चला गया । ठीक अब समझा, वाह गुरुदेव ! कैसी मार्केकी ात बतलायी ! बतलायी नहीं—दिखलायी !

योगी—क्या बतलायी ?

नागा—गुरुजीने बेतारके तारसे इसी समय यह कहा था कि खड़की खुलनेसे मन चला गया मायामें । मनभर मायाका एक माशा न तेरा मन बना घूमता था । सो वह मायामें खिंच गया । डोरी गी थी—खिंच गया पतङ्ग-सा !

योगी—वाह, वाह, वाह ! आज पक्के योगीके दर्शन हुए । न्य भाग्य ! आप छार-छार ईश्वर हो गये और मायाकी अब आपको कोई परवा नहीं !

नागा—अजी माया है कहाँ जो परवा होती ? मुर्दा है—माया । इधरसे मत देखो—जरा उधरसे तो देखो । बेचारी चींटी ।

चींटी चढ़ी पहाड़पर नौ मन तेल लगाय ।
हाथी पकड़ बगलमें दाबे लिए ऊँट लटकाय ॥

कबीर साहबके इस रहस्यवादी दोहेका अर्थ अब खुला !

योगी—परंतु नागाजी महाराज ! जरा ध्यान दीजिये कि रामायण क्या कहती है इस विषयमें ।

नागा—किस विषयमें ?

योगी—मायाके विषयमें ।

नागा—क्या कहती है ?

योगी—

सिव चतुरानन देख डेराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

नागा—यह तुलसीकी विमूढ़ता है । हम परमहंस लोग, विधि हरि-हर तीनों देवोंसे ऊपरके लोकमें विचरण करते हैं । हमारे साम माया बदमाशी करे तो तुरंत हम उसकी नाक काट डालें ।

योगी—वाह गुरु ! मैं माया देवीसे करबद्ध अनुरोध कर रहा कि वह अपनी शक्तिका कुछ नमूना हमारे इन परमहंसजीको अव दिखलानेकी कृपा करें ।

× × × ×

प्रातः एक बूढ़ा आदमी, जो चन्दन लगाये था, दो लड़कों साथ वहाँ आया और दण्डवत् कर नम्रताके साथ दोपहरीका निमन्त्र दे गया । योगियोंका धर्म है कि वे निमन्त्रण स्वीकार कर गृहस्थों गृह पवित्र किया करें ।

दोपहरीमें दो लड़के आये और दोनों योगियोंको घर लिवा गये । पक्का सामान बनाया गया था । खूब आनन्दसे भोजन कराय गया । फिर ऊपरके हवादार कमरेमें, दोनों महात्माओंको विश्रा करनेके लिये कहा गया । थोड़ी देर बाद एक लड़का आया औ योगीजीको नीचे मालिक-मकानके कमरेमें लिवा ले गया । थोड़ी देर बालाजी सो गये ।

मालिक—आइये महाराज ! बैठिये, आपसे एक प्रार्थना है

योगी—कहिये भगतजी !

मालिक—आपके साथ जो दूसरे योगी हैं उनका आपका साथ कबसे है ?

योगी—कोई एक माससे।

मालिक—उससे पहले वे कहाँ थे ?

योगी—हनुमानगढ़ीमें रहते थे।

मालिक—अच्छा तो, वे अपने सम्बन्धमें और कुछ कहते थे। विवाहका हाल बतलाते थे ?

योगी—विवाह ! अरे राम-राम ! उनका विवाह ?

मालिक—विवाह क्यों नहीं ?

योगी—वे अखण्ड योगी हैं। आप कहते हैं—विवाह ?

मालिक—ऐसी-तैसी उनकी और तुम्हारी। तुम चुपकेसे चले जाओ। नहीं तो, मारे जूतोंके सारी शृङ्खला बिगाड़ दूँगा।

योगी—आखिर मामला क्या है ?

मालिक—तुम्हारे साथ जो है वह मेरा दामाद है। बारह साल-का था, उसे कोई बाबा बहका ले गया था। गाँवके मदरसेमें पढ़ता था। नाम था बालाजी। तुम्हारे साथीका क्या नाम है ?

योगी—(मन-ही-मन मायाको प्रणामकर) ठीक है, नाम तो बालाजी ही बतलाता था।

बूढ़ेका एक दामाद था जरूर। नाम भी उसका बालाजी ही था। एक नामके सैकड़ों होते हैं। उसे कोई बाबा ले भी गया था।

मालिक—तुम अच्छे लड़के दिखलायी देते हो। फिर तुम्हारा अपराध भी कुछ नहीं। बल्कि तुमने यह अहसान किया कि उसे

इधर ले आये। कल जो गाँवकी स्त्रियाँ मन्दिरपर गयीं, तो सखियों-के साथ मेरी लड़की विमला भी चली गयी थी। लड़की जो लौटकर आयी तो बेतरह रोने लगी। जब उसकी माताने बहुत दम-दिलासा दिया, तब उसकी हिचकी रुकी। उसने कहा कि मेरे पति ही योगीरूपसे मन्दिरपर एक संन्यासीके साथ ठहरे हैं। बारह साल हो गये तो क्या हुआ—कोई स्त्री अपने पतिको भूल थोड़े ही सकती है।

योगी—नहीं भूल सकती। भूलका क्या काम?

मालिक—बेटा रमेश!

रमेश—जी!

मालिक—इधर आओ। देखो बेटा रमेश! इन संन्यासीजीके चरण स्पर्श करो। यही तुम्हारे जीजाजीको लाये हैं।

रमेशने योगीको प्रणाम किया, योगीने मायाको प्रणाम किया।

मालिक—जीजाजी क्या करते हैं?

रमेश—सोते हैं।

मालिक—तुम देख आये हो?

रमेश—जी हाँ।

मालिक—गुदगुदे गद्देपर, मसहरी काहेको देखी होगी? अच्छा जाओ—धीरेसे किवाड़ बंद करना और ताला लगा देना। और हाँ—विमलाको जरा यहाँ भेजते जाना।

रमेश गया। विमला आयी।

मालिक—बेटी विमला! तुम्हारी समझसे तुमने ठीक-ठीक

पहचाना है न कि ऊपर जो योगी सो रहा है—वही तुम्हारा पति है ?

विमला चुपचाप रोने लगी ।

मालिक—कहिये महात्मन् ! वह रोती क्यों, यदि वही न होता ?

योगी—वही है ।

मालिक—आपकी आत्मा आईना हो गयी है । आप भी समझते कि वही है ।

योगी—वही है ! वही है ! मातेश्वरी माया वही है ?

मालिक—नाम भी वही, रूप भी वही !

योगी—नाम भी वही; रूप भी वही । वही तो बेटा आचोर । कहता था कि मैं ईश्वर हूँ और माया कुछ नहीं । व नथ गये बच्चू नथकी नकबेसरमें ।

मालिक—आप ही बतायें कि मेरा क्या कर्तव्य है ?

योगी—मैंने तो प्रार्थना ही की थी इस कर्तव्यके लिये ।

मालिक—तो आप इसी समय यहाँसे चले जायँ । उससे हम निबट लेंगे । अपना और उसका खून एक कर दूँगा—नहीं तो, मेरा नाम विश्वनाथ महाराज नहीं । मेरी एकमात्र कन्याको कलङ्कित करता है—बेईमान ।

योगी—अच्छा चलता हूँ । जय सीताराम ।

मालिक—जय श्रीराम ! अब आप कहाँ जायँगे ?

योगी—अपने आश्रमपर लौट जाऊँगा । दुनियाँ देख ली है ।

× × × ×

बालाजीकी जो आँख खुली तो शाम हो गयी थी । किवाड़

खोले तो बाहर था ताला। इधर-उधर देखा तो कोई नहीं। आवाज दी—कुछ नहीं। योगीको देखा—कहीं पता नहीं। बालाजीको बड़ा क्रोध हुआ। क्या मैं नजरबंद कर दिया गया? ईश्वरको भी नजरबंद?

ताबड़तोड़ जो दस-पंद्रह लातें किवाड़ोंपर जमायीं तो एक आला बालाने आकर ताला खोल दिया और कहा—'कहिये स्वामीजी क्या आज्ञा है?'

बाला—बाहरसे साँकल क्यों लगायी थी?

ताला भी था—इसका पता नहीं था।

युवती—जिससे कोई लड़का या बिल्ली आपकी निद्रा भंग न करे।

बालाजीकी गरमी शान्त हो गयी। अपने ईश्वरत्वमें जो शंका पैदा हो गयी थी, वह दूर हो गयी।

बाला—दूसरा योगी कहाँ गया?

युवती थी विमला।

विमला—अपनी कुटीरपर चले गये।

बाला—मेरे लिये क्या कह गये?

विमला—कह गये कि आप तबतक यहीं रहें, जबतक मैं पुनः न लौट आऊँ?

बाला—कब आयगा?

विमला—सात दिनके अंदर।

बाला—चला क्यों गया? बिना कहे चला गया?

विमला—कोई चीज लाने गये हैं।

बाला—मैं सात दिन एक जगह नहीं रह सकता।

विमला—क्यों ?

बाला—'बहता पानी—रमता जोगी, इनको कौन सके बिलमाय ?'

विमला—आप योगी थे तो मुझसे विवाह क्यों किया था ?

बाला—किसने विवाह किया ?

विमला—आपने।

बाला—किसके साथ ?

विमला—मेरे साथ।

बाला—तुम भूलती हो।

विमला—वही नाम, वही रूप।

बाला—फिर भी मैं वह नहीं।

विमला—वही ! वही ! निश्चित वही !!

बाला—कैसे जाना ?

विमला—वही नाम, वही रूप और वही मसा।

बाला—मसा क्या चीज ?

विमला—नाकके नीचे जो छोटा-सा मसा है, वह भी था।

बाला—फिर भी मैं नहीं।

विमला—वाणी वही, रंग वही।

बाला—फिर भी नही। तुम भ्रममें हो।

हाथमें भरी बन्दूक लिये मालिक ऊपर आ गये।

मालिक—देखो बालाजी ! तुम दोनोंकी सारी बातें मुझे जीनेमें

खड़े होकर सुननी पड़ीं। वैसे पिताको लड़की-दामादकी बात नहीं सुननी चाहिये परन्तु लाचारी थी। यदि अब तुम अपना जोगीपन छाँटोगे तो अच्छा न होगा।

बाला—क्या होगा ?

मालिक—इस बन्दूकमें पाँच गोलियाँ हैं। दोसे तुम दोनोंको मारूँगा, दोसे हम दोनों मरेंगे। एक फिर भी बच रहेगी। मेरे दोनों लड़के घरमें राज करेंगे। क्या समझे ?

बालाजीने देखा कि मामला बेढब है। दब गये ! अवसर पाकर किसी दिन निकल भागेंगे—यह मनमें स्थिर किया ?

मालिक—क्या कहते हो ?

बाला—आपकी आज्ञा स्वीकार है।

मालिक—यह मत समझना कि भाग जाओगे। तुम्हारे ऊपर छः सालतक कड़ा पहरा रहेगा।

दोनों पति-पत्नीकी तरह रहने लगे। तीन साल डटे रहे। जब एक लड़का पैदा हो गया। पहरा कुछ ढीला पड़ गया। ए रात निकल भागे। आखिर योगी थे, योगी नहीं चाहता राज्य भी तब आकर उन्होंने अपना यह लङ्काकाण्ड सुनाया।

मैंने पूछा—बालाजी ! अब मायाके प्रति क्या विचार है

*बाला*ने कहा—वह जगदम्बा है ! माताकी इज्जत और परवा करना अपना धर्म है। यहाँ रहकर ईश्वर नहीं बना जा सकता। रामायणमें ठीक ही लिखा है।

—⁂—

बालक बीरबलकी बुद्धिमानी

जिस समय बालक बीरबलकी आयु पंद्रह सालकी हुई, माता और पिता—दोनों न मालूम किस 'अगोचर परदेश' को चले गये। उस समय 'गरीब बीरबल' के पास केवल पचास रुपये थे। पढ़े-लिखे भी वे बहुत कम थे।

खूब सोच-समझकर बीरबलने पानकी दूकान खोली—और वह भी किलेके पास। उस समय बादशाह अकबर आगरेके किलेमें निवास कर रहे थे। गोस्वामी तुलसीदासजीको कैद करनेके कारण वीर बजरंगीने बादशाहको दिल्लीके किलेसे सदाके लिये निकल जानेकी आज्ञा दे दी थी। अतः अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँने आगरेमें ही रहकर राज्य किया था। औरंगजेब जरूर दिल्लीके किलेमें

घीके प्रभावसे न तो तुम्हारी जबान (जीभ) फटेगी और न कलेजा कटेगा। मरोगे भी नहीं। चूनेका जहर घी मारेगा और घीका जहर चूना मारेगा। दोनों लड़कर मर जायँगे।'

'खुदा तुम्हारा दर्जा ऊँचा करे। तुम्हारी दूकानमें घी भी है?' हाँ—अपने खानेके लिये कल दो सेर घी लिया था। एक सेर तुम ले लो।'

बीरबलने तौलकर पावभर चूना और सेरभर घी सामने रख दिया। दोनों चीजोंके दाम देकर मियाँने घी पी लिया और चूना लेकर महलकी तरफ भागा।

बादशाहने पूछा—'चूना लाया?'

'जी हाँ—गरीबपरवर!' खोजा बोला!

'यहीं बैठकर खा जाओ।' बादशाहने हुकुम दे दिया। खोजा सामने बैठ गया और बादशाहको पावभर चूना दिखलाकर सब खा गया।

× × × ×

शामको जब वही खोजा, बादशाहको पान देने गया, तब बादशाहने पूछा—'क्यों मुनीर! तू मरा नहीं?'

'हुजूरके इकबालसे बच गया?'

'कैसे बचा?'

खोजा मुनीरने बीरबलका सारा किस्सा बयान कर दिया।

बादशाहने कहा—'कल दरबारमें उस लड़केको हाजिर करो।'

सबेरा हुआ। दरबार लगा। खोजा गया और बीरबलको ले आया। बीरबलने सलाम किया। बादशाह हँसा। फिर बोला—'क्यों मियाँ लड़के! इस मरदूद खोजेको घी पीनेकी सलाह तुमने दी थी?'

'जी, जहाँपनाह!'

'क्यों?'

'मैं समझ गया था कि इसने आपके पानमें चूना ज्यादा लगा दिया।'

'तुम बहुत अक्लमंद मालूम पड़ते हो?'

'सरस्वतीकी कृपा है—गरीबपरवर।'

'तुम मेरे एक इम्तहानमें पास हुए हो। दो सवालोंका जवाब तुमसे और लिया जायगा। अगर तीनों बातें ठीक निकलीं तो तुमको कुछ इनाम दिया जायगा।'

'फरमाइये—जहाँपनाह!'

बादशाहने अपने आठों मन्त्री बुलाये। सबको एक कतारमें खड़ा किया। सबके अन्तमें बालक बीरबलको खड़ा किया। फिर बादशाहने सब वजीरोंसे सवाल किया—

'१२ मेंसे १ गया—क्या रहा?'

आठों वजीरोंने क्रमशः उत्तर दिया—'११ बाकी रहे—हुजूर!' मगर बीरबलकी ओर इशारा किया गया, तब उसने कहा—कुछ भी बाकी नहीं रहा—जहाँपनाह!'

'वह कैसे ?' बादशाहने पूछा ।

बीरबलने उत्तर दिया—'बारह महीनोंमेंसे यदि सावनका एक महीना निकाल दिया जाय तो पैदावारकी सफाई हो जायगी । अतः कुछ भी न रहा । और बादशाहके प्रत्येक सवालमें एक 'रहस्य' होना चाहिये । वजीरोंसे मामूली सवाल नहीं पूछा जाता ।'

बादशाह बहुत खुश हुए, आठों वजीर बहुत लजाये । हँसकर बादशाहने कहा—'नम्बरवार सब वजीरोंको जवाब देना चाहिये—एक और एक कितना हुआ ?'

आठों मन्त्रियोंने उत्तर दिया—'दो हुए सरकार !'

परंतु बीरबलने उत्तर दिया—'एक और एक—ग्यारह हुए गरीबपरवर !'

'वह कैसे ?' बादशाहने कहा ।

बीरबलने कहा—'अगर आप-सा बादशाह हो और मुझ-सा वजीर हो तो हम दोनोंकी शक्ति दोके समान न होकर ग्यारहके समान हो जाय ।'

बादशाहने कहा—'मैं अपनी बादशाहीमें नौ वजीर बनाना चाहता था । पूरा 'नवग्रह' चाहता था । आठ मिल गये थे । नवें तुम आज मिल गये हो । मियाँ लड़के ! तुम्हारा नाम क्या ?'

'मुझे बीरबल कहते हैं—जहाँपनाह !'

'महाराज बीरबल ! आजसे आप 'वजीरे आजम' हुए और आपको 'महाराज' का खिताब दिया गया ।'

'गरीबपरवरने मेरी जो कदर की है, उसके लिये शुक्रिया'—बीरबलने कहा ।

बादशाहकी आज्ञासे बीरबलको प्रधान मन्त्रीवाली पोशाक दी गयी और शाही सिंहासनकी दाहिनी ओर एक छोटे सिंहासनपर बैठनेको जगह दी गयी । शेष आठों मन्त्री उनके नीचे चौकियोंपर बैठ गये ।

यह बात सबको माल्रम है कि अकबर और बीरबलका साथ बहुत दिनोंतक रहा था ।

छत्तीस सालतक दोनोंमें मित्रता रही और साथ रहा था । जब काबुलकी लड़ाईमें महाराज बीरबल मारे गये थे, तब बादशाह अकबर उनके मरनेकी खबर सुनकर बेहोश होकर खड़ेसे जमीनपर गिर पड़े थे ।

बादशाहने तीन दिन अन्न ग्रहण नहीं किया था और रात-दिन रोते रहते थे ।

बादशाहने कहा था—'कैसा अच्छा होता जो मैं भी महाराज बीरबलके साथ मर जाता । जिंदगी तो बीरबलके साथ गयी—अब तो मौतके दिन पूरे कर रहा हूँ ।'

सरस्वती देवीको सिद्ध करके बीरबलने अपना नाम अमर कर दिया । आजकलके विद्यार्थी कहते हैं—'सरस्वती कौन चीज ? उसके 'मंतर-जंतर' पर हमें विश्वास नहीं ।'

अहिंसाकी विजय

एक बार काशीनरेश नारायणसिंहने अयोध्याके राजा चन्द्रसेन-पर अकारण चढ़ाई कर दी। अपने राज्यका विस्तार करना ही कारण था। राजा चन्द्रसेन था—अहिंसाका पुजारी। उसने सोचा कि युद्ध करनेसे हजारों आदमी मारे जायँगे। इसलिये वह राज्य तथा राजधानी छोड़कर—रातमें चला गया। उसने संन्यासीका रूप बनाया और काशी जाकर वह एक कुम्हारके मन्दिरमें रहने लगा। राजाके साथ उसकी रानी भी थी। रानी पतिव्रता थी। संकटके समय अपने पतिको अकेला छोड़ वह अपने मायके नहीं गयी। साध्वी-वेशसे राजाके ही साथ रहने लगी। रानी गर्भवती थी। नौ

महीने बाद एक पुत्र पैदा हुआ। राजाने उसका नाम रक्खा—सूर्यसेन।

जब सूर्यसेन दस वर्षका हुआ, तब उसे शिक्षा प्राप्त करनेके लिये हरिद्वारके गुरुकुलमें भेज दिया गया।

एक दिन काशी-नरेशको पता लगा कि अयोध्यानरेश चन्द्रसेन अपनी रानीके साथ साधुवेशमें उसीकी काशीमें रहता है। राजा बहुत कुपित हुआ। उसने दोनोंको गिरफ्तार करवा लिया और दोनोंको फाँसीकी सजा दे दी। यह समाचार पाकर उनका पुत्र सूर्यसेन हरिद्वारसे आया और माता-पिताके अन्तिम दर्शन करने जेलखानेमें गया। पुत्रको प्यार करके पिताने उपदेश दिया—

१—न अधिक देखना, न थोड़ा देखना।

२—हिंसा कभी प्रतिहिंसाके द्वारा पराजित नहीं होती।

३—लड़ाईको लड़ाईके द्वारा जीता नहीं जा सकता।

४—जवाबी शत्रुतासे शत्रुता नहीं मिट सकती।

५—हिंसा—लड़ाई और शत्रुताको प्रेम ही जीत सकता है।

जब अयोध्यानरेशको रानीके साथ फाँसी दे दी गयी, तब कुमार सूर्यसेनने कुछ सोच-समझकर—काशीनरेशके महावतकी नौकरी कर ली। काशीनरेशको मालूम न था कि अयोध्यानरेशके कोई पुत्र भी था।

सूर्यसेनको मुरली बजानेका शौक था। प्रातः चार बजे वह दिन बड़े प्रेमसे मुरली बजाया करता था। एक दिन उसकी मुरलीकी मधुर ध्वनि काशीनरेशके कानोंमें भी जा पहुँची।

प्रातः राजाने महावतसे पूछा—'तुम्हारे घरमें मुरली कौन बजाता है ?' महावतने कहा—'एक आवारा लड़केको मैंने नौकर रक्खा है । हाथियोंको पानी पिला लाता है। वही मुरली बजाया करता है ।'

काशीनरेशने सूर्यसेनको अपना 'शरीर-रक्षक' बना लिया । एक दिन काशीनरेश शिकार खेलने गया । घने जंगलमें वह अपने साथियोंसे छूट गया । एक घोड़ेपर राजा था—दूसरेपर था उसका शरीर-रक्षक—सूर्यसेन ! थककर दोनों एक घने वृक्षकी छायामें जा बैठे । राजाको कुछ आलस्य मालूम हुआ । गरमीके दिन थे ही । सूर्यसेनकी गोदको तकिया बनाकर राजा सो गया ।

उसी समय सूर्यसेनको ध्यान आया कि यह वही काशीनरेश हैं जिसने उसके माता-पिताको बिना अपराध फाँसीपर लटकाया था । आज मौका मिला है । क्यों न माता-पिताके खूनका बदला इससे चुका लूँ । उसकी आँखोंमें खून उतर आया । प्रतिशोधकी ज्वाला छातीमें भभक उठी । उसने म्यानसे तलवार खींच ली !

उसी समय उसके पिताका एक उपदेश उसके दिमागमें आ गया—'हिंसा कभी प्रतिहिंसाके द्वारा पराजित नहीं होती !'

सूर्यसेनने चुपके-से अपनी तलवार म्यानमें रख ली । पिताकी वसीअत मेटनेका हौसला न रहा ।

उसी समय राजाकी आँखें खुल गयीं । बैठकर काशीनरेशने कहा—'बेटा ! बड़ा बुरा सपना देखा है मैंने । ऐसा मालूम हुआ

कि तुम मेरा सिर काटनेके लिये अपनी नंगी तलवार हाथमें लिये हो!'

सूर्यसेनने फिर तलवार खींच ली। बोला—'आपका सपना गलत नहीं है। मैं अयोध्यानरेशका राजकुमार हूँ। आपने बिना अपराध मेरे साधु-स्वरूप माता-पिताका वध कराया है। मैं आज उसका बदला लूँगा। जबतक आप अपनी तलवार म्यानसे निकालेंगे तबतक तो मैं आपका सिर धड़से जुदा कर दूँगा। आपके अत्याचार-का बदला लेना ही चाहिये।'

दूसरा उपाय न देख राजाने हाथ जोड़े और कहा—'बेटा! मुझे क्षमा कर दो। मैं तुमसे अपने प्राणोंकी भिक्षा माँगता हूँ। मैं आज तुम्हारे शरण हूँ।'

'अगर मैं आपको छोड़ता हूँ तो आप मुझे मरवा डालेंगे।'

'नहीं बेटा! विश्वनाथ बाबाकी शपथ। मैं तुमको कोई भी सजा न दूँगा।'

इसके बाद दोनोंने हाथ-में-हाथ पकड़कर अपनी प्रतिज्ञा निभाने-की शपथ खायी।

तब सूर्यसेनने अपना सारा भेद खोल दिया। अन्तमें कहा—'मरते समय मेरे पिताने मुझे जो उपदेश दिया था, उसीके कारण आज आपकी जान बची है।'

'वह क्या उपदेश है?' राजाने प्रश्न किया।

'अधिक न देखना, न थोड़ा देखना। हिंसाको कभी प्रति-हिंसाके द्वारा पराजित नहीं किया जा सकता।' सूर्यसेनने कहा।

'इसका अर्थ क्या है ?' राजाने पूछा ।

सूर्यसेनने समझाया—'अधिक न देखना' का अर्थ यह है कि हिंसाको अधिक दिनोंतक अपने मनमें नहीं रखना चाहिये । 'न थोड़ा देखना' का मतलब यह है कि अपने बन्धु या मित्रका जरा भी दोष देखकर उससे सहज ही सम्बन्ध मत तोड़ना । अब रहा—'हिंसाको प्रतिहिंसाके द्वारा पराजित नहीं किया जा सकता ।' इसका अर्थ प्रत्यक्ष है । यदि मैं आपको प्रतिहिंसाकी भावनासे मार डालता तो परिणाम यही होता न कि आपके पक्षवाले मुझे मार डालते । आज मेरे पिताके उपदेशने हम दोनोंके प्राण बचाये हैं । जवाबी शत्रुतासे शत्रुता नहीं मिट सकती है । यह सिद्धान्त कितना सच्चा है । आपने मेरे जीवनकी रक्षा करके महत्त्वपूर्ण काम किया है । मैंने भी आपके जीवनकी रक्षा करके कम महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं है ।

'बेटा ! तूने तो मेरा पाप नाश कर दिया है ! पुण्यका सूर्य प्रकाशित हो उठा है !'

गद्गदकण्ठ होकर राजाने लड़केको छातीसे लगा लिया । राजधानीमें लौटकर काशीनरेशने सूर्यसेनका राजपाट उसे लौटा दिया । अयोध्यानरेश सूर्यसेनको काशीनरेशने अपनी राजकुमारी ब्याह दी ।

अहिंसाकी तलवारने जो काम किया, वह हिंसाकी तलवार नहीं कर सकती थी । हिंसासे दोनों राज्यवंश डूब जाते । किसीकी आत्माको किसी भी प्रकारसे दुःख पहुँचाना ही हिंसा है ।

गोभक्त रामसिंह

सबलगढ़ तहसीलके फाटकपर रहीम सिपाही बैठा था। तबतक भीतरसे रामसिंह सिपाही एक रोटी और उसीपर कुछ खीर रक्खे बाहर निकला।

रहीम—कहो रामसिंह ! यह रोटी और खीर कहाँ लिये जा रहे हो ?

रामसिंह—यह 'अग्राशन' है।

रहीम—इसके क्या मानी ?

रामसिंह—हमलोग जब रोटी बनाते हैं, तब पहली रोटी 'गोमाता' के लिये ही बनाते हैं। उसको 'अग्राशन' कहा जाता है।

रहीम—तुम रोटी खा चुके ?

रामसिंह—पहले गोमाताको खिला लूँगा; तब कहीं मैं चौकेमें पैर रक्खूँगा।

रहीम—तुम गायको माता मानते हो ?

रामसिंह—माता ! माता ही नहीं—जगन्माता ! तुम्हारे मुसलमान-धर्ममें भी कहा है कि यह पृथ्वी गायके सींगपर रक्खी है।

रहीम—तुम्हारा इष्टदेव कौन है ? तुम किसकी पूजा करते हो ?

रामसिंह—मेरी इष्टदेवी गाय है। मैं गायकी ही पूजा करता हूँ। वैतरनीकी नाव वही है।

रहीम—आज तुम्हारी गो-भक्ति देखी जायगी।

रामसिंह—कैसे ?

रहीम—तुम जानते हो कि आज ईद है ?

रामसिंह—जानता हूँ। फिर ?

रहीम—यह जानते हो कि इस समय तहसीलदार, नायब तहसीलदार, थानेदार, दीवान और कई सिपाही मुसलमान हैं ?

रामसिंह—यह भी जानता हूँ। फिर ?

रहीम—इस तहसीलके अहातेमें ही थाना भी है—यह मालूम है ?

रामसिंह—मालूम है। फिर ?

रहीम—तहसील और थानेके बीचमें जो आँगन है, उसीमें गोकुशी की जायगी।

रामसिंह—किस समय ?

रहीम—रातके बारह बजे।

रामसिंह—ग्यारह बजेसे मेरा पहरा है।

रहीम—तब तो तुम अपनी आँखोंसे, अपनी गोमाताको जबह होते देखोगे।

रामसिंह—यह बात सब अहलकारोंने पास कर दी है कि तहसीलमें गोकुशी हो ?

रहीम—जी हाँ! ठाकुर साहब! सब अफसर मुसलमान हैं। यह बात तय हो चुकी है।

रामसिंह—मेरे सामने गोकुशी हो, यह बात असम्भव है, नामुमकिन है रहीम!

रहीम—मैं खुद अपने हाथसे गायके गलेपर छुरी चलाऊँगा।

रामसिंह—मगर सिरपर कफन बाँधकर आना।

रहीम—देखूँगा कि तुम क्या करते हो ?

(२)

रातके ग्यारह बजे रामसिंह सिपाही, वरदी पहनकर और हाथमें भरी हुई दुनाली लेकर, खजानेका पहरा देने लगा। वहाँपर बारह बंदूकें और भी रक्खी थीं। पाँच गारदके सिपाहियोंकी और सात थानेके सिपाहियोंकी। सभी भरी हुई थीं और दुनाली थीं।

आधा घंटे बाद एक जवान और सुन्दर गायको लेकर रहीम आया। उसने आँगनके एक खूँटेपर गाय बाँध दी और छुरीकी धार देखने लगा।

आँगनभरमें कुर्सियाँ बिछायी गयीं। तहसीलदार, नायब तहसीलदार, थानेदार और दीवानजी जाकर उन कुर्सियोंपर बैठ गये। शहरके कुछ धनी, मानी, रईस मुसलमान भी आकर बैठ गये। सब लोग चौदहकी संख्यामें थे। सात मुसलमान सिपाही पीछे खड़े थे। एक मौलवीने उठकर जबहकी दुआ पढ़ी। छुरी लेकर रहीम आगे बढ़ा।

(३)

रामसिंह—खबरदार रहीम ! खबरदार !

रहीम—क्या बकते हो।

रामसिंह—चनेके धोखे मिर्च मत चबाना।

रहीम—चुप रहो।

रामसिंह—तहसीलदार साहब ! यह तहसील केवल मुसल्मानोंकी तहसील नहीं है। इस तहसीलमें हिंदूलोगोंका भी साझा है।

तहसीलदार—इसका मतलब ?

रामसिंह—मतलब यह कि तहसीलके भीतर गोकुशी नहीं हो सकती।

तहसीलदार—मेरा हुक्म है।

रामसिंह—आपका हुक्म कोई चीज नहीं। कलक्टरका हुक्म दिखलाइये।

तहसीलदार—अपनी तहसीलका मैं ही कलक्टर हूँ। तहसील सबलगढ़का मैं जार्ज पंचम हूँ। समझे !

रामसिंह—चाहे आप साक्षात् खुदा ही क्यों न हों, पर मेरे सामने ऐसा हरगिज नहीं होगा।

थानेदार—होगा, होगा और बीच खेत होगा। हथियार रख दो और निकल जाओ तहसीलसे बाहर।

रामसिंह—मेरा हथियार कौन छीन सकता है ?

थानेदार—मैं !

रामसिंह—आइये ! छीनिये आकर !

दीवान—क्या तुम्हारी आफत आ गयी है रामसिंह ! अपने अफसरसे, ऐसी नाजायज गुफ्तगू !

रामसिंह—अफसर ! किस बेवकूफने इनको अफसर बनाया। पबलिकका दिल दुखाना अफसरका काम नहीं है।

थानेदार—रहीम ! अपना काम करो। काफिरको बकने दो।

रहीमने गायके पास जाकर ज्यों ही छुरा ऊँचा किया, त्यों ही रामसिंहने दनूसे गोली चला दी। रहीम मरकर गिर पड़ा।

थानेदार—पकड़ो! पकड़ो!

रामसिंहने दूसरी गोली, थानेदारकी छातीपर रसीद की। 'हाय' कहकर थानेदार भी वहीं ढेर हो गये।

तहसीलदार उठकर भागने लगे। रामसिंहने खाली बन्दूक वहीं डाल दी और लपककर दूसरी भरी दुनाली उठा ली।

रामसिंह—कहाँ चले जार्ज पंचम! जरा अपनी कलक्टरीकी चाशनी तो चख लो।

इतना कहकर रामसिंहने घोड़ा दबाया। तहसीलदारकी खोपड़ीमें गोली लगी और वे वहीं ढेर हो गये।

इसके बाद भगदड़ शुरू हुई। मगर रामसिंहको विराम कहाँ। तड़ातड़ गोली चल रही थी। निशाना अचूक था। ग्यारह आदमी जानसे मारे गये।

इसके बाद रामसिंहने गोमाताके चरण छुए और रस्सी खोल दी, वह बाहर भाग गयी। तब रामसिंहने एक गोली अपनी छातीमें मार ली और मरकर वहीं गिर पड़े।

सबेरा हुआ। सारा समाचार शहरमें फैल गया। हिंदू पब्लिकने रामसिंहकी अरथी बनायी। एक सेठजीने लाशपर पाँच सौ रुपयेका दुशाला डाल दिया। चार साधुओंने लाशमें कंधा लगाया। शहरके हलवाइयोंने बताशे जमा किये। सराफोंने पैसे और रेजगारी इकट्ठी की। माली लोगोंने फूल इकट्ठे किये। जब लाश चली तो आगे-

आगे वही कुर्बानीवाली गाय सजाकर चलायी गयी; पीछे शङ्ख, घण्टा और घड़ियालका नाद होने लगा। रास्तेमें फूल-बताशे, पैसा और रेजगारी बरसायी जाने लगी। विराट् जुलूस निकाला गया। कई एक सहृदय मुसलमान और ईसाई सज्जन भी साथ थे।

श्मशानपर जब लाश उतारी गयी, तब जनाब मुहम्मदअली सौदागरने लाशपर गुलाबके फूल चढ़ाकर कहा—'हजरत मुहम्मद साहबने कुरान शरीफमें लिखा है कि उन जानवरोंको हरगिज न मारा जाय, जो पबलिकको आराम पहुँचाते हैं। बादशाह अकबर और बादशाह जहाँगीरने कानून बनाकर गोकुशी बंद कर दी थी। अफसोस है कि हमारे तअस्सुबी मुसलमान, सिर्फ हिंदू भाइयोंका दिल दुखानेकी गरजसे गोकुशी करते हैं। मैं उनपर लानत भेजता हूँ।

पादरी यंग साहब ईसाई थे। उन्होंने कहा—'सरकार अगर गोकुशी कराती होती तो विलायतमें खूब गोकुशी की जाती। मगर वहाँ इसका नामोनिशानतक नहीं है। विलायतके सभी अंग्रेज किसान गायोंको पालते हैं। अफसोस है कि सिर्फ चमड़ेके व्यापारने गोकुशीका बुरा काम जारी कर रक्खा है। भाई रामसिंहकी बहादुरी-की मैं तारीफ करता हूँ। आप साहबानसे प्रार्थना करता हूँ कि ठाकुर रामसिंहके बाल-बच्चोंके वास्ते कुछ चंदा किया जाय।' उसी समय पंद्रह हजारका चंदा लिखा गया। उसमें सहृदय जनाब मुहम्मदअली साहेबने तीन हजार और पादरी साहबने एक हजार रुपये दिये।

यह घटना अक्षरशः सत्य है। केवल नाम बदल दिये गये हैं।

मानवता और जातीयता

(१)

कई साल पूर्वकी घटना है। मथुरामें होम साहब कलक्टर थे। उनकी मेम मर चुकी थी! केवल पाँच सालका एक लड़का था—जेम्स। जब साहबका अन्तकाल आया तब उन्होंने अपने परम मित्र पं० कमलकिशोर शास्त्रीको बुलाया और अपने लड़केका हाथ उनको पकड़ाकर कहा—'डियर शास्त्री! अब मैं रामके दरबारमें जा रहा हूँ। मेरे पास केवल ३॥ लाख हैं, सो यह लो। इस लड़केको अपना ही लड़का मानकर खूब पढ़ाना। आई० सी० एस० की परीक्षा जरूर पास करा देना। यही मेरी वसीअत है और यही आपसे अनुरोध।'

(२)

शास्त्रीजीका मकान देहातमें था। आपको जमींदारीसे तीस हजार सालानाका मुनाफा था। आपने जेम्सको अपना ही लड़का माना। दैवयोगसे शास्त्रीजीका घर संतानहीन था। आपने जेम्सका हिंदू नाम रक्खा—ललितकिशोर पण्डित! ललितको तीन मास्टर घरपर पढ़ाने लगे। संस्कृत, हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेजीकी शिक्षा चालू हो गयी। जेम्स कभी कुरता-धोती पहनता, तो कभी कमीज-पेंट धारण करता। वह साफ हिंदी बोलने लगा और हिंदू लड़कोंके साथ आँखमिचौनी खेलने लगा। वह ललित कहनेपर भी बोलता और जेम्स पुकारनेपर भी। उसके दो नाम पड़ गये। वह पण्डितजीको 'पिताजी' और पण्डितानीजीको 'अम्मा' कहता था। जब ललितने

इन्ट्रेंस पास किया, तब पण्डितजीका अन्त समय निकट आ गया उन्होंने अपनी स्त्रीसे कहा—'लो भाई ! मैं तो चला ! जय रामजीकी रोना-धोना मत । ललितको आई० सी० एस० जरूर पास करा देना उसे विलायत भेज देना । वहाँ वह बी० ए० करके आई० सी० एस० पढ़ेगा । मेरे मित्र होम साहबकी इच्छा जरूर पूरी करना फिर चाहे सारी जमींदारी क्यों न बिक जाय ! उसे अपना ही पुत्र समझते रहना और जेम्सके नाम जो ३॥ लाख रुपये बैंकमें जमा हैं उन्हें मत छूना ।'

(३)

जेम्स विलायत गया । वहाँ वह पाँच सालतक पढ़ता रहा । पहले ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयसे बी० ए० पास किया, फिर आई० सी० एस० की परीक्षा पास की । उसकी धर्ममाता हजारों रुपये खर्च बराबर भेजती रही । वह उसे पुत्र मानती रही । पुत्रने ५००) मँगाये तो माताने ७००) भेज दिये । मेरा लड़का 'परदेश' में तकलीफ न उठाये ! इधर गुमास्ता लोगोंने, मुनाफेके रुपयोंको अपना ही मुनाफा समझा । कुछ दिया, कुछका खर्च बता दिया । बाकीका बाकीमें डाल दिया—छुट्टी हुई । गाँवमें तीन जमींदार और भी थे—मिश्रजी, दूबेजी और लालाजी । उन्होंने पाँच सालमें सारी जमींदारी कर्ज दे-देकर रेहन करा ली । बदमाशोंने दो-तीन बार चोरीका बहाना कर शास्त्रीजीके मकानका सारा सामान अपने-अपने घरोंमें मँगवा लिया । बचा केवल मकान और बुढ़िया ! उसी समय मि० जेम्स साहब कलक्टर होकर मथुरा आये । आठ दिन मथुरा रहकर दौरेका हुक्म कर दिया । सबसे पहले आप हरीपुर जा पहुँचे, जहाँ वे ललित बनकर

शिशुकालकी ललित क्रीडाएँ कर चुके थे। गाँवके बाहर एक बागमें पड़ाव डाला गया। सुबहके समय, धोती-कुरता पहन, छड़ी हाथमें लेकर आप अपनी 'अम्मा' के दर्शन करने चले। मकानके भीतर जाकर पुकारा—'अम्मा !'

'ललित ! तू आ गया ?' कहती हुई वृद्धा बाहर आयी। माताने लड़केको हृदयसे लगा लिया। प्रेमाश्रुकी वर्षा होने लगी। माता और पुत्र दोनों रो रहे थे। पाँच साल बाद मिलना हुआ था।

(४)

माता—बेटा ! तूने आई० सी० एस० की परीक्षा पास कर ली ?

जेम्स—हाँ माताजी आपकी कृपासे।

माता—आज मैं तुझसे 'उरिन' हो गयी ! तेरे पिताजी मरते समय कह गये थे कि ललितको विलायत पास करा देना, फिर चाहे जायदाद रहे या न रहे।

माता बैठ गयी और जेम्स उसकी गोदमें सिर रखकर जमीनपर लेट गया। माता उसके सिरपर हाथ फेरती हुई बोली—'तूने तो पत्रमें लिखा था कि मैंने यहाँ अपना विवाह भी कर लिया है। सो बहू कहाँ है ?'

ललित—बहू है बँगलेपर। उसने आपको बुलाया है। अब आजसे आपका निवास मथुरामें ही मेरे पास रहेगा। यमुनाजीका रोजाना स्नान कीजिये और द्वारकाधीशजीके दर्शन कीजिये। बस।

माता—अच्छा बेटा ! बहू यह तो नहीं कहेगी कि मेरा पति अंग्रेज है फिर उसकी माता हिंदू कैसे हुई ?

ललित—नहीं अम्मा ! मैंने सब हाल समझा दिया है। वह आपकी खूब सेवा करेगी।

माता—तुझे तो भूख लगी होगी ?

ललित—हाँ, अम्मा ! बड़ी भूख लगी है। आपके हाथ
रोटी पाँच सालसे नहीं खायी। जब मैं खाना खाने बैठता था,
आपकी याद आती थी।

माता—तुझे कढ़ी और भात बहुत पसंद था, वही बनाऊँ

ललित—हाँ, हाँ, हाँ। वही कढ़ी और भात !

वृद्धाने एक हाँडी उठायी और मट्ठा लानेके लिये वह पड़ोसीके
घर चली गयी। इधर मौका पाकर साहब उठा और उसने सारा
मकान देख डाला। कहीं कुछ नहीं रहा। सब सामान यार लोग
खिसका ले गये थे। तलवारें, कुरसियाँ, कपड़े, पलँग कुछ भी न छोड़ा।
बदमाशोंने चौका लगा दिया था ! साहबको बड़ा सदमा पहुँचा।

(५)

'पाँच साल बाद आज तृप्ति हुई' कहकर जेम्सने भोजन
समाप्त किया। फिर बातचीत हुई—

जेम्स—माताजी ! जमींदारी तो कायम है ?

माता—नहीं बेटा ! कर्जमें सब चली गयी।

जेम्स—कर्ज क्यों लिया गया ?

माता—न लेती तो तुझे क्या भेजती ?

जेम्स—और मुनाफा ?

माता—कारिन्दोंने कहा कि अकाल पड़ गया है; आमदनी
सूल नहीं होती।

जेम्स—आई सी ! अच्छा, घरका सामान कहाँ गया ?

माता—तीन बार चोरी हुई थी बेटा !

जेम्स—मेरी वजहसे आप सब तरह बरबाद हो गयी हैं। मेरे कारण आप राजासे फकीर हो गयीं। धिक्कार है मुझे !

माता—नहीं बेटा ! मैंने अपने पतिकी इच्छा, तेरे पिताकी इच्छा और तेरी इच्छाको पूरा किया है। मैं आज तुझे देखकर बहुत सुखी हूँ। जायदादका क्या होता ? सारी रियासत बेचकर मैंने तुझको खरीदा है। तू ही मेरी जायदाद है। मुझे अब क्या चाहिये, दो मुट्ठी चावल ! सो तू देगा ही। अगर न देगा तो चाहे जिस सदाव्रतसे माँग लाया करूँगी।

जेम्स—राम-राम, यह क्या कहती हो, अम्मा !

(६)

पण्डितानीजीको साथ लेकर जेम्स मथुरा चला गया। बँगलेमें एक खास कमरा सजाकर माताजीके लिये रिजर्व करा दिया गया। एक नौकरानी और एक नौकर सेवाके लिये कायम किये गये। माताजीकी रसोईमें जेम्स भी शामिल था। मेम साहबका खाना खानसामा बनाता था। मेम साहबने माताजीको बड़ी ही सुशीलतासे माना। सब लोग आनन्दसे रहने लगे।

इसके बाद कलक्टर साहबने दफा ४२० के वारंट जारी किये। हरीपुरके तीनों जमींदार और पाँचों बदमाश तथा सब कारिन्दे गिरफ्तार कर लिये गये। एक महीनेतक सबको चुपचाप हिरासतमें रक्खा; ताकि कलक्टरकी साध्वी माताको ठगनेका मजा मिल जाय। एक दिन जमींदारोंने साहबके पास संदेश भेजा—

'अगर हजूर चाहें तो हमलोगोंका असली रुपया दे दें, व्याज न दें और सब जमींदारी वापस ले लें। अगर असल रुपया भी न देना चाहें और जमींदारी लेना चाहें तो वह भी मंजूर है। मगर इस 'बेमियादी बुखार' से छुटकारा दीजिये।'

उन बदमाशोंने अर्ज किया—'आपके मकानका सामान केवल इसलिये उठा लिया गया था कि वह नष्ट न हो जाय और जब सरकार आयें, तब सौंप दिया जाय! हुक्म दीजिये—सब सामान उसी मकानमें जैसे-का-तैसा सजा दिया जाय! हमलोग आपके पिता शास्त्रीजीके शुभचिन्तक मित्र हैं। लिहाजा चोरीसे बचानेके लिये ही ऐसी हरकत की गयी थी। तोबा करते हैं—माफी दीजिये।

कारिन्दोंने कहा—'जरूर ही पैदावार उन सालोंमें अच्छी न थी। मगर इस साल पैदावार खूब अच्छी है। उम्मीद है कि बकाया रुपया सब वसूल हो जायगा। एक सालकी मियाद दी जाय ताकि हमलोग अपना-अपना हिसाब चुका सकें।'

साहबने सबको छोड़ दिया। रुपया सैकड़ाके सरकारी सूदके हिसाबसे साहबने सब कर्जदारोंको चुका दिया।

सारी जमींदारी वापस लेकर साहबने वह सब पण्डितानीजीके नाम करा दी। बदमाशोंने सामान वापस कर दिया। कारिन्दोंने सारा गबन धीरे-धीरे जमा कर दिया।

इस कहानीसे यह शिक्षा मिली कि—'मानवताके सामने जातीयता तुच्छ है।'

दैवी सी० आई० डी०

आजमगढ़के कलक्टर मि० देसाई अपने बँगलेके एक कमरेमें आरामकुरसीपर लेटे हुए अखबार देख रहे थे। इतवारकी छुट्टीका दिन था और सुबहके आठ बजे थे। तबतक उनका बड़ा लड़का काशीनाथ वहाँ आया और एक तरफ चुपचाप खड़ा हो गया। कलक्टर साहबने लड़केको आये हुए देख लिया, मगर वे कुछ बोले नहीं। कुछ समय बाद काशीनाथने ही बातचीत शुरू की—

काशीनाथ—तो मेरे लिये क्या हुक्म है?

देसाई—कुछ नहीं।

काशीनाथ—मैं विलायत जाऊँ?

देसाई—विलायत जाना पीछे। पहले मेरे घरसे निकल जाओ। मनमुखी लड़का मर जाय या भाग जाय—तभी बेहतर है।

काशीनाथ—आज आप नाराज क्यों हो रहे हैं?

देसाई—मैं तुमको आई० सी० एस० पास करनेके लिये

विलायत भेजना चाहता था, परंतु तुमने कल अपनी माँसे कहा है कि तुम वहाँ जाकर बैरिस्टरी पास करना चाहते हो।

काशीनाथ—जी हाँ, कहा था। मगर एक बैरिस्टरकी इज्जत किसी कलक्टरसे कम नहीं होती। आमदनी भी कम नहीं होती। इसके अलावा, एक वकीलको जितना मौका जनताकी सेवाके लिये मिल सकता है, उतना एक अफसरको नहीं।

देसाई—क्या आदमीके लिये जनताकी सेवा करना लाज़मी है?

काशीनाथ—मेरी रायसे तो लाजमी है। अपना पेट तो जानवर भी भर लेता है। आदमी वह है जो दसको खिलाकर खाये।

देसाई—जी! तो मैं हुआ—जानवर और जनाब हुए आदमी? मेरा आखिरी हुक्म है कि तुम एक घंटेके अंदर इस से निकल जाओ। चाहे जहाँ जाओ। चाहे जो करो। मुझसे मतलब नहीं। एम० ए० करा दिया—अपने फर्जसे अदा हुआ। अपनी औरतको साथ लो और जाकर दोनों आदमी जनता-की सेवा करो।

× × × ×

काशीनाथके जाते ही उस कमरेमें एक दिव्य सूरत प्रकट हुई। उस सूरतके हाथमें एक कापी और एक पेन्सल थी। वह ईश्वरीय दूत कुछ लिख रहा था।

देसाई—आप कौन हैं?

दूत—मैं ईश्वरका एक खुफिया हूँ।

देसाई—मैं नहीं समझा।

दूत—मैं परमात्माकी सी० आई०. डी० का एक दूत हूँ।

देसाई—मैं नहीं समझा।

दूत—मैं यमराजका दूत हूँ।

देसाई—तो क्या मेरी मौत आ गयी है ? यमदूत तो मरते वक्त आया करते हैं।

दूत—नहीं, मैं चित्रगुप्तका दूत हूँ। मैं सदा तुम्हारे साथ रहता हूँ और जो कुछ तुम कहते, सुनते या करते हो सब मैं लिख लेता हूँ।

देसाई—क्यों ?

दूत—ताकि मृत्यु हो जानेपर तुम अपने जीवनका हाल देख सको और अपना कर्मभोग प्राप्त कर सको।

देसाई—मैं दूसरोंके पीछे खुफिया लगाया करता हूँ। क्या मेरे पीछे भी खुफिया रहता है ?

दूत—जी हाँ। केवल तुम्हारे ही पीछे क्यों ? लेखक दूत सबके पीछे रहता है। हरेक नर-नारीके साथ एक-एक लेखक रहता है।

देसाई—मगर, मैंने आपको कभी जाना नहीं। पहले कभी देखा भी नहीं।

दूत—तुमलोग अगर जान लो तो खुफिया कैसा ? तुम तभी देख सकते हो कि जब मैं दिखलायी देना चाहूँ। नहीं तो, रात-दिन साथ रहनेपर भी तुम मुझे नहीं जान सकते।

देसाई—अगर यहाँ कोई आ जाय तो वह आपको देख सकता है ?

दूत—न, केवल तुम ही देख सकते हो ।

देसाई—आप अभी क्या लिख रहे थे ?

दूतने अपनी कापी देसाईके सामने कर दी । उसमें लिखा था—'आज देसाई अपने बड़े लड़केपर हुकूमतके नशेके कारण नाराज हुआ । वह घरसे निकालनेका अत्याचार करना चाहता है । मनमुखी होनेके कारण अन्याय करना चाहता है ।'

देसाई—यह आपने क्या लिखा ?

दूत—जो बात थी—लिख दी ।

देसाई—मनमुखी वह है या मैं ?

दूत—अगर वह भी मनमुखी होगा तो उसका दूत लिखेगा । मेरी रायमें तुम मनमुखी हो इसलिये लिखा ।

देसाई—केवल मनमुखी ही नहीं । आपने मुझे मनमुखी, , अत्याचारी और अन्यायी लिखा है ।

दूत—सब सच लिखा है ।

देसाई—बापका कहना लड़केको टालना चाहिये ?

दूत—अगर गलत हो तो टालनेमें कोई हर्ज भी नहीं । तुम्हारे घरमें चार लड़के हैं । चारोंकी प्रकृति पृथक्-पृथक् है । कोई वकील बनेगा, कोई जज बनेगा, कोई डाक्टर बनेगा और कोई व्यापारी बनेगा । अगर तुम चाहो कि चारों लड़के मजिस्ट्रेट बन जायँ तो यह कैसे हो सकता है ? चूँकि तुम गलतीपर हो और तुम्हारा लड़का सचाईपर है इसलिये तुम्हारा अन्याय हुआ कि नहीं ?

देसाई—आपकी यह दलील मेरी समझमें आ गयी ।

दूतने *लिखा*—अपनी गलती मान लेनेकी आदत है।

× × × ×

तबतक रोती और काँपती हुई काशीनाथकी माताने कमरेमें
। किया। देवदूत सामनेसे हट गया और देसाईके पीछे जा
हुआ।

स्त्री—यह आप क्या कर रहे हैं? लड़केको जरा-सी बातपर
निकाल रहे हैं?

देसाई—पिताका हुक्म न मानना जरा-सी बात है?

स्त्री—वह सुशील और धर्मात्मा है।

देसाई—मगर मनमुखी और नमकहराम भी है।

स्त्री—उसके निकलते ही मेरे प्राण निकल जायँगे।

देसाई—अच्छा, आप पतिके साथ नहीं वल्कि पुत्रके साथ
। होंगी?

देसाईका यह व्यंग-बाण बड़ा घातक हुआ। उस स्त्रीने अपनी
ीमें एक घूँसा मारा और वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी।

देवदूतकी पेंसिल चल रही थी। देसाईने देखा कि उसने यह
वा है—'क्षणिक कलक्टरीकी प्रभुताके नशेसे मतवाले होकर
ाईने अपनी सती-साध्वी स्त्रीको मर्मान्तक पीड़ा पहुँचायी है।
श्रितका अपमान नहीं करना चाहिये। असह्य अपमान कालके
मान होता है।'

देसाई—स्त्रीको पतिकी हाँ-में-हाँ मिलानी चाहिये या पुत्रकी
ाँ-में-हाँ मिलानी चाहिये?

दूत—जहाँ जैसा मौका हो। पतिके साथ स्त्रीका प्रेम हो
है। परंतु स्त्रीका स्नेह पुत्रके ही साथ होता है। जब पुत्रको आत्म
कहा जाता है तब माताका उसके साथ सम्बन्ध क्यों नहीं मान
जायगा।

देसाई—मैंने आपकी यह बात भी मानी।

देवदूतने लिखा—'अपनी गलती माननेकी आदत है, मग
अपनी हठ जल्दी छोड़नेकी आदत नहीं है।' स्वस्थ होकर देसाईक
स्त्री भीतर चली गयी।

× × × ×

देसाई—मैं रोजाना पूजा किया करता हूँ। उसके बारेमें आपने
क्या लिखा?

देवदूतने एक पृष्ठ खोलकर दिखलाया। उसपर लिखा था—
'धार्मिकताके दिखावेसे पबलिककी श्रद्धा लेनेका ढोंग करता है—
पूजा नहीं करता है; क्योंकि देसाई नास्तिक है।'

देसाई—मैंने पर साल एक हजार मुहताजोंको भोजन कराया
था, उसके बारेमें आपने क्या लिखा?

देवदूतने एक पन्ना खोलकर दिखलाया। देसाई पढ़ने लगे—
'पबलिकसे मुफ्तमें वाहवाही लूटनेका एक षड्यन्त्र मात्र; क्योंकि
देसाईके मनमें दया नहीं है।'

देसाई—मैं पबलिकके जल्सोंमें शरीक होता हूँ और लेक्चर
देता हूँ, उसके लिये क्या लिखा?

देवदूतने एक सफा दिखाया। लिखा था—'ताकि लोग उसे

समयके साथ चलनेवाला समझें। हालाँ कि यह आदमी परिवर्तनका परम शत्रु है।

देसाई—आपने तो मेरे हृदयकी छिपी बातें लिख रक्खी हैं।

देवदूत—क्योंकि तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते हो।

देसाई—मैं आजतक कितने बुरे काम कर चुका ?

दूत—एक हजार।

देसाई—और अच्छे काम मैंने कितने किये ?

दूत—पाँच।

देसाई—बस ?

दूत—बस।

देसाई—तो सुनिये साहब ! सच बात यह है कि न तो मैं परमात्माको मानता हूँ और न उसके दूतको।

दूत लिखने लगा। लिख चुकनेपर देसाईने पढ़ा कि—'मुझे प्रत्यक्षमें देखकर भी प्रमाण चाहनेवाला देसाई वज्रमूर्ख है और कलक्टरीके काबिल नहीं। इसका दिमाग खराब है और काबिल पागलखानेके है।'

× × × ×

अन्तिम प्रणाम करनेके लिये तबतक काशीनाथ वहाँ आया। वह घरसे निकल जानेकी तैयारी कर आया था।

काशीनाथ—पिताजी ! मैं नालायक हूँ इसलिये मुझे घरसे चले जानेकी आज्ञा दीजिये। मैं तैयार होकर विदा माँगने आया हूँ।

देसाई—नहीं बेटा ! तुम कहीं मत जाओ । तुम वकील बन सकते हो । मेरा ख्याल गलत था । जो आदमी जिस कामको पसंद करे उसके लिये वही काम लाभदायक हो सकता है ।

काशीनाथ—आपने मेरी माताको चोट पहुँचायी है ।

देसाई—गुस्सेसे बेजा बक गया था । उसके लिये मैं तुम्हारी मातासे और तुमसे माफी माँगता हूँ । चूँकि तुम बालिग हो गये हो और बालिग लड़का बतौर दोस्तके होता है, इसलिये तुम मुझे माफ करो ।

काशीनाथकी आँखोंमें आँसू भर आये । वह अपने पिताके चरणोंमें गिर पड़ा और रोने लगा । देसाईने उठकर उसको छातीसे लगा दिया और कहा—'आजतक मैं पाखण्डी था, नास्तिक था और घमंडी था । मैं नकली काम किया करता था । आज परमात्माने मेरी आँखें खोल दीं । जो नहीं जाना था सो जना दिया और जो नहीं देखा था सो दिखा दिया । ईश्वरकी यह एक बड़ी कृपा है कि जो मुझपर उतरी ।'

काशीनाथ बहुत प्रसन्न हुआ और भीतर गया । यात्राकी तैयारी कैन्सल कर दी गयी । सब घर प्रसन्न था । पर यह कोई नहीं जानता था कि यह परिवर्तन हुआ कैसे ।

देसाईने देखा कि देवदूत लिख रहा है—'आज देसाईने प्रतिज्ञा की कि वह अपने नकली जीवनको छोड़ देगा और असली जीवनको ग्रहण करेगा । आज उसके जीवनमें एक खास परिवर्तन हो गया । भविष्यमें वह एक नेक आदमी बननेकी कोशिश करता रहेगा ।'

एक स्वामिभक्त बालक

उस समय भारतकी राजधानी उज्जैनमें थी। राजा वीर विक्रमा-
त्य उस समय भारत-सम्राट् थे। आपको बालकोंसे बड़ा प्रेम था।
हलके भीतर प्रत्येक कार्यपर बालक ही नियुक्त थे; क्योंकि बालक
धे, सच्चे, सरल, सुखद, सुभग और सुन्दर होते हैं। वे स्वतः
ोई भी अपराध नहीं करते। रामायणमें भी लिखा है—'बंदउँ
ालरूप सोइ रामू।' अर्थात् प्रत्येकका बालक (पशु-पक्षीका भी)
ामका स्वरूप होता है, इसी विचारसे भारतसम्राट्ने अपने 'शरीर-
रक्षक' भी बालक ही बनाये थे और महलका सारा प्रबन्ध बालकोंको
सौंप दिया था।

गरमियोंकी रात थी। सतखंडेपर महाराज सो रहे थे। पलंगके
नीचे कालीनपर उनके शरीर-रक्षक लड़के सो रहे थे।

सहसा रोनेकी आवाज सुनकर महाराज जाग पड़े। उस
समय आधी रात बीत चुकी थी। एक स्त्रीको रोती हुई सुनकर महा-
राजने कहा—'पहरेपर कौन है?'

पाँचों लड़के एक-एक घंटा जागकर महाराजका पहरा देते थे।
उस समय 'किशोर' नामक एक क्षत्रिय बालकका पहरा था। वह
चुपचाप सामने जा खड़ा हुआ।

तुरंत काली माई प्रकट हो गयीं और देवीने राजाका हाथ पकड़ लिया।

'क्या बात है राजन्! तुमको जीवित रखनेके लिये बलिदान लिया गया है। अब तुम नहीं मर सकते।' देवीने तलवार छीन ली।

'माता! यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं तो इस लड़केको जीवित कीजिये। यह लड़का जीवित न हुआ तो मैं जीता हुआ भी मृतक बना रहूँगा। इसका गम मुझे खाता रहेगा।'

'अच्छा! तुम जाओ। तुम्हारे पीछे तुम्हारा लड़का भी आता है।' देवीने मुसकराकर कहा।

राजा चला गया और अपने पलंगपर जा लेटा। देवीने लड़केका सिर उसके धड़से लगाया और उसे जीवित कर दिया। अपनी ... लेकर किशोर भी महलकी छतपर जा पहुँचा।

'आ गये किशोर?' सम्राट्ने पूछा।

'जी अन्नदाता!' किशोर बोला।

'वह स्त्री क्यों रो रही थी?' सम्राट्ने पूछा।

'कुछ नहीं सरकार! उसकी सासने उसे पीटा था। मैं समझा-बुझाकर उसे उसके घर पहुँचा आया और उसकी सासको धमका आया कि अब कभी बहूको मारा-पीटा तो तुम्हारी शिकायत महाराजसे कर दी जायगी।' किशोरने बहाना बनाया।

'तुम धन्य हो किशोर! तुम्हारे माता-पिता धन्य हैं किशोर! आजसे तुम मेरे 'प्रधान सेनापति' हुए किशोर!'

सम्राट्ने किशोरको हृदयसे लगाकर कहा।